Every Fortnight July I 2014

मूल्य ♦ दस रुपए

बच्चे

सीख सुहानी

विशेष

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन ★ ★ ★ वर्ष- 28 अंक- 24 1-15 जुलाई, 2014 पृष्ठ- 68

बकरी की चूक

किसी पहाड़ी प्रदेश में एक बकरी रहती थी। उसके पूरे शरीर पर नर्म-मुलायम लंबे बाल थे और वह देखने में बहुत आकर्षक थी। बकरी खुद को बहुत होशियार समझती थी। एक दिन वह तलहटी में घास चर रही थी। तभी शिकारियों का एक दल वहां आ पहुंचा। जैसे ही उनकी नजर उस बकरी पर पड़ी, वे उसकी खूबसूरत खाल को पाने के लिए लालायित हो उठे। उनका इरादा भांप बकरी अपनी जान बचाने के लिए भागने लगी। शिकारियों ने भी उसका पीछा करना शुरू कर दिया।

बकरी जंगल में भागते-भागते एक ऐसी जगह पर पहुंची, जहां अंगूर की घनी बेलें लगी हुई थीं। बकरी उन बेलों के पीछे जाकर छिप गई। थोड़ी देर में शिकारी भी उसका पीछा करते हुए वहां आ पहुंचे। पर वे अंगूर की बेलों के पीछे छिपी बकरी को देख नहीं पा रहे थे।

काफी देर तक बकरी को इधर-उधर खोजने के बाद वे आगे बढ़ गए। यह देख बकरी अपनी चतुराई पर बड़ी प्रसन्न हुई। तभी उसकी नजर अंगूर की बेलों पर पड़ी। जिनकी आड़ में वह अब तक छिपी थी।

कुछ देर पहले तक डर की वजह से उसका ध्यान अंगूर की बेलों के कोमल पत्तों की ओर गया ही नहीं था। उसने झटपट इन्हें चरना आरंभ कर दिया। कुछ ही देर में उसने अंगूर की सारी बेलें चट कर डालीं। उधर शिकारी उसे खोजते हुए वापस उसी जगह पर आ पहुंचे। अब बकरी के पास छिपने के लिए कोई ठिकाना नहीं था। आखिरकार उन शिकारियों ने घेर कर बकरी को पकड़ लिया।

वे शिकारी उसे अपने साथ ले जाते हुए आपस में बतिया रहे थे कि यदि बकरी ने उन बेलों को साफ न किया होता, तो शायद वह उनकी पकड़ में नहीं आती। यह सुनकर बकरी को अपनी भूल समझ में आ गई। उसने खुद अपने हाथों से अपना आश्रय मिटा दिया और अपनी दुर्गति करा बैठी।

सीख सुहानी ❀ समझदारी वही कारगर है, जिसमें फौरी लाभ की आशा नहीं, वरन् दीर्घकाल की सोच होती है।

वर्ष- 28 अंक-24 जुलाई (प्रथम) 2014, जयपुर

सीख-सुहानी विशेष

आपका व्यवहार आपको बनाता है- 5
मिट्टी की पूजा/ समान व्यवहार- 6
सफलता का राज/ ज्ञान की सीमा- 7
मन की शक्ति- 8/ नदी का नीर- 9
जीवन के रत्न/ नेहरू का उपहार/ नारियल की तरह- 10-11
अपनी उपयोगिता बढ़ाएं और आगे बढ़ जाएं- 12
ईश्वर में आस्था न छोड़ें- 13
अच्छा जीवन/ शून्य पर सवाल- 14
बात के पक्के/ झील का चांद- 15
नियम का पालन/ दोस्ती का अंदाज- 16
साख का सवाल/ सफलता का रहस्य/ मुंह से निकले शब्द- 17
उनका भोजन रहे ताजा/ तीन बातें- 20
मातृभूमि की सेवा/ अध्यापक का आदर्श- 21
बाज की उड़ान/ जिज्ञासा ने बनाया महान- 22
मन पर समस्या का बोझ/ दिखावे से दूर-23
लालच में गंवाई जान- 24
तालाबंद दरवाजे दिमाग में ही होते हैं- 25
वह महान इंजीनियर- 26
सोने ने दी लोहे को सीख- 27
गुरु तो गुरु है- 28
विश्वास की शक्ति- 29
खिलौनों से सिखाया सबक/ सिगरेट का अर्थ- 30
लिंकन की सिफारिश- 31
शिष्टता से सम्मान- 32
संघर्ष से निखरता जीवन- 33
नीम का टूटा गुरुर/ आखिरी काम- 34-35
समर्पित भाव से कर्म/ हर काम का महत्त्व होता है- 36
संतोष धन/ समय का महत्त्व- 37
घमंडी कौआ- 40
बाड़े की कील- 41

विविध

गुदगुदी-18-19
सैर सपाटा- 38-39
बोलें अंग्रेजी-43
तथ्य निराले- 44
इल्यूजन-45
क्रॉसवर्ड पजल्स- 46
सामान्य ज्ञान- 47
क्यों और कैसे/कमाल है- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
माथापच्ची-52-53
किड्स क्लब- 54
बालहंस न्यूज- 55
गर्वीली दहाड़ - 56-57
ढूंढो तो....- 61
कैसा लगा- 66

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

चित्रकथा

ई-मैन- 62-65

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाषः 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह
फोटो एडिटिंग: संदीप शर्मा

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

अब बालहंस एक क्लिक पर, log on करें : balhans.patrika.com
फेसबुक पर पढ़िये: www.facebook.com/patrikabalhans

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

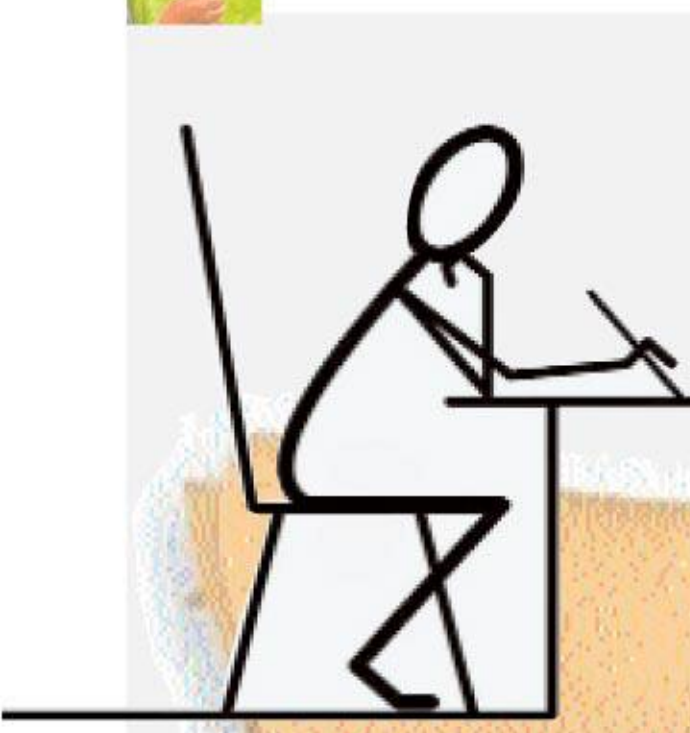

संपादकीय

दोस्तो,

मानव जीवन जिसे भी मिला है, उसे ईश्वर का शुक्रगुजार होना चाहिए और जीवन को ऐसे कार्यों में लगाना चाहिये, जिससे लोग उन्हें अच्छे कर्मों के लिये याद रख सकें। परस्पर सेवाभाव, दया, बड़ों का सम्मान, अमीर-गरीब में समानता जैसे गुण बचपन से ही विकसित हो जाएं तो आजीवन हम उन गुणों के सहारे स्वयं को श्रेष्ठ साबित कर सकते हैं। एक प्रसंग देखिये। एक बार महाराजा रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे। अकस्मात एक ढेला आकर उनको लगा। महाराजा को बड़ी तकलीफ हुई। साथी दौड़े और उन्होंने एक बुढ़िया को लाकर उनके सामने पेश कर दिया। बुढ़िया भय के कारण कांप रही थी। उसने हाथ जोड़कर कहा, 'सरकार, मेरा बच्चा तीन दिन से भूखा था, खाने को कुछ नहीं मिला तो मैंने पका बेल देखकर पेड़ पर ढेला फेंका था। बेल टूट जाता तो उसे खिलाकर मैं अपने बच्चे का पेट भर सकती थी। मेरा दुर्भाग्य कि ढेला आपको लग गया। मैं निर्दोष हूं सरकार।' बुढ़िया की बात सुनकर महाराजा ने अपने कारिंदों से कहा, 'बुढ़िया माता को एक हजार रुपए और खाने का सामान देकर आदरपूर्वक घर भेज दो।' कारिंदों ने कहा, 'सरकार! यह क्या करते हैं। इसने आप को ढेला मारा। इसे तो बदले में कठोर दंड मिलना चाहिए।' महाराजा बोले, 'भाई, जब बिना प्राणों और बिना बुद्धि का पेड़ ढेला मारने पर बदले में सुंदर फल देता है, तब मैं प्राण और बुद्धि वाला इंसान होकर भला कैसे दंडित कर सकता हूं?' कुछ ऐसे ही मन को छू जाने वाले कथा, प्रसंग इस सीख-सुहानी विशेषांक में...।

तुम्हारा बालहंस

आपका व्यवहार आपको बनाता है

एक बुजुर्ग व्यक्ति बहुत देर से नदी के पार जाने की प्रतीक्षा में खड़े थे। नदी छिछली थी, इसलिए उस पर कोई पुल नहीं था। और ठंड इतनी ज्यादा थी कि पानी में उतरा नहीं जा सकता था। नदी पार करने के लिए उन्हें कोई न कोई सवारी चाहिए थी। बहुत देर इंतजार करने के बाद उन्हें घुड़सवारों का एक समूह आता दिखायी दिया। उन्होंने पहले घुड़सवार को गुजर जाने दिया, फिर दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवां घुड़सवार भी चला गया। आखिर में केवल एक घुड़सवार बच गया। जैसे ही वह बराबर में आया, बुजुर्ग आदमी ने उसकी आंखों में देखा और कहा, 'महोदय, क्या आप मुझे घोड़े पर बिठा कर नदी पार करा सकते हैं?'

घुड़सवार ने क्षणभर भी हिचकिचाये बिना कहा, 'क्यों नहीं! आइए, बैठ जाइए।' नदी पार होने के बाद बुजुर्ग व्यक्ति घोड़े से उतर गया और जाने लगा। तभी घुड़सवार ने कहा, 'महोदय, मैंने देखा कि आपने बाकी सब घुड़सवारों को उनसे मदद मांगे बिना जाने दिया। फिर जब मैं आपके बराबर में आया, तो आपने मुझसे फौरन नदी पार कराने के लिए कह दिया। मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि आपने उनसे क्यों नहीं कहा और मुझसे ही क्यों कहा?'

बुजुर्ग व्यक्ति ने शांति से उत्तर दिया, 'मैंने उनकी आंखों में देखा। मुझे वहां कोई प्यार नजर नहीं आया, तो मैं समझ गया कि उनसे मदद के लिए कहना व्यर्थ है। लेकिन जब मैंने आपकी आंखों में देखा तो मुझे संवेदना, प्यार और सहायता करने की इच्छा दिखाई दी। मैं जान गया कि मुझे नदी पार कराने के लिए घोड़े पर बिठाने में आपको प्रसन्नता होगी।'

घुड़सवार ने कहा, 'आपने मेरे लिए जो भी कहा, उसके लिए मैं आभारी हूं।' इसके बाद वह चल दिया। अब उसके दिल में एक गहरी संतुष्टि थी और लोगों की मदद करने की इच्छा और प्रबल हो गयी थी।

सीख सुहानी ❀ गौर करें कि आपके पड़ोसी, मित्र या रिश्तेदार आदि आपसे कितनी मदद मांगते हैं। यदि वे आपसे मदद नहीं मांगते, तो आपको अपना व्यवहार बदलना होगा। अपने हाव-भाव पर ध्यान दें। कहीं आप किसी घमंडी की तरह तो नहीं दिखते? कोशिश करें कि अपने चेहरे पर हमेशा एक मुस्कान रखें।

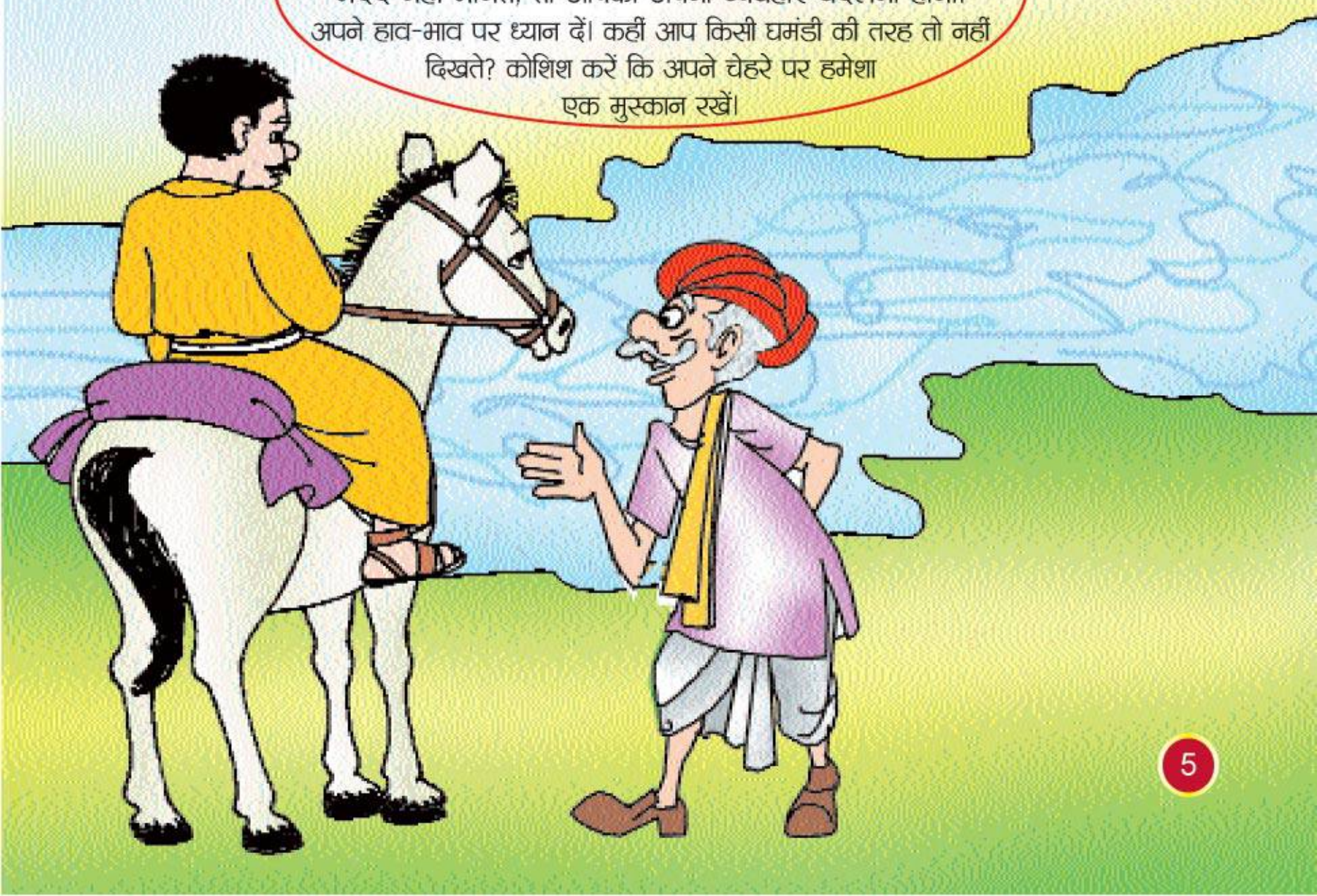

मिट्टी की पूजा

महान क्रांतिकारी भगत सिंह को उनकी चाची बचपन में देशभक्ति और बलिदान की कहानियां सुनाया करती थीं। उनके कोमल मन पर इन शौर्यगाथाओं ने गहरा प्रभाव डाला था। उन्होंने छोटी उम्र में ही ठान लिया था कि वे बड़े होकर देश की सेवा करेंगे। जलियांवाला बाग कांड का उन पर गहरा असर पड़ा। अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर ने गोली चलवा दी थी। इसमें सैकड़ों लोग मारे गये। सारा देश हिल उठा। बारह वर्षीय भगत सिंह भी अमृतसर पहुंचे। उन्होंने देखा कि जलियांवाला बाग की मिट्टी खून से लाल हो गई है। वह गुस्से से कांप उठे। उन्होंने खून से सनी थोड़ी मिट्टी उठाकर शीशे की एक बोतल में भरी और घर लौट आए।

घर पहुंचे तो उनकी बहन दौड़ती हुई उनके पास आई और बोली, 'आज तुमने इतनी देर कहां लगा दी? आओ खाना खा लो।' भगत सिंह के चेहरे पर गहरे दुख और गुस्से का भाव था। वह बोले, 'आज मैं कुछ नहीं खाऊंगा। बहन ने घबराकर पूछा, 'क्यों क्या बात है? भगत सिंह ने कहा, 'अंग्रेजों ने हमारे बहुत सारे लोगो को गोलियों से भून दिया है।' फिर वह बहन को बोतल दिखाते हुए बोले, 'इसमें देश के शहीदों की खून से सनी मिट्टी है।' फिर उन्होंने कुछ फूल उस बोतल के चारों तरफ रख दिए और हाथ जोड़कर खड़े हो गए।

उन्होंने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि देश के बेकसूर लोगों का खून बहाने वाले अंग्रेजों को भगाकर ही दम लूंगा। भगत सिंह बहुत दिनों तक उस मिट्टी की पूजा करते रहे, जो उन्हें याद दिलाती थी कि उन्हें एक दिन देश के लिए अपने जीवन का बलिदान करना है।

समान व्यवहार

एक बार की बात है मगध के व्यापारी को व्यापार में बहुत लाभ हुआ। इसके बाद से वह अपने अधीनस्थों से अहंकारपूर्ण व्यवहार करने लगा।

व्यापारी का अहंकार इतना प्रबल था कि उसके देखते हुए उसके परिजन भी अहंकार के वशीभूत हो गए। जब सभी के अहंकार आपस में टकराने लगे तो घर का वातावरण नर्क की तरह हो गया। दुखी होकर एक दिन वह व्यापारी भगवान बुद्ध के पास पहुंचा और बोला, 'भगवन! मुझे इस नर्क से मुक्ति दिलाइए। मैं भी भिक्षु बनना चाहता हूं।' भगवान बुद्ध गंभीर स्वर में बोले, 'अभी तुम्हारे भिक्षु बनने का समय नहीं आया है।'

उन्होंने कहा, 'भिक्षु को पलायनवादी नहीं होना चाहिए। जैसे व्यवहार की अपेक्षा तुम दूसरों से करते हो, स्वयं भी दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो। ऐसा करने से तुम्हारा घर ही मंदिर बन जाएगा।' उस व्यापारी ने भगवान बुद्ध की सीख को अपनाया और घर का वातावरण स्वत: बदल गया।

दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद नहीं।

सफलता का राज

एक बार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक सभा में मु□य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर जब उन्होंने अपना व□तव्य दिया तो लोग चकित रह गए। उनमें से ज्यादातर लोग उन्हें पहली बार सुन रहे थे। उनके भाषण ने सबका मन मोह लिया। जब उनका व□तव्य समाप्त हुआ तो तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा हॉल गूंज उठा। कुछ श्रोतागण उन्हें घेरकर खड़े हो गए।

एक श्रोता ने पूछा, 'तिलक जी, आप अत्यन्त ओजस्वी व□ता हैं, प्रकांड विद्वान और देशभ□त हैं। आखिर आप इतने सारे कार्य एक साथ कैसे कर पाते हैं?' इस पर तिलक बोले, 'समय-सारिणी बनाकर व्यि□त ढेर सारे कार्यों को अंजाम दे सकता है। मैं निरंतर पुस्तकों का अध्ययन करता हूं, राजनीति में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन पर नजर रखता हूं, समयानुसार कार्य करता हूं। किसी से द्वेष-भाव नहीं रखता।'

यह बात सनुकर दूसरा श्रोता बोला, 'समय-सारिणी बनाकर भी अधिक कार्यों को करना संभव नहीं होता। फिर कई बार अधैर्य और चिंता, समय-सारिणी के अनुसार काम ही नहीं करने देतीं। आप तो बस हमें अपनी सफलता का राज बताएं।' दूसरे श्रोता की बात पर तिलक मुस्करा कर बोले, 'भइया, मेरी सफलता का राज केवल इतना है कि मैं हर कार्य को तनावमु□त होकर अपनी शि□त और सामर्थ्य के अनुसार करता हूं, इस पर ध्यान नहीं देता कि लोग मेरे बारे में □या बातें कर रहे हैं। समय सबके पास इतना ही होता है। लेकिन वे उसे अधिकतर इस बात में व्यर्थ कर देते हैं कि दूसरे उनके बारे में □या बातें कर रहे हैं? फिर अपनी निंदा अ□सर लोग सहन नहीं कर पाते और दूसरे व्यि□त से उलझ कर उसमें अपना समय व्यर्थ कर देते हैं। ऐसे में वे सफल कैसे हो सकते हैं? सफलता का मूलमंत्र है, बिना किसी दबाव, तनाव और किसी बात

ज्ञान की सीमा

यूनानी दार्शनिक अफलातून के पास हर दिन कई विद्वानों का जमावड़ा लगा रहता था। सभी उनसे कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त करके जाया करते थे। लेकिन स्वयं अफलातून खुद को कभी भी ज्ञानी नहीं मानते थे।

एक दिन उनके एक मित्र ने कहा, 'आपके पास दुनिया के बड़े-बड़े विद्वान कुछ न कुछ सीखने और जानने आते हैं और आपसे बातें करके अपना जन्म धन्य समझते हैं। किन्तु आपकी एक बात मेरी समझ में नहीं आती।' अफलातून बोले, 'तु□हें किस बात पर शंका है?' इस पर मित्र बोला, 'आप स्वयं इतने बड़े दार्शनिक और विद्वान हैं, लेकिन फिर भी आप दूसरे से शिक्षा ग्रहण करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वह भी बड़े उत्साह और उमंग के साथ। उससे भी बड़ी बात यह है कि आपको साधारण व्यि□त से सीखने में भी झिझक नहीं होती। आपको सीखने की भला □या जरूरत है? कहीं आप लोगों को खुश करने के लिए उनसे सीखने का दिखावा तो नहीं करते?'

मित्र की बात पर अफलातून जोर से हंसे और फिर उन्होंने कहा, 'हर किसी के पास कुछ न कुछ ऐसी चीज है जो दूसरों के पास नहीं। इसलिए हर किसी को

❀ ज्ञान अनंत है, इसकी कोई सीमा नहीं है। हमेशा सीखते रहें।

मन की शक्ति

उन दिनों स्वामी विवेकानंद देश भ्रमण में लगे थे। साथ में उनके एक गुरु भाई भी थे। स्वाध्याय, सत्संग एवं कठोर तप का अविराम सिलसिला चल रहा था। जहां कहीं अच्छे ग्रंथ मिलते, वे उनको पढ़ना नहीं भूलते थे। किसी नई जगह जाने पर उनकी सबसे पहली तलाश किसी अच्छे पुस्तकालय की रहती। किसी जगह एक पुस्तकालय ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। उन्होंने सोचा, □यों न यहां थोड़े दिनों तक डेरा जमाया जाए। उनके गुरुभाई उन्हें पुस्तकालय में संस्कृत और अंग्रेजी की नई-नई किताबें लाकर देते थे। स्वामी जी उन्हें पढ़कर अगले दिन वापस कर देते। रोज नई किताबें वह भी पर्याप्त पृष्ठों वाली। इस तरह से देते एवं वापस लेते हुए उस पुस्तकालय का अधीक्षक बड़ा हैरान हो गया। उसने स्वामी जी के गुरु भाई से कहा, '□या आप इतनी सारी नई-नई किताबें केवल देखने के लिए ले जाते हैं? यदि इन्हें देखना ही है तो मैं ऐसे ही यहां पर दिखा देता हूं। रोज इतना वजन उठाने की □या जरूरत है?'

लाइब्रेरियन की इस बात पर स्वामी जी के गुरु भाई ने गंभीरतापूर्वक कहा, 'जो आप समझते हैं वैसा कुछ भी नहीं है। हमारे गुरु भाई इन सब पुस्तकों को पूरी गंभीरता से पढ़ते हैं, फिर वापस कर देते हैं।' इस उ□ार से आश्चर्यचकित हो लाइब्रेरियन ने कहा, 'यदि ऐसा है तो मैं उनसे मिलना चाहूंगा।'

अगले दिन स्वामी जी उससे मिले और कहा, 'महाशय आप हैरान न हों। मैंने न केवल उन किताबों को पढ़ा है बल्कि उनको याद भी कर लिया है।' इतना कहते हुए उन्होंने वापस की गई कुछ किताबें उसे थमाई और उनके कई मह□वपूर्ण अंशों को श□दश: सुना दिया। लाइब्रेरियन चकित रह गया। उसने उनकी याददाश्त का रहस्य पूछा। स्वामी जी बोले, 'अगर पूरी तरह एकाग्र होकर पढ़ा जाए तो चीजें दिमाग में अंकित हो जाती हैं। पर इसके लिए आवश्यक है कि मन की धारण शा□त

जो भी कार्य करें, एकाग्र होकर करें।

नदी का नीर

गौतम बुद्ध भिक्षाटन के लिए एक बड़े गांव में पहुंचे। वहां कुछ दूरी पर एक नदी बहती थी। उस नदी के कारण वह इलाका काफी उपजाऊ था। इसलिए वहां खुशहाली थी। नदी के दोनों तटों पर विभिन्न समुदायों के लोग रहते थे। उनमें एक-दूसरे के लिए प्रेम और स□मान था। वे किसी भी संकट का मिलकर सामना करते थे। लेकिन गर्मी के मौसम ने उनमें तनाव पैदा कर दिया।

हुआ यह कि इस बार कुछ ज्यादा ही गर्मी पड़ी थी। नदी में जल की मात्रा काफी कम हो गई। इसलिए एक तट पर बसने वाले लोग नदी से पानी अपने खेतों में पहुंचाने के लिए एक नहर निकालने की कोशिश करने लगे तो दूसरे तट पर रहने वाले ग्रामवासियों ने उन्हें रोकते हुए कहा, 'यदि तुम लोग नहर निकालकर पानी को अपने खेतों में ले जाओगे तो हमारा □या होगा?' इस प्रकार दोनों तटों पर रहने वाले लोगों के बीच नदी के पानी को लेकर झगड़ा शुरू हो गया।

दोनों दलों के लोग लाठियां ले आए। उनके झगड़े का शोर सुनकर गौतम बुद्ध वहां आए और उन्होंने उन लोगों से पूछा, 'ग्रामवासियो, पानी का मूल्य □या होता है?' दोनों दलों के लोगों ने जवाब दिया, 'भगवन, प्रकृति के उपहार पानी का तो कोई मूल्य नहीं है।' फिर बुद्ध ने पूछा, 'और प्यारे भाइयो, मनुष्य के र□त का □या मूल्य है?' दोनों दलों के लोग इस प्रश्न पर चुप हो गए। फिर उनमें से एक ने कहा, 'भगवन, हम आपका आशय समझ गए हैं। हमें पानी के लिए झगड़कर एक-दूसरे का र□त नहीं बहाना चाहिए।'

इस तरह बुद्ध के हस्तक्षेप से पानी पर र□तपात होते-होते रह गया। दोनों किनारे के लोगों ने मिलकर अपनी आवश्यकता के हिसाब से पानी खर्च करने का निर्णय किया। इसने एक पर□परा का ही रूप ले लिया। बाद में जब भी सूखा पड़ता, लोग

❀ *आपसी समझ से बड़ी से बड़ी समस्या का भी समाधान हो सकता है।*

जीवन के रत्न

अफलातून ने मरते समय अपने बच्चों को बुलाया और कहा, 'मैं तु□हें चार-चार रत्न देकर मरना चाहता हूं। आशा है, तुम इन्हें संभालकर रखोगे और इन रत्नों से अपना जीवन सुखी बनाओगे। पहला रत्न मैं क्षमा का देता हूं। तु□हारे प्रति कोई कुछ भी कहे, तुम उसे भुलाते रहो। कभी उसके प्रतिकार का विचार अपने मन में न लाओ। प्रतिकार का विचार क्रोध को जन्म देता है। क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है। क्रोध के अधीन होकर वह उचित-अनुचित, सत्य-असत्य, भले-बुरे का अंतर नहीं समझ पाता। क्रोध को त्याग कर अपने-अपने स्वभाव में रहना क्षमा है। क्षमा अपनाओगे तो दुर्घटनाओं से बचे रहोगे।

अफलातून ने दूसरा रत्न निरहंकार का देते हुए समझाया कि अपने द्वारा किये गए उपकार को भूल जाना चाहिए। कभी ऐसा मत सोचना कि मैं तो सबका भला करता हूं। पर मेरे साथ वो लोग अच्छा करेंगे या नहीं? इस संसार में सभी जीव एक-दूसरे पर निर्भर हैं। बिना परस्पर सहयोग के जीवन नहीं चल सकता। इसलिए अगर आज तुमने किसी के लिए कुछ किया है तो यह तय है कि कभी तु□हें भी उसकी जरूरत हो सकती है। तीसरा रत्न है- विश्वास। यह बात अपने हृदय में अंकित रखना कि ईश्वर पर ही नहीं, हर एक को दूसरे पर विश्वास रखना चाहिए। सभी की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए। विश्वास की डोर टूटते ही संबंधों में दूरियां पैदा हो जाती हैं।

अंत में वैराग्य-रूपी चौथा रत्न देते हुए उन्होंने कहा, 'यह हमेशा ध्यान में रखना कि एक दिन सबको मरना है। इसलिए जीवन को संपूर्णता से जिओ। हमेशा जीवन का उज्ज्वल पक्ष देखना हमारी सभी समस्याओं का हल होता है।

सांसारिक संपा□ा पाकर तो लोग न जाने □या- □या करते हैं, लेकिन इन चार रत्नों का अनुसरण कर वे बच्चे तो

नेहरू का

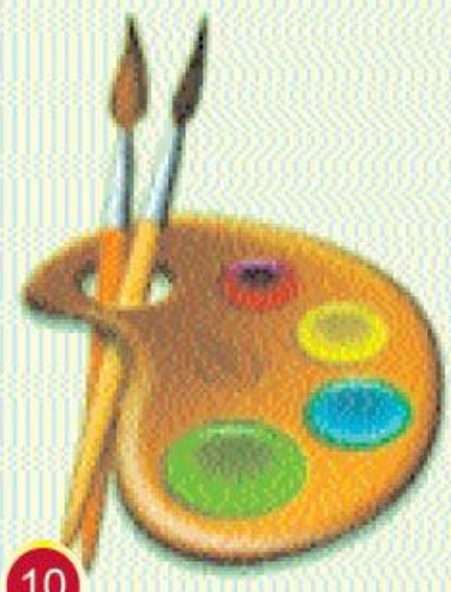

पंडित जवाहरलाल नेहरू हिमाचल प्रदेश के सुदूर इलाके के दौरे पर निकलने वाले थे। उनके जनसंपर्क अधिकारी मेजर शर्मा उनकी यात्रा की तैयारियां देख रहे थे। वे पंडितजी का स्वभाव जानते थे। भारत में कहीं भी पं. नेहरू जाते, तो जनता को उपहार देना नहीं भूलते थे। मेजर शर्मा ने अपने वरिष्ठ अधिकारी के सामने प्रस्ताव रखा कि सेब व टॉफियों की कुछ पेटियां साथ में रख ली जाएं। पर अधिकारी को यह प्रस्ताव बेकार लगा। उसने कहा, 'इसकी □या जरूरत है? उन्हें वहां कौन से ग्रामीण लोग मिलेंगे, जो उपहार की आवश्यता पड़ेगी?

मेजर शर्मा निराश हुए। पर वे □या कर सकते थे! लेकिन उनका मन नहीं ही माना और उन्होंने सेब व टॉफियों की दो पेटियां हवाई- जहाज में बिना अपने अधिकारी को बताए चुपके से चढ़ा दी।

नारियल की तरह

काशी के एक संत के पास एक छात्र आया और बोला, 'गुरुदेव, आप प्रवचन करते समय कहते हैं कि कटु से कटु वचन बोलने वाले के अंदर भी नरम हृदय हो सकता है। मुझे विश्वास नहीं होता। संत यह सुनकर गंभीर हो गए। उन्होंने कहा, 'मैं इसका जवाब कुछ समय बाद ही दे पाऊंगा। छात्र लौट गया। एक महीने बाद वह फिर संत के पास पहुंचा। उस समय संत प्रवचन कर रहे थे। वह लोगों के बीच जाकर बैठ गया। प्रवचन समाप्त होने के बाद संत ने एक नारियल उस छात्र को दिया और कहा, 'वत्स, इसे तोड़कर इसकी गिरी निकाल कर लोगों में बांट दो।'

छात्र उसे तोड़ने लगा। नारियल बेहद स□त था। बहुत कोशिश करने के बाद भी वह नहीं टूटा। छात्र ने कहा, 'गुरुदेव, यह बहुत कड़ा है। कोई औजार हो तो उससे इसे तोड़ दूं।' संत बोले, 'औजार लेकर □या करोगे? कोशिश करो टूट जाएगा।' छात्र फिर उसे तोड़ने लगा। इस बार वह टूट गया। उसने उसकी गिरी निकालकर भ□तों में बांट दी और एक कोने में बैठ गया। एक-एक करके सभी भ□त चले गए। संत भी उठकर जाने लगे तो छात्र ने कहा, 'गुरुदेव, अभी तक मेरे प्रश्न का उ□ार नहीं मिला।' संत मुस्कराकर बोले, 'तु□हारे प्रश्न का उ□ार दिया जा चुका है, पर तुमने समझा नहीं।' छात्र ने आश्चर्य से कहा, 'मैं समझ नहीं पाया।'

संत ने समझाया, 'देखो, जिस तरह कठोर गोले में नरम गिरी होती है, उसी प्रकार कठोर से कठोर व्या□ित में भी नरम हृदय होता है। उसे भी एक विशेष औजार से निकालना पड़ता है। वह औजार है- प्रेमपूर्ण व्यवहार। यदि किसी के कठोर आचरण या वचन का जवाब स्नेह से दिया जाए तो उसके भीतर का नरम हृदय बाहर आ जाता है। वह खुद भी मृदु व्यवहार करने लग जाता है।' छात्र को संत की सीख

उपहार

सुबह चार बजे हवाई जहाज रवाना हुआ और सूर्योदय होते-होते पूरी टीम हिमाचल पहुंच गई। वहां के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों ने पंडितजी का मन मोह लिया। पंडितजी के उतरते ही स्थानीय लोगों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया, जिसमें कुछ नन्हे बच्चे भी थे। बच्चे तो नेहरूजी की कमजोरी थे। उन्हें देखते ही वे कह उठे, '□या इन बच्चों को देने के लिए हमारे पास कुछ है?'

तमाम अधिकारी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। तभी मेजर शर्मा ने सेब और टॉफियों की पेटियां नेहरूजी के सामने रख दीं। नेहरूजी की प्रसन्नता की सीमा न रही। वे दोनों हाथों से बच्चों को टॉफियां और सेब लुटाने लगे। बच्चे भी चाचा नेहरू के हाथों यह उपहार पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। पंडितजी ने मेजर शर्मा की सूझबूझ की सराहना की। दूसरे अधिकारियों ने भी मेजर शर्मा से सीख ली।

अपनी उपयोगिता बढ़ाएं और आगे बढ़ जाएं

प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग योग्यता होती है। कोई अपनी योग्यता पढ़ाई, अनुभव, प्रैक्टिस तथा मेहनत से प्राप्त करता है, तो किसी व्यक्ति में योग्यता प्राकृतिक रूप से होती है। दरअसल योग्यता एक सच्चाई है, लेकिन उपयोगिता उससे भी बड़ी आवश्यकता। कम योग्यता होने पर हमें निराश नहीं होना चाहिये, बल्कि अपनी उपयोगिता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

एक गांव में एक धोबी के पास एक गधा और एक कुत्ता था। गधा घाट से कपड़े लाने-ले जाने का कार्य करता और कुत्ता रातभर कपड़ों की रखवाली करता। समय बीतता गया। धोबी ने एक ऑटो खरीद लिया।

अब जिस दिन बहुत ज्यादा कपड़े होते उस दिन वह ऑटो का व जिस दिन कम कपड़े होते उस दिन गधे का उपयोग घाट से कपड़ा लाने-ले जाने के लिए करता। कुत्ता दिनभर सोता और रात को भी आंखें बंद कर पड़ा रहता। थोड़ी-सी भी आहट होती, वह दौड़ पड़ता और जोर-जोर से भौंकता। चोर घबरा कर भाग खड़ा होता।

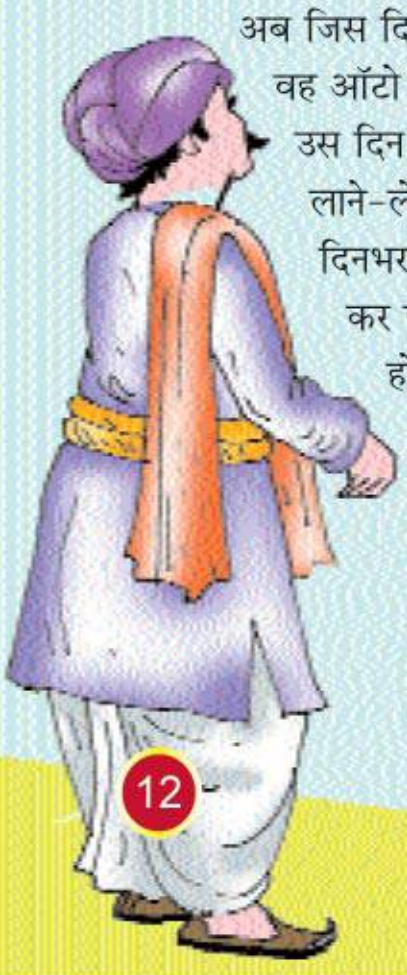

कभी-कभी चोर कुत्ते को बिस्कुट या केक खिला कर कुछ कपड़े चोरी भी कर लेता। एक दिन गधे ने धोबी को अपने बेटे से बात करते सुना कि उसे दो जानवर पालना मुश्किल हो रहा है, तो इनमें से एक को वह बेच देगा। क्योंकि कुत्ते में भौंकने की योग्यता है इसलिए संभवत: गधे को बेच देगा।

गधे ने सोचा, 'मैं भौंकने वाली योग्यता तो नहीं ला सकता, पर चौकीदारी कर अपनी उपयोगिता बढ़ा सकता हूं।' वह कुत्ते को बोला कि मैं रात को चौकीदारी करना चाहता हूं। रात को चोर आने पर गधा ढेंचु-ढेंचु करने लगा। चोर भाग कर छिप गया। धोबी ने आकर इधर-उधर देखा और गधे को डंडे से मारा। कुत्ता और चोर दोनों मन ही मन हंसने लगे। दूसरे दिन फिर गधे ने चौकीदारी की ठानी। चोर आया। गधे ने जोर से ढेंचु-ढेंचु की और जा कर चोर की पतलून पकड़ ली।

चोर ने गधे को खूब डंडा मारा, पर उसने चोर को नहीं छोड़ा। धोबी उठा और सालों से उनके यहां चोरी करने वाले चोर को पकड़ बहुत खुश हुआ। उसने गधे की पीठ थपथपाई और कुत्ते को एक डंडा मारा। अपनी उपयोगिता बढ़ा कर गधे ने धोबी के यहां अपनी कीमत

सीख सुहानी ❀ बहुत बार ऐसा होता है कि कोई अधिक योग्य व्यक्ति हमसे आगे निकल जाता है और हम कसमसा कर रह जाते हैं। ऐसे में अपनी योग्यता बढ़ाएं।

❀ भले ही आप पढ़ाई में कुछ विशेष नहीं कर पा रहे हैं तो फिक्र नहीं। अन्य कामों में एक्सपर्ट होकर अपनी खास जगह बना सकते हैं।

ईश्वर में आस्था न छोड़ें

जब भी हमसे कोई गलती हो जाती है और कोई काम नहीं हो पाता तो हम तनाव में आ जाते हैं। भगवान को कोसने लगते हैं कि मेरे साथ ऐसा □यों किया? लेकिन ऐसे व□त में हमें भगवान को कोसने की बजाय खुद पर संयम रखना चाहिए। आस्था बनाये रखनी चाहिए। □योंकि भगवान की इच्छा सर्वोपरि होती है और वे कभी भी लोगों का बुरा नहीं चाहते।

एक नाविक था। वह प्रभु का अनन्य भक्त था. एक बार वह जहाज से बड़ी यात्रा पर निकला। एक रात जब उसकी प्रार्थना का व□त हुआ, तो उसने देखा कि पूरे जहाज में जश्न मन रहा है। वह प्रार्थना करने जहाज से बंधी एक छोटी नाव पर चला गया। थोड़ी ही देर में एक बड़ी लहर आई और उसने नाव को दूर फेंक दिया। देखते ही देखते जोर की लहर उठने लगीं और जहाज उसकी आंखों से ओझल हो गया। सुबह उसने खुद को एक टापू पर पाया। उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि वह सुरक्षित है। उसने इधर-उधर देखा। उसे नाव के टुकड़े दिखायी दिये।

उसने सोचा कि पहले खाने की चीज तलाश लूं, फिर नाव की मर□मत करूंगा। दो घंटे के प्रयास के बाद वह कुछ मछलियां पकड़ पाया। कच्ची मछली वह नहीं खा सकता था, इसलिए उसने सोचा कि नाव वाली जगह जाकर कुछ जुगाड़ किया जाये। जब वह उस जगह पर पहुंचा, तो उसने देखा कि वो टुकड़े धूं-धूं कर जल रहे हैं। अब उसे लगा कि वह कभी नाव बना कर लौट नहीं पायेगा। लेकिन उसने फिर भी ईश्वर को धन्यवाद दिया कि कम-से-कम वह जिंदा तो है। उसने आग में मछली भून कर खायी और सो गया।

अचानक किसी के हिलाने से उसकी नींद खुली। उसने देखा कि एक जहाज का कप्तान सामने खड़ा है। कप्तान ने उसे बताया कि कल रात बहुत तेज समुद्री तूफान आया, जिसमें एक जहाज डूब गया (जो नाविक से छूट गया था)। जब हम देख-खोज कर हार गये और हमें लगा कोई जिंदा नहीं बचा, तब हमें दूर से धुआं दिखायी दिया (नाव के टुकड़ों में लगी आग के कारण) और हम तु□हें लेने चले आये। नाविक ने फिर प्रभु को धन्यवाद दिया।

सीख सुहानी ❀ अपनी जिंदगी में बहुत-सी बातें हमें नुकसानदेह लगती हैं, लेकिन सच तो यह है कि वह सुपरिणाम का हिस्सा होती हैं। इसलिए अपनी आस्था बनाये रखें।

❀ कुछ भी गलत होने पर गुस्से या तनाव में अपना आपा न खोयें। न ही निराश हों। भगवान पर भरोसा रखें और अपना काम निरन्तर जारी रखें।

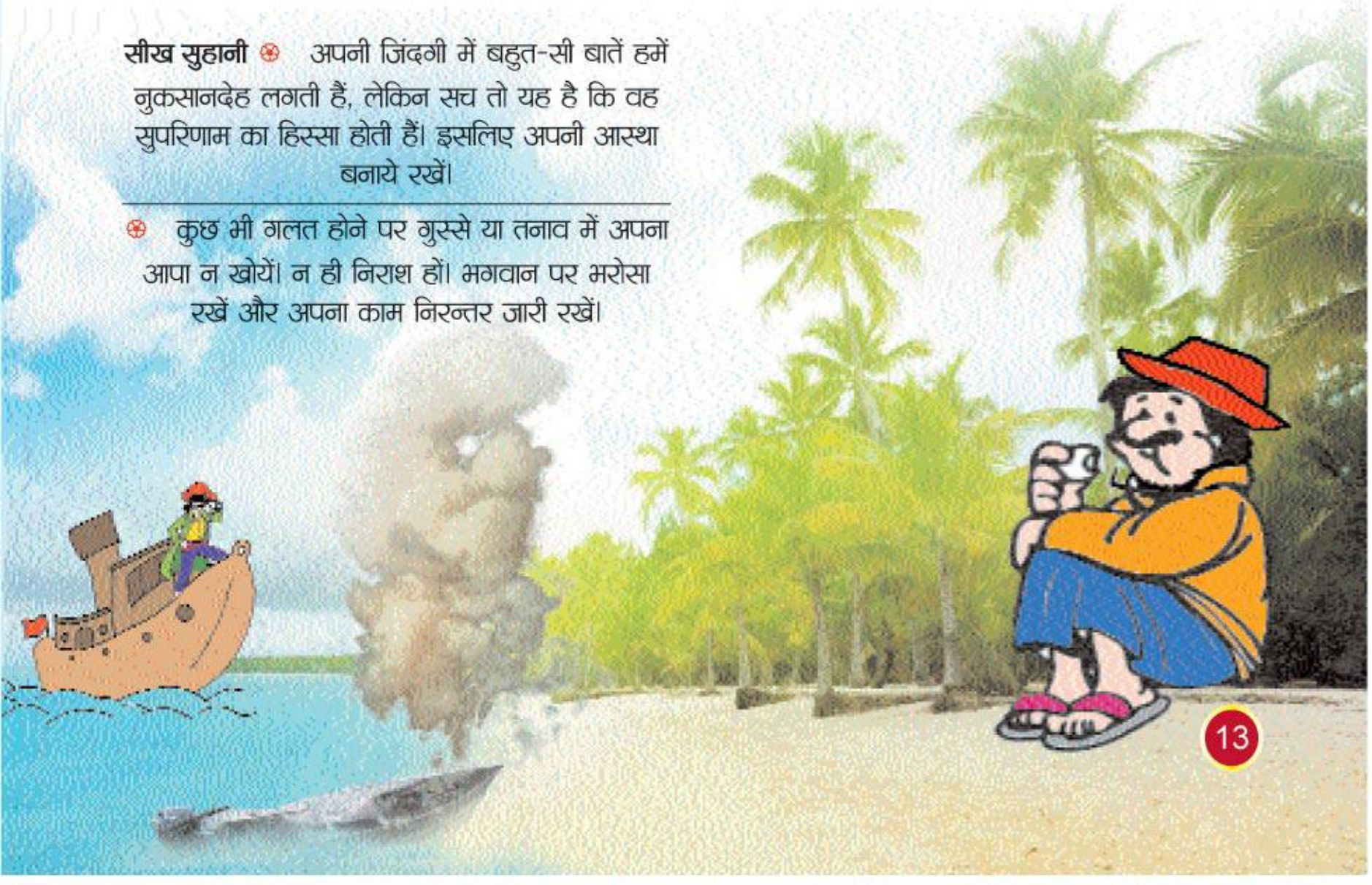

अच्छा जीवन

जर्मनी में एक बालक विलहेम पढ़ाई से जी चुराता था। उसकी मां जब उसे स्कूल ले जाती तो वह नखरे करता। स्कूल में भी पढ़ता कम और शरारत ज्यादा करता रहता था। एक दिन स्कूल से लौटते हुए वह सड़क पर खेल रहे बच्चों को देखकर मां से बोला, 'आप मुझे स्कूल □यों भेजती हैं? ये बच्चे भी तो बिना स्कूल गए ही बड़े हो रहे हैं। देखिए, ये कितने खुश हैं।'

मां चुपचाप सुनती रही। दूसरे दिन उसने विलहेम को घर के बाहर उग आए झाड़-झंखाड़ की ओर दिखाते हुए उससे पूछा, 'बताओ बेटा, इन्हें किसने उगाया है?' विलहेम बोला, 'मां, ये तो खुद ही उग आते हैं और ओस, बारिश का पानी और सूरज की गर्मी पाकर बढ़ जाते हैं।' फिर मां ने घर में लगे गुलाब के पौधों को दिखाते हुए पूछा, 'और अब बताओ, ये फूल कैसे लग रहे हैं?' विलहेम ने जवाब दिया, 'मां, ये तो बहुत ही सुंदर लग रहे हैं। इन्हें तो पिताजी रोज तराशते हैं और नियम से खाद-पानी भी देते हैं।'

मां विलहेम से यही सुनना चाहती थी। उसने तपाक से कहा, 'बिल्कुल ठीक। ये फूल इसलिए ज्यादा सुंदर हैं □योंकि इन्हें प्रयास करके ऐसा बनाया गया है। जीवन भी ऐसा ही है। हमें अच्छा जीवन प्रयासों से ही मिलता है। इसके लिए अच्छी शिक्षा, बेहतर प्रशिक्षण और परिश्रम की जरूरत पड़ती है। तुम में और उन स्कूल न जाने वाले बच्चों में □या फर्क है, यह तु□हें आगे चलकर पता चलेगा।' मां की यह सीख विलहेम

❀ शिक्षा जीवन का आधार है।

शून्य पर सवाल

यह महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के बचपन की घटना है। एक बार गणित की कक्षा में अध्यापक ने □लैकबोर्ड पर तीन केले बनाए और पूछा, 'यदि हमारे पास तीन केले हों और तीन विद्यार्थी, तो प्रत्येक विद्यार्थी के हिस्से में कितने केले आएंगे?' एक बालक ने तपाक से जवाब दिया, 'प्रत्येक विद्यार्थी को एक-एक केला मिलेगा।' अध्यापक ने कहा, 'बिल्कुल ठीक।' अभी भाग देने की क्रिया को अध्यापक आगे समझाने ही जा रहे थे कि रामानुजन ने खड़े होकर सवाल किया, 'सर! यदि किसी भी बालक को कोई केला न बांटा जाए, तो □या तब भी प्रत्येक बालक को एक केला मिलेगा?' यह सुनते ही सारे के सारे विद्यार्थी हो-हो करके हंस पड़े।

उनमें से एक ने कहा, 'यह □या मूर्खतापूर्ण सवाल है।' इस बात पर अध्यापक ने मेज थपथपाई और बोले, 'इसमें हंसने की कोई बात नहीं है। मैं आपको बताऊंगा कि यह बालक □या पूछना चाहता है।' बच्चे शांत हो गए। वे कभी आश्चर्य से शिक्षक को देखते तो कभी रामानुजन को। अध्यापक ने कहा, 'यह बालक यह जानना चाहता है कि यदि शून्य को शून्य से विभाजित किया जाए तो परिणाम □या एक होगा?'

आगे समझाते हुए अध्यापक ने बताया कि इसका उ□ार शून्य ही होगा। उन्होंने यह भी बताया कि यह गणित का एक बहुत मह□वपूर्ण सवाल था और अनेक गणितज्ञों का विचार था कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर उ□ार शून्य होगा, जबकि अन्य कई लोगों का विचार था कि उ□ार एक होगा। अंत में इस समस्या का निराकरण भारतीय वैज्ञानिक भास्कर ने किया। उन्होंने सिद्ध किया कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम शून्य ही होगा न कि एक।

❀ हमेशा जिज्ञासाभाव बनाये रखें, इससे कुछ नया जानने को मिलता है।

बात के पक्के

बात उन दिनों की है, जब राममनोहर लोहिया बर्लिन में थे। वह अपने वचन के प□के थे। जो एक बार कह देते, उस पर टिके रहते थे। एक रात वह अपने एक मित्र के साथ कार में घूमने निकले। लोहिया जी तेजी से गाड़ी चला रहे थे। सामने सड़क पर एक किसान बिना लाइट की मोटरगाड़ी में स□जयां रखकर ला रहा था।

लोहिया जी की गाड़ी किसान की गाड़ी से टकरा गई। किसान अपनी स□जयों समेत सड़क पर जा गिरा। उसे चोट लगी और सिर से खून निकलने लगा। उसने लोहिया जी को भला- बुरा कहना शुरू कर दिया। वह बोला, 'तुम यहां से भागना नहीं, मैं अभी पुलिस बुलाकर लाता हूं।'

बहुत समझाने के बाद भी जब वह नहीं माना तो लोहिया जी बोले, 'ठीक है आप पुलिस को बुला लाइए, मैं वचन देता हूं कि आप का यही पर इंतजार करूंगा।' किसान पुलिस को बुलाने चला गया। उसके जाते ही लोहिया जी का मित्र बोला, 'मुसीबत टल गई है, अब यहां से भाग चलो।' पर लोहिया जी नहीं माने। मित्र के बहुत समझाने के बाद भी वह टस से मस नहीं हुए।

थोड़ी देर बाद किसान पुलिस को भला- बुरा कहते हुए लौट आया, □योंकि पुलिस ने उसके साथ आने से मना कर दिया था। लोहिया जी को वहीं खड़ा पाकर वह आश्चर्यचकित रह गया और बोला, 'मैं तो सोच रहा था कि अब तक तुम भाग चुके होंगे।' लोहिया जी ने कहा, 'मैंने वचन दिया था कि आपके लौटने से पहले यहां से नहीं जाऊंगा तो मैं भाग कैसे सकता था?' किसान लोहिया जी से बेहद प्रभावित हुआ और चुपचाप चला गया।

❀ वचन का पालन करने से साख बढ़ती है।

झील का चांद

एक व्यक्ति एक प्रसिद्ध संत के पास गया और बोला, 'गुरुवर, मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान है। मैंने शास्त्रों का अध्ययन भी किया है, फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता। जब भी कोई काम करने बैठता हूं तो मन भटकने लगता है और मैं उस काम को छोड़ देता हूं। इस अस्थिरता का कारण क्या है? कृपया मेरी इस समस्या का समाधान कीजिए।' संत ने उसे रात का इंतजार करने को कहा।

रात होने पर वे उसे एक झील के पास ले गए और झील के अंदर चांद के चमचमाते प्रतिबिंब को दिखाकर बोले, 'एक चांद आकाश में है और एक झील में। तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम उसका प्रयोग करने के बजाय सिर्फ उसे अपने मन में लेकर बैठे हो, ठीक उसी तरह जैसे झील असली चांद का प्रतिबिंब लेकर बैठी है। तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है, जब तुम उसे व्यवहार में एकाग्रता व संयम के साथ अपनाने की कोशिश करो। झील का चांद तो मात्र एक भ्रम है। भला यह चांद मुक्त आकाश के चंद्रमा की बराबरी कहां कर सकता है? उसी तरह तुम्हें काम में मन लगाने के लिए स्वयं को आकाश के चंद्रमा की तरह बनाना है। झील का चंद्रमा पानी में कंकड़-पत्थर गिरने पर हिलने लगता है। तुम्हारा मन भी जरा-जरा सी बात में डोलने लग जाता है। तुम्हें अपने ज्ञान व विवेक को जीवन में नियमपूर्वक प्रयोग में लाना होगा। तभी तुम अपना लक्ष्य हासिल कर सकोगे। तुम्हें शुरू में थोड़ी परेशानी आएगी किन्तु कुछ समय बाद तुम अभ्यस्त हो जाओगे।' व्यक्ति संत का आशय समझ गया।

❀ मन की स्थिरता और चित्त की एकाग्रता से लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

नियम का पालन

बात उन दिनों की है, जब लालबहादुर शास्त्री रेल मंत्री थे। मंत्री होते हुए भी उनका जीवन बिल्कुल सीधा-सादा था। वे नियमों का स□ती से पालन करते थे और दूसरों से भी ऐसी ही आशा रखते थे। एक बार उन्हें बनारस से रेलगाड़ी में कहीं जाना था। बहुत कोशिश करने के बावजूद वे समय पर स्टेशन नहीं पहुंच पाए। गाड़ी का सिग्नल हो चुका था, पर जैसे ही गार्ड को पता चला कि मंत्री महोदय गाड़ी पकड़ने के लिए स्टेशन पर पहुंचने वाले हैं, उसने हरी झंडी नीची कर ली।

वह शास्त्री जी का इंतजार करने लगा। सभी यात्री परेशान थे कि सिग्नल होने पर भी गाड़ी चल □यों नहीं रही है? कुछ ही देर में शास्त्री जी स्टेशन पर पहुंच गए और अपने डि□बे की तरफ बढ़े। गार्ड भागा-भागा उनके सामने आया और बोला, 'जैसे ही मैंने सुना कि आप आ रहे हैं, मैंने ट्रेन को चलने नहीं दिया।' शास्त्री जी ने एक क्षण उसकी तरफ देखा और ट्रेन में सवार हो गए। गार्ड बेहद खुश था और सोच रहा था कि मंत्री जी उसके इस कार्य से प्रसन्न हुए होंगे और अब उसकी तर□की प□की है। पर अगले ही दिन उसकी यह खुशी काफूर हो गई, जब उसे अपनी ड्यूटी ठीक से न करने के आरोप में पदमु□त कर दिया गया।

शास्त्री जी मानते थे कि नियमों की अवहेलना ऊंचे से ऊंचे पद पर बैठे व्यि□त को भी नहीं करनी चाहिए। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा कि उनकी वजह से उस ट्रेन में सवार सैंकड़ों यात्रियों को असुविधा हुई, इसलिए उन्होंने इसके लिए जि□मेदार उस गार्ड को तुरंत पदमु□त करने का आदेश दे दिया था।

❀ हमें हमारे कर्तव्य का निर्वहन

दोस्ती का अंदाज

यह प्रसंग उस समय का है, जब डॉ. जाकिर हुसैन विशेष अध्ययन के लिए जर्मनी गए हुए थे। वहां कोई भी अनजान व्यि□त दूसरे अनजान को देखकर अपना नाम बताते हुए हाथ आगे बढ़ा देता था। इस प्रकार अपरिचित लोग भी एक-दूसरे के दोस्त बन जाते थे। दोस्ती करने का यह रिवाज वहां काफी लोकप्रिय था।

एक दिन जाकिर हुसैन के कॉलेज में वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा था। कार्यक्रम का समय हो चुका था। सभी विद्यार्थी व शिक्षक वार्षिकोत्सव के लिए निर्धारित स्थल पर पहुंच रहे थे। जाकिर साहब भी जल्दी-जल्दी वहां जाने के लिए अपने कदम बढ़ा रहे थे। जैसे ही उन्होंने कॉलेज में प्रवेश किया, एक शिक्षक महोदय भी वहां पहुंचे। दोनों ही जल्दबाजी और अनजाने में एक-दूसरे से टकरा गए।

शिक्षक महोदय जाकिर साहब से ट□कर होने पर गुस्से से उन्हें देखते हुए बोले, 'इडियट।' यह सुनकर जाकिर साहब ने फौरन अपना हाथ आगे की ओर बढ़ाया और बोले, 'जाकिर हुसैन। भारत से यहां पढ़ने के लिए आया हुआ हूं।' जाकिर साहब की हाजिरजवाबी देखकर शिक्षक महोदय का गुस्सा मुस्कराहट में बदल गया। वह बोले, 'बहुत खूब। आपकी हाजिरजवाबी ने मुझे प्रभावित कर दिया। इस तरह परिचय देकर आपने हमारे देश के रिवाज को भी मान दिया है और साथ ही मुझे मेरी गलती का अहसास भी करा दिया है। वाकई हम अनजाने में एक-दूसरे से टकराए थे। ऐसे में मुझे क्षमा मांगनी चाहिए थी। अपश□द नहीं बोलने चाहिए थे।'

शिक्षक का जवाब सुनकर जाकिर साहब बोले, 'कोई बात नहीं। इसी बहाने आपसे दोस्ती तो हो गई।' फिर दोनों मुस्करा कर एक साथ वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए चल पड़े।

❀ क्रोध में भी हमें अपशब्द नहीं बोलने चाहिए।

साख का सवाल

प्रसिद्ध रसायनज्ञ प्रफुल्ल चंद्र राय ने सन् क्त्-ख में दवा की नामी कंपनी बंगाल केमिकल्स की शुरुआत आठ सौ रुपए की मामूली पूंजी से की थी। राय देशभ□त थे और राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े थे। वे अपने काम के प्रति समर्पित रहते थे। बंगाल केमिकल्स को लेकर अनेक लोगों की मान्यता थी कि यह विदेशी दवा कंपनियों के आगे नहीं टिक पाएगी। लेकिन प्रफुल्ल चन्द राय ने संकल्प लिया था कि इसमें बनी कोई भी दवा विदेशी दवा से हल्की या कमजोर नहीं होगी।

एक दिन जब एक दवा बन रही थी, तो कई सौ बोतलों का रसायन कुछ बिगड़ गया। इस पर कारखाने के एक कर्मचारी ने कहा, 'थोड़ा-सा ही तो बिगड़ा है। किसी को कुछ भी पता नहीं चलेगा। बाजार में यह आसानी से बिक जाएगी। इससे दवा के गुणों पर भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।' इस पर दूसरा कर्मचारी बोला, 'वैसे भी अब बंगाल केमिकल्स अच्छी और सर्वो□म दवाओं की निशानी बन गई है। इसलिए इन्हें खरीदने में भी किसी को शंका नहीं होगी।'

कर्मचारियों की बातें सुनकर प्रफुल्ल चंद्र राय बोले, 'नहीं-नहीं। ऐसी दवाओं से हमारी हानि होगी।' हमारी कंपनी को दाग लगेगा। थोड़े से रुपयों का नुकसान हमारी कंपनी के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा देगा। मैं ग्राहकों से विश्वासघात नहीं कर सकता। किसी भी कंपनी की सफलता ग्राहकों के विश्वास के दम पर होती है। मैं इस साख को नहीं गिरने दूंगा, चाहे मुझे कितना भी बड़ा नुकसान □यों न उठाना पड़े।' इसके बाद प्रफुल्ल चंद्र राय ने उस रसायन को फिंकवा दिया और नए सिरे से दवा बनाने में जुट

सफलता का रहस्य

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य □या है? सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम कल मुझे नदी के किनारे मिलो। वो मिले। फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा और जब आगे बढ़ते-बढ़ते पानी गले तक पहुंच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सिर पकड़ के पानी में डुबो दिया। लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा। लेकिन सुकरात ताकतवर थे और उसे तब तक डुबोये रखा, जब तक कि वो नीला नहीं पड़ने लगा। फिर सुकरात ने उसका सिर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की, वो थी हांफते-हांफते तेजी से सांस लेना।

सुकरात ने पूछा, 'जब तुम वहां थे तो तुम सबसे ज्यादा □या चाहते थे?' लड़के ने उ□र दिया, 'सांस लेना।' सुकरात ने कहा, 'यही सफलता का रहस्य है। जब तुम सफलता को उतनी ही बुरी तरह से चाहोगे जितना कि तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तु□हें मिल जाएगी।

मुंह से निकले शब्द

एक बार एक किसान ने अपने पड़ोसी को भला-बुरा कह दिया। पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया। उसने संत से अपने श□द वापस लेने का उपाय पूछा।

संत ने किसान से कहा, 'तुम खूब सारे पंख इकट्ठा कर लो और उन्हें शहर के बीचों-बीच जाकर रख दो।' किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुंच गया। तब संत ने कहा, 'अब जाओ और उन पंखों को इकट्ठा करके वापस ले आओ।' किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर-उधर उड़ चुके थे। किसान खाली हाथ संत के पास पहुंचा। तब संत ने उससे कहा कि ठीक ऐसा ही तु□हारे द्वारा कहे गए श□दों के साथ होता है। तुम आसानी से इन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो, पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते।

❀ जो भी बोलें, सोच-समझ कर बोलें। मुंह से निकले शब्द कभी वापस नहीं आते।

डाकू- जितना धन है दे दो या जान दे दो।
गोलू- जान ही ले लो, धन-दौलत तो मैंने बुढ़ापे के लिए बचा रखा है।

बेटा- पिताजी! रावण कौन था?
पिता- अरे, इतना भी नहीं जानते। लाओ मेरी मेज से महाभारत, अभी बताता हूं कि रावण कौन था।

घर पर बिजली जाने पर मोमबत्तियां जला दी गईं।
बाबू- मोमबत्तियां तो जला दी हैं कम से कम पंखे भी तो चला दो।
टिंकू- पंखे तो मैं चला देता पर मोमबत्तियां बुझ जाएंगी।

पति- तुम फिर नई साड़ी ले आई! तुम्हारे खयाल से क्या मैं जाली नोट छापता हूं।
पत्नी- देखो जी, मर्दों के काम-धन्धे के बारे में पूछताछ करने की मेरी आदत नहीं है।

नरेश- कल मैंने अपनी पत्नी को बहुत परेशान किया।
महेश- कैसे।
नरेश- उसे मैंने एक नई साड़ी लाकर दी और घर के सारे आईने छुपा दिये।

मोटू- अरे पतलू, तुझे देखकर लोग कहेंगे कि आजकल शहर में अकाल पड़ा है।
पतलू- हां! लेकिन तुझे देखकर पता चल जाएगा कि अकाल क्यूं पड़ा है!

मां- बेटा तुमने पापा के खत का जवाब दे दिया?
बेटा- नहीं मां।
मां- क्यों?
बेटा- मां, आपने ही तो कहा था कि अपने से बड़ों को जवाब नहीं देते।

बीमार व्यक्ति- डॉक्टर साहब, आपने सिर, बदन और जोड़ों में होने वाला दर्द बिल्कुल ठीक कर दिया। अब एक तकलीफ रह गई है कि मुझे पसीना नहीं आता।
डॉक्टर- चिंता मत करो, मेरा बिल देखकर आपकी यह तकलीफ भी दूर हो जायेगी!

नरेन्द्र- मेरी पत्नी की याददाश्त बहुत ही खराब है।
सुरेन्द्र- क्यों, जरूरी बात भूल जाती है क्या?
नरेन्द्र- नहीं यार, छोटी-छोटी बात भी याद रखती है!

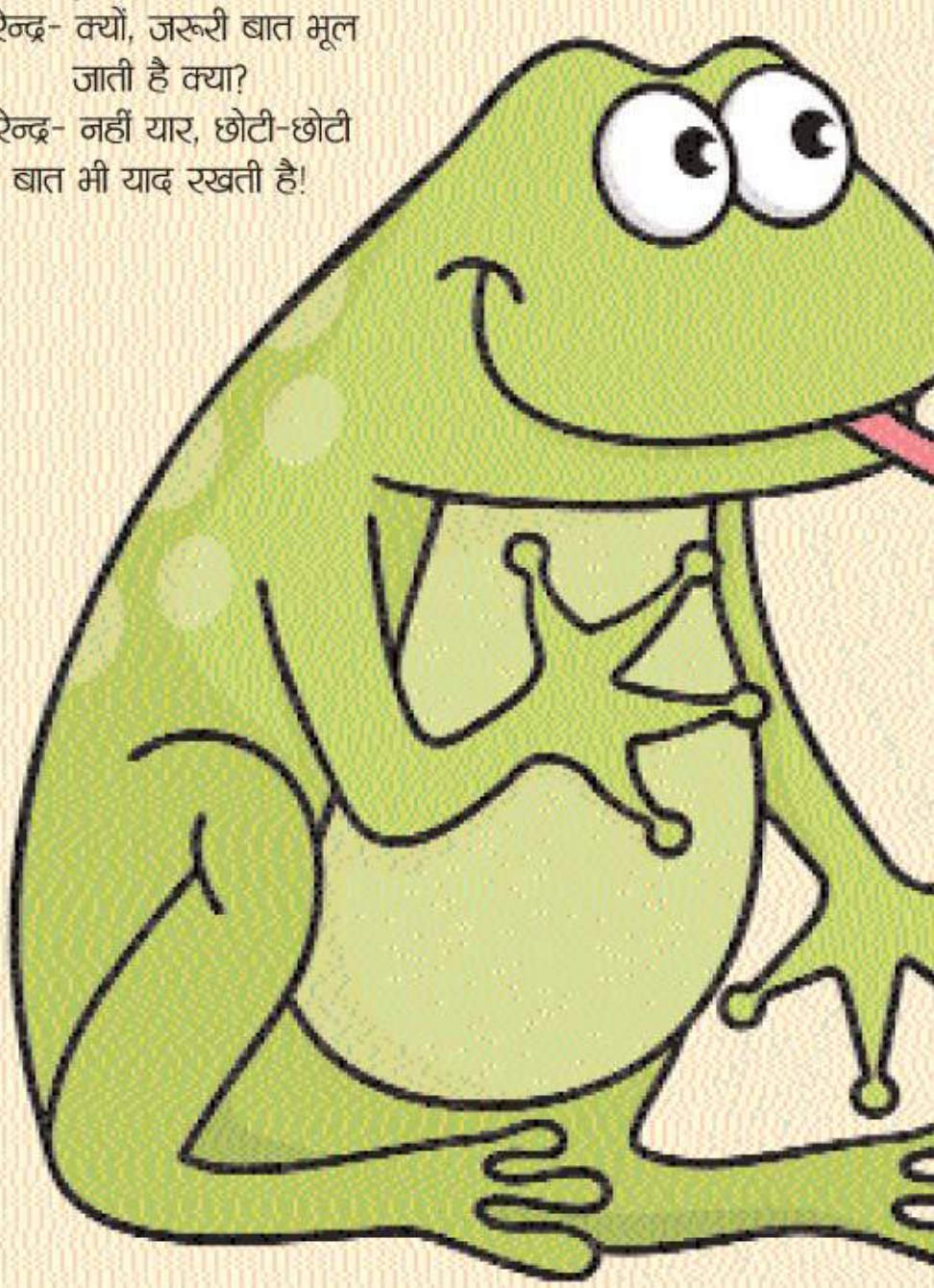

पति (कंगाल होने पर बीवी से)- तुम बच्चों को नानी के पास भेज दो..., तुम भी अपनी मां के पास चली जाओ...
बीवी- और आप...?
पति- मेरा क्या है...मैं ससुराल चला जाऊंगा...!

पति ने पान खरीद कर पत्नी को खाने के लिए दिया।
पत्नी- अरे! आपने तो अपने लिए लिया ही नहीं!
पति- मैं तो ऐसे ही खामोश रह सकता हूं...!

एक लड़का बड़ी देर से दुकान के शोकेस को देख रहा था।
दुकानदार- बेटा क्या देख रहे हो?
लड़का- अंकल यह क्या है?
दुकानदार- बेटा ये चांदी का कप है।
लड़का- यह कैसे ले सकते हैं?
दुकानदार- दौड़ में भाग लेने वाले को फर्स्ट आने पर मिलता है।
लड़का ने झट कप निकाला और यह कहकर भागा- अंकल मैं दौड़ रहा हूं। आप भी आ जाओ।

दुर्घटना में घायल पति होश में आने पर पूछने लगा- क्या मैं स्वर्ग पहुंच गया हूं?
पत्नी- नहीं जी, अभी तो मैं आपके संग हूं। यह अस्पताल है। तुम जिसे अप्सरा समझ रहे हो, वह श्वेत वस्त्रधारी सुंदरी यहां की नर्स है।

एक पागलखाने में एक डॉक्टर सुबह-सुबह मरीजों के चैकअप के लिए निकल पड़ा। उसने देखा चिंटू ऐसे दिखा रहा है कि वह लकड़ियां काटने का काम कर रहा है और पिंटू सीलिंग के साथ उल्टा लटका हुआ है।
डॉक्टर ने पूछा, 'अरे चिंटू क्या कर रहे हो?' चिंटू ने कहा, 'दिखाई नहीं देता, लकड़ियां काट रहा हूं।'
डाक्टर ने चिंटू से फिर पूछा, 'और ये पिंटू क्या कर रहा है?'
चिंटू ने कहा, 'यह तो पागल हो गया है। यह समझ रहा है कि यह बल्ब है इसलिए उल्टा लटका है।'
डॉक्टर ने उल्टे लटके हुए पिंटू को देखा तो उसका चेहरा पूरा लाल हो गया था। डॉक्टर ने चिंटू से कहा, 'अरे, ये तुम्हारा दोस्त है, इससे पहले कि इसके साथ कुछ गलत हो तुम्हें इसे नीचे उतारना चाहिए।' चिंटू फिर में अंधेरे में काम कैसे करूंगा?

रमेश एक बार अपने ऑटो से एक पहिया निकालने में जुटा हुआ था कि तभी नरेश वहां आ जाता है और रमेश से सवाल करता है।
नरेश- 'अरे रमेश, ऑटो का टायर क्यों निकाल रहे हो?'
यह सुन रमेश जवाब देता है- 'तुम्हें दिखाई नहीं देता कि वहां बोर्ड में क्या लिखा है? पार्किंग केवल दोपहिया वाहनों के लिए है!'

पत्नी- आप नींद में बहुत बोलते हो।
पति- तो तुम क्या चाहती हो कि मैं नींद में भी तुम्हारी सुनता रहूं।

नीतू- जब हमारी सगाई होगी तब मुझे रिंग दोगे न?
सत्येन- हां-हां जरूर दूंगा। बोलो लैंडलाइन पर दूं या मोबाइल पर दूं रिंग...।

उनका भोजन रहे ताजा

संत विनोबा भावे का जीवन दूसरों के लिए समर्पित था। उनके आदर्शों से प्रभावित होकर कई लोग उनके अनुयायी बन गए। परोपकार की भावना उनमें बचपन से ही थी। निश्चय ही इसके संस्कार उन्हें मां-पिता से मिले थे। जब वह छोटे थे, तब भी वह किसी की मदद का मौका नहीं छोड़ते थे। इसके लिए सब उनकी प्रशंसा करते थे। दूसरे बच्चों के मां-बाप उनकी मिसाल दिया करते थे।

बचपन में उनके माता-पिता उन्हें विनायक नाम से पुकारते थे। लेकिन महात्मा गांधी ने एक बार उनके पिता को पत्र लिखा, जिसमें उनके लिए विनोबा श□द का प्रयोग किया। तभी से सब लोग उन्हें विनोबा कहने लगे। एक बार विनोबा के पड़ोस में रहने वाले किसी परिवार का कोई सदस्य बीमार हो गया। ऐसी कठिन परिस्थिति में विनोबा की मां ने पड़ोसी की बहुत मदद की।

वह अपने घर का भोजन बनाने के बाद पड़ोसी के घर जाकर उसका खाना बनाती और बीमार व्या□ित की सेवा भी करती थी। एक दिन विनोबा ने अपनी मां से कहा, 'मां! आप कितनी मतलबी हैं कि अपने घर का खाना पहले तैयार करती हैं, फिर पड़ोसी के घर खाना बनाने जाती हैं।'

मां ने उ□ार दिया, 'तू समझता नहीं है। यदि पड़ोसी के लिए भोजन पहले बना दिया तो उनका भोजन ठंडा हो जाएगा। इसलिए मैं वहां खाना बाद में बनाती हूं ताकि वे लोग ताजा खाना खा सकें।' मां की इस बात से विनोबा को एक नई दृष्टि मिली। वह समझ गए कि परोपकार का वास्तविक अर्थ है खुद को भुलाकर दूसरों को सुख पहुंचाना। यह बात उन्होंने और लोगों को भी बताई और स्वयं भी

❀ परहित से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

तीन बातें

न्यायप्रिय राजा हरि सिंह बेहद बुद्धिमान था। वह प्रजा के हर सुख-दुख की चिंता अपने परिवार की तरह करता था। लेकिन कुछ दिनों से उसे स्वयं के कार्य से असंतुष्टि हो रही थी। उसने बहुत प्रयत्न किया कि वह अभिमान से दूर रहे, पर वह इस समस्या का हल निकालने में असमर्थ था।

एक दिन राजा जब राजगुरु प्रखरबुद्धि के पास गए तो राजगुरु राजा का चेहरा देखते ही उसके मन में हो रही इस परेशानी को समझ गए।

उन्होंने कहा, 'राजन् यदि तुम मेरी तीन बातों को हर समय याद रखोगे तो जिंदगी में कभी भी असफल नहीं हो सकते। प्रखरबुद्धि बोले, 'पहली बात, रात को मजबूत किले में रहना।' दूसरी बात, 'स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करना और तीसरी, सदा मुलायम बिस्तर पर सोना।'

गुरु की अजीब बातें सुनकर राजा बोला, 'गुरु जी, इन बातों को अपनाकर तो मेरे अंदर अभिमान और भी अधिक उत्पन्न होगा।' इस पर प्रखरबुद्धि मुस्करा कर बोले, 'तुम मेरी बातों का अर्थ नहीं समझे। मैं तु□हें समझाता हूं।'

पहली बात, 'सदा अपने गुरु के साथ रहकर चरित्रवान बने रहना। कभी बुरी आदत के आदी मत होना। दूसरी बात, 'कभी पेट भरकर मत खाना, जो भी मिले उसे प्रेमपूर्वक खाना। खूब स्वादिष्ट लगेगा। और तीसरी बात, 'कम से कम सोना। अधिक समय तक जागकर प्रजा की रक्षा करना। जब नींद आने लगे तो राजसी बिस्तर का ध्यान छोड़कर घास, पत्थर, मिट्टी जहां भी जगह मिले वहीं गहरी नींद सो जाना। ऐसे में तु□हें हर जगह लगेगा कि मुलायम बिस्तर पर हो। बेटा, यदि तुम राजा की जगह त्यागी बनकर अपनी प्रजा का □ायाल रखोगे तो कभी भी अभिमान, धन व राजपाट का मोह तु□हें नहीं छू पाएगा।'

❀ अहंकार बुद्धि को धीरे-धीरे नष्ट कर देता है। इससे हमें बचना चाहिए।

मातृभूमि की सेवा

बात उन दिनों की है जब भारत पर अंग्रेजों का शासन था। पढ़ाई में असाधारण योग्यता रखने वाले और अंग्रेजी, जर्मन, स्पेनिश, इतावली, फ्रेंच, लैटिन आदि अनेक भाषाओं में निपुण, महान स्वतंत्रता सेनानी अरविंद घोष कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से अपनी शिक्षा पूरी कर चुके थे। ब्रिटिश शासन में आईसीएस अफसरों के ऊपर प्रशासन चलाने की जवाबदेही होती थी। इन्हें हर तरह की सरकारी सुविधाएं और मान-स□मान मिलता था।

अरविंद घोष के पिता चाहते थे कि उनका मेधावी पुत्र आईसीएस अधिकारी बने। उस समय हर मेधावी छात्र से यही अपेक्षा की जाती थी। पर अरविंद अपने लिए कुछ और ही तय कर चुके थे। पिता के कहने पर वे उस की परीक्षा में बैठे। उन्हें हर विषय में अच्छे अंक मिले। अंत में घुड़सवारी की परीक्षा होनी थी, जिसे पास करना उनके लिए कठिन नहीं था। पर दो बार मौका मिलने पर भी वह यह परीक्षा देने नहीं गए।

उनके शुभचिंतकों ने सरकार से अनुरोध किया कि घुड़सवारी की मामूली-सी परीक्षा के आधार पर अरविंद को इस सेवा के लिए अयोग्य न माना जाए। सरकार यह अनुरोध मान भी गई थी, तभी उसे गुप्त सूत्रों से पता चला कि अरविंद ने भारत को आजाद कराने का संकल्प लिया है और इसके लिए उन्होंने एक संस्था भी बना ली है। मित्रों ने उन्हें बहुत समझाया कि अगर वह इस संस्था को छोड़ दें तो आईसीएस अधिकारी बन सकते हैं।

अरविंद ने जवाब दिया कि उन्होंने देश को अंग्रेजों के शासन से आजाद कराने का संकल्प लिया है। पीछे हटना देश के साथ धोखा होगा। देशवासियों का खून चूसने वाली इस सरकार में उन्हें बड़े से बड़ा पद भी स्वीकार नहीं है। सभी यह सुनकर दंग रह गए।

अध्यापक का आदर्श

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सूर्यसेन की नियु□त बंगाल के एक विद्यालय में हुई थी। वे बेहद स्वाभिमानी और आदर्शवादी थे। शिक्षक के रूप में उन्होंने छात्रों के दिल में एक जगह बना ली थी। उन दिनों विद्यालय में वार्षिक परीक्षाएं चल रही थीं। उन्हें परीक्षा का निरीक्षण करना था। जिस कमरे में उनकी ड्यूटी लगी थी, उसी कमरे में विद्यालय के अंग्रेज प्रधानाध्यापक का पुत्र भी परीक्षा दे रहा था। परीक्षा-कक्ष में घूमते हुए सूर्यसेन उसके पास पहुंचे। उस समय वह नकल कर रहा था। उन्होंने उसे तुरंत पकड़ लिया और परीक्षा देने से रोक दिया।

जब परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो वह फेल था। अब साथ के सभी शिक्षक घबरा गए। उन्हें लगा कहीं सूर्यसेन की नौकरी न चली जाए। एक दिन अचानक सूर्यसेन को प्रधानाध्यापक महोदय का बुलावा आ गया। सूर्यसेन के अलावा सभी शिक्षक सहम गए। पर प्रधानाध्यापक ने सूर्यसेन का स्वागत किया और स्नेहपूर्वक बोले, 'मुझे यह जानकर गर्व हुआ कि मेरे विद्यालय में आप जैसे कर्तव्यनिष्ठ और आदर्शवादी अध्यापक भी हैं, जिन्होंने मेरे पुत्र को भी दंड देने में संकोच नहीं किया। सच कहूं, यदि आपने उसे नकल करने के बाद भी पास कर दिया होता तो मैं आपको बर्खास्त कर देता।'

इस पर सूर्यसेन ने हंसकर कहा, 'और महोदय, यदि आप अब भी मुझे उसे पास करने पर मजबूर करते तो मैं त्यागपत्र दे देता। मैं तो अपना इस्तीफा जेब में रख कर आया हूं।' यह सुनकर प्रधानाध्यापक महोदय की दृष्टि में उनका स□मान दोगुना हो गया। शिक्षकों

बाज की उड़ान

एक बार की बात है कि एक बाज का अंडा मुर्गी के अण्डों के बीच आ गया। कुछ दिनों बाद उन अण्डों में से चूजे निकले, बाज का बच्चा भी उनमें से एक था। वो उन्हीं के बीच बड़ा होने लगा। वो वही करता जो बाकी चूजे करते। मिट्टी में इधर-उधर खेलता, दाना चुगता और दिनभर उन्हीं की तरह चूं-चूं करता। बाकी चूजों की तरह वो भी बस थोड़ा-सा ही ऊपर उड़ पाता और पंख फड़फड़ाते हुए नीचे आ जाता।

फिर एक दिन उसने एक बाज को खुले आकाश में उड़ते हुए देखा। बाज शान से बेधड़क उड़ रहा था। तब उसने बाकी चूजों से पूछा, 'इतनी ऊंचाई पर उड़ने वाला वो शानदार पक्षी कौन है?' तब चूजों ने कहा, 'अरे वो बाज है, पक्षियों का राजा। बहुत ही ताकतवर और विशाल है, लेकिन तुम उसकी तरह नहीं उड़ सकते □योंकि तुम तो एक चूजे हो।'

बाज के बच्चे ने इसे सच मान लिया और कभी वैसा बनने की कोशिश नहीं की। वो जिन्दगीभर चूजों की तरह रहा और एक दिन बिना अपनी असली ताकत पहचाने ही मर गया।

❀ **हमें दूसरों के बहकावे में नहीं आकर अपनी क्षमताओं का आंकलन कर उसका भरपूर उपयोग करना चाहिए।**

जिज्ञासा ने बनाया महान

लंदन की एक बस्ती में एक अनाथ बच्चा रहता था। वह अखबार बेचकर किसी तरह अपना गुजारा करता था। कुछ समय बाद उसे एक किताब की दुकान पर जिल्द चढ़ाने का काम मिल गया। उस बालक को पढ़ने का बहुत शौक था। वह पुस्तकों पर जिल्द चढ़ाते समय मह□वपूर्ण बातें और जानकारियां अ□सर पढ़ता रहता था। एक दिन जिल्द चढ़ाते समय उसकी नजर एक विद्युत संबंधी लेख पर पड़ी। उसने दुकान के मालिक से एक दिन के लिए वह पुस्तक मांग ली और रातभर में उस लेख के साथ ही पूरी पुस्तक भी पढ़ डाली। पुस्तक का उस पर गहरा असर पड़ा। अब उस बालक की जिज्ञासा प्रयोग करने में बढ़ती गई और धीरे-धीरे वह अध्ययन एवं परीक्षण के लिए विद्युत संबंधी छोटी-मोटी चीजें इधर-उधर से जुटाने लगा। बालक की इस बारे में रुचि देखकर एक ग्राहक उससे बहुत प्रभावित हुआ। वह खुद भी विज्ञान में गहरी दिलचस्पी रखता था।

एक दिन वह बालक को अपने साथ भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डेवी का भाषण सुनाने ले गया। बालक ने डेवी की बातें ध्यान से सुनीं और उन्हें नोट भी किया। इसके बाद बालक ने उनके भाषण की समीक्षा करते हुए अपने कुछ परामर्श लिखकर डेवी के पास भेज दिए।

डेवी को बालक की सलाह बहुत पसंद आई। उन्होंने उसे अपने यंत्र व्यवस्थित करने के लिए अपने पास रख लिया। बालक उनके साथ रहने लगा। वह उनके सहयोगी और नौकर दोनों की भूमिका निभाता रहा। वह दिनभर कामों में व्यस्त रहता, रात को अध्ययन करता। थकान होने पर भी उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती थी। वह भौतिकी के क्षेत्र में खासकर विद्युत के क्षेत्र में बहुत कुछ करना चाहता था।

आखिरकार अपनी मेहनत और संकल्प से उसने अपना सपना पूरा किया। वह एक महान वैज्ञानिक बन गया। आज दुनिया उस बालक को माइकल फैराडे के नाम से जानती है।

❀ **निरन्तर प्रयास से हम बड़े से बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।**

मन पर समस्या का बोझ

मनोविज्ञान का पीरियड था। उस दिन □लास में नई टीचर आई थीं। आपसी परिचय के बाद टीचर ने बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। बच्चे भी ध्यान लगाकर उनके द्वारा पढ़ाई जाने वाली बातों को सुन रहे थे। तभी पढ़ाते-पढ़ाते अचानक टीचर ने वहीं टेबल पर रखा पानी का गिलास उठाया। बच्चे सोचने लगे कि अब शायद वे भी उन्हें आधा गिलास भरा और आधा खाली वाला सबक ही पढ़ाएंगी। मगर इसके बजाय टीचर उनसे पूछा, 'बच्चो, □या तुम बता सकते हो कि मेरे हाथ में यह जो गिलास है, उसका वजन कितना होगा?'

बच्चे अपने-अपने आंकलन के हिसाब से जवाब देने लगे। किसी ने उसका वजन पचास ग्राम बताया, तो किसी ने सौ-सवा सौ ग्राम। बच्चों के जवाब सुनने के बाद टीचर बोलीं, 'खैर, इस गिलास का वजन जो भी हो। वह ज्यादा मायने नहीं रखता। मायने यह रखता है कि मैं इसे कितनी देर उठाए रख सकती हूं। अगर मैं इसे पांच-दस मिनट तक उठाकर रखूं तो मुझे इससे खास फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन यदि मैं इसे लगातार एक घंटे तक उठाकर रखूं तो मेरा हाथ दुखने लगेगा। इसी तरह यदि मैं इसे दिनभर इसी तरह उठाए रहूं तो यकीनन मेरा हाथ सुन्न पड़ जाएगा, जिससे मुझे काफी तकलीफ झेलना पड़ेगी।' यह सुनकर बच्चों ने भी टीचर की इस बात से सहमति जताई।

टीचर ने आगे कहा, 'बच्चो, इसी तरह समस्याएं भी होती हैं। अगर मैं किसी छोटी-सी समस्या के बारे में कुछ देर के लिए चिंता करूं, तो इससे मेरे मन पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा। पर यदि मैं उसी के बारे में लगातार सोचती रहूं, उसको लेकर परेशान रहूं, तो यकीनन मेरा तनाव बढ़ जाएगा। इस तरह छोटी-सी समस्या भी लगातार चिंतित रहने की वजह से मुझे बड़ी तकलीफ दे सकती है। इसलिये बेहतर यही है कि जैसी समस्या हो, उसी के मुताबिक उस पर विचार-मंथन कर उसका जल्द से जल्द निदान तलाशना उचित है। अपनी परेशानियों को मन में घर न करने दें, न ही उन्हें लेकर ज्यादा तनाव लें। इससे स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।' बच्चों ने टीचर द्वारा सिखाई गई यह बात गांठ बांध ली।

❀ किसी भी समस्या को ज्यादा देर अपने पर हावी न होनें दें, जितना जल्दी हो सके उसका समाधान ढूंढ लें।

दिखावे से दूर

गिरीशचंद्र घोष बांग्ला के प्रसिद्ध कवि-नाटककार थे। उनके एक धनी मित्र थे। वह अपनी रईसी अपने व्यवहार में भी दिखाते थे। जैसे ही वह कहीं जाते तो उनका नौकर उनके लिए चांदी के बर्तन साथ लेकर चलता था ताकि वह अपना खाना उसी में खाएं। घोष जी को यह बात अच्छी नहीं लगती थी, पर वह मित्र का दिल नहीं दुखाना चाहते थे। तब उन्होंने तय किया कि वह उसकी आदतों को सुधार कर रहेंगे।

एक दिन घोष जी ने अपने रईस दोस्त को खाने पर आमंत्रित किया। हमेशा की तरह उनके मित्र अपने नौकर के साथ पहुंचे। नौकर बर्तन लेकर आया था। लेकिन घोष जी अपने मित्र के आते ही उन्हें और लोगों के बीच ले गए। जब तक मित्र कुछ समझ पाते, तब तक उनके सामने प□ाल में खाना परोस दिया। बाकी लोगों के सामने भी प□ाल में खाना रखा था। तब उनके रईस मित्र संकोच में पड़ गए।

उन्होंने नौकर को आवाज देना चाहा, लेकिन तब तक सब लोग खाने लगे और उनसे भी खाने का अनुरोध करने लगे। मित्र को बेचारगी में उनके साथ प□ाल में खाना पड़ा। खाने के बाद जैसे ही वे उठे, तो घोष जी उनके बर्तनों में व्यंजन लेकर उनके सामने हाजिर हुए।

उन्होंने हंसते हुए मित्र से कहा, 'क्षमा करें, थोड़ी गलतफहमी हो गई। जब तु□हारे नौकर को घर की महिलाओं ने बर्तन लेकर आते देखा तो उन्हें लगा कि शायद तुम अपने बच्चों के लिए खाना ले जाना चाहते हो। उन्होंने इसमें खाना दे दिया है।' मित्र लज्जित होकर चले गए। उन्हें गलती का अहसास हो गया। उन्होंने प्रदर्शन करना छोड़ दिया।

❀ **दिखावे की दुनिया से दूर और वास्तविकता के धरातल पर रहें।**

लालच में गंवाई जान

किसी गांव में एक गड़रिया रहता था। उसके पास बहुत सारी भेड़ें थीं। जिन्हें चराने के लिए वह रोज जंगल में ले जाया करता था। चूंकि वहां जंगली जानवरों का भय रहता था। लिहाजा गड़रिए ने भेड़ों की सुरक्षा के लिए अपने घर में दो कु□ा भी पाल रखे थे।

कु□ा काफी खूंखार थे और किसी भी जंगली जीव को भेड़ों के नजदीक फटकने भी नहीं देते। वहां एक भेड़िया भी रहता था। भेड़िया जब भी इन भेड़ों को जंगल में घास चरते हुए देखता तो उसकी जीभ लपलपाने लगती। वह हमेशा ताक में रहता कि कैसे भी कोई भेड़ उसके हाथ लग जाए, मगर उन कु□ों के आगे उसकी एक भी नहीं चलती। एक दिन गड़रिए ने एक भेड़ को मारकर उसका मांस पकाया और उसकी खाल को बाहर सूखने के लिए डाल दिया।

भेड़िए की नजर जब भेड़ की उस खाल पर पड़ी, तो वह सोचने लगा कि अगर यह खाल मुझे मिल जाए तो इसे पहनकर मैं भेड़ों के बीच में आराम से जा सकता हूं और मौका मिलने पर किसी भेड़ का शिकार भी कर सकता हूं। यह सोचने के बाद वह भेड़ों के जंगल जाने का इंतजार करने लगा।

थोड़ी ही देर में गड़रिया आया और भेड़ों को लेकर जंगल की ओर चला गया। इसके बाद भेड़िए ने मौका पाकर बाहर सूख रही उस भेड़ की खाल को उठाया और उसे ओढ़कर वहीं पर एक कोने में छिपते हुए भेड़ों के वापस आने का इंतजार करने लगा। शाम होने पर जब भेड़ें वापस आईं तो भेड़िया भी चुपचाप उनके झुंड में शामिल हो गया। भेड़ों को बाड़े में पहुंचाने के बाद गड़रिया अपने घर के भीतर चला गया।

उधर झुंड में शामिल भेड़ की खाल में भेड़िया अंधेरा घिरने का इंतजार करने लगा, ताकि किसी भेड़ को दबोचकर जंगल की ओर भाग सके। पर कुछ ही देर बाद गड़रिया वापस आ गया। दरअसल उसके घर में कुछ मेहमान आए थे और वह उन्हें भेड़ के मांस की दावत देना चाहता था। उसने एक मोटी-सी भेड़ देखी तो उसकी गर्दन दबोच दी। यह भेड़ की खाल में वही भेड़िया था। इस तरह भेड़िए ने भेड़ का मांस खाने की लालच में खुद अपनी जान

❀ **लालच की वृत्ति से दूर रहें। यह हमेशा दुखदायी साबित होता है।**

अधिकांश तालाबंद दरवाजे दिमाग में ही होते हैं

कई बार हम किसी खास कार्य को किये जाने के पहले ही सोच लेते हैं कि यह काम हमसे नहीं होगा। परीक्षाओं से पहले ऐसी सोच बना लेना कि हम तो अव्वल आ ही नहीं सकते, ऐसी ही सोच है। ऐसी परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए इस कहानी को पढ़ें।

हौडिनी, जो एक कुशल जादूगर था, ताला खोलने में भी माहिर था। वह अ□सर शेखी बघारता था कि वह विश्व की किसी भी जेल की कोठरी से एक घंटे से भी कम समय में भाग सकता है, बशर्ते कि उसे जेल की कोठरी में अपने कपड़े पहने हुए जाने दिया जाये।

ब्रिटिश आइल्स के एक छोटे से कस्बे में एक नई जेल का निर्माण हुआ था। उन्होंने हौडिनी को चुनौती दी कि हमें यह कर के दिखाओ। हौडिनी को प्रचार और धन से प्यार था, इसलिए उसने चुनौती स्वीकार कर ली। जब तक कि वह वहां पहुंचता, लोग बहुत उत्साहित हो चुके थे। वह गौरवपूर्ण तरीके से कस्बे में आया और जेल की कोठरी के अंदर चला गया।

जब दरवाजा बंद किया जा रहा था, तो उस से विश्वास टपक रहा था। हौडिनी ने अपना कोट उतारा और काम करना शुरू कर दिया। वह अपनी बेल्ट में क इंच का लचीला, स□त और मजबूत स्टील का टुकड़ा छिपाये रखता था, जिसे वह ताला खोलने के लिए प्रयोग में लाता था। तीस मिनट के बाद उसके विश्वास के हाव-भाव गायब हो गये। एक घंटे बाद वह पसीने से तरबतर हो गया। दो घंटे बाद जब दरवाजा खोला गया, तो हौडिनी उससे टिका लगभग ढेर हुआ पड़ा था।

आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह दरवाजा कभी बंद ही नहीं किया गया था, सिवाय उसके दिमाग में। जिसने मान लिया था कि वह इतनी मजबूती से बंद किया गया था जैसे हजारों ताले बनानेवालों ने अपने सर्वो□ाम ताले उस पर लगा दिये हो। एक हल्का-सा ध□का लगा कर हौडिनी उस दरवाजे को आसानी से खोल सकता था।

सीख सुहानी ❀ अपने अधिकांश तालाबंद दरवाजे आपके दिमाग में होते हैं। अगर आपने यह सोच लिया कि यह काम करना कठिन है, तो सचमुच वह काम कठिन हो जायेगा।

❀ जीवन में लक्ष्य जरूर तय करें। जब आप लक्ष्य तय करते हैं, तो पहला बड़ा दरवाजा खोल देते हैं और यही पहला कदम आपको सफलता दिलाता है।

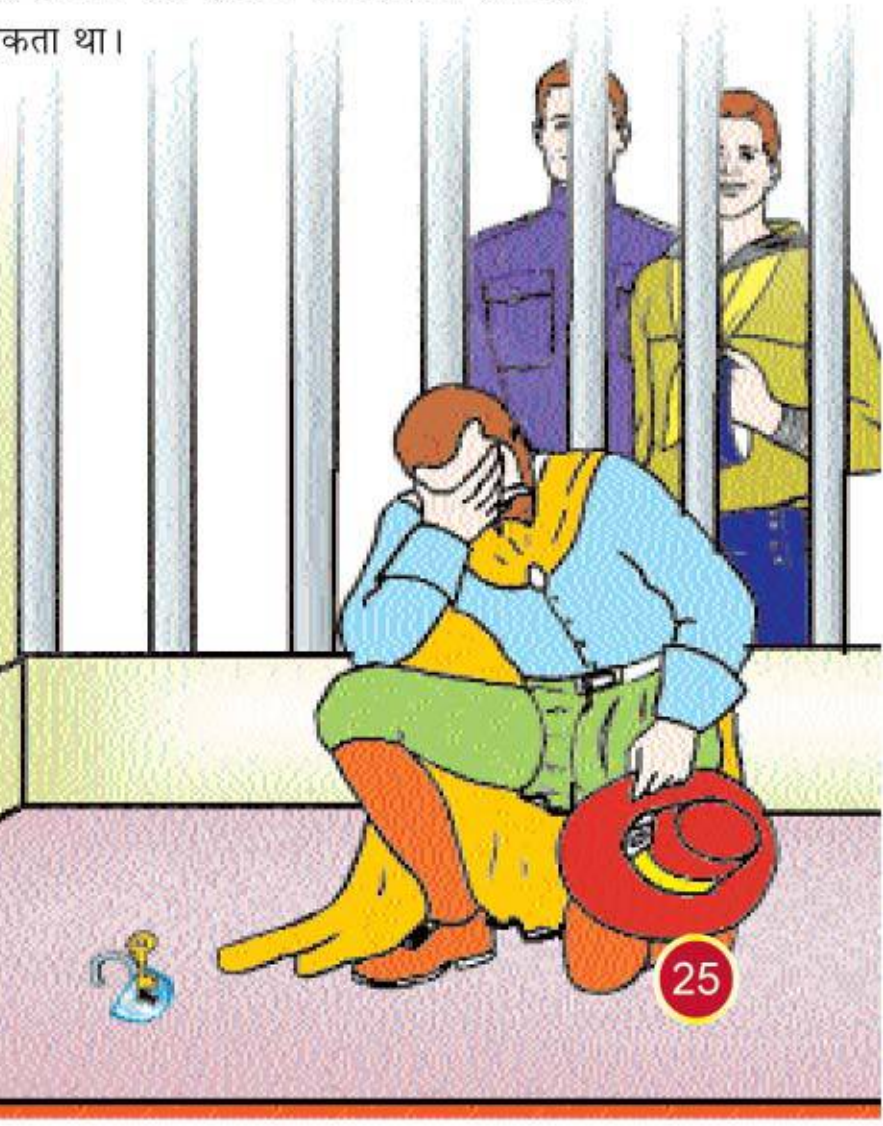

वह महान इंजीनियर

तब देश में अंग्रेजों का शासन था। एक ट्रेन यात्रियों से खचाखच भरी हुई तेज गति से दौड़ी जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। पर एक डि□बे में सांवले रंग का धोती-कुर्ता पहने एक भारतीय यात्री गुमसुम बैठा था। सभी अंग्रेज यात्री उसे बेवकूफ समझ कर उस पर व्यंग्य कर रहे थे। कुछ देर बाद अचानक उस व्या□ित ने उठ कर रेल की जंजीर खींच दी। गाड़ी की र□तार धीमी पड़ गई। उस व्या□ित को अन्य यात्री बुरा-भला कहने लगे।

जब रेल रुकी तो गार्ड अंदर आया और उसने पूछा कि जंजीर किसने और □यों खींची है? इस पर वह व्या□ित बोला, 'जंजीर मैंने खींची है। मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि यहां से लगभग एक फर्लांग दूर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।' गार्ड हैरानी से उस व्या□ित को देखते हुए बोला, 'आपको कैसे पता लगा?' वह व्या□ित बोला, 'दरअसल गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आ गया था। इससे प्रतिध्वनित होने वाली आवाज से मुझे खतरे का आभास हो गया।'

गार्ड उस व्या□ित के साथ कुछ अन्य यात्रियों को लेकर एक फर्लांग से आगे पहुंचा और यह देखकर गार्ड के साथ अन्य लोग भी दंग रह गए कि वास्तव में एक जगह रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए थे और नट-बोल्ट अलग पड़े थे। अब सभी लोग उस व्या□ित की सराहना करने लगे। गार्ड ने उससे पूछा, 'आप कौन हैं? आपका □या नाम है?' वह व्या□ित सहज भाव से बोला, 'मैं एक इंजीनियर हूं और मेरा नाम डॉ. एम. विश्वेश्वरैया है।' नाम सुनते ही सब सन्न रह गए। डॉ. एम. विश्वेश्वरैया का नाम

सोने ने दी लोहे को सीख

किसी नगर में एक सुनार की दुकान थी। वह आभूषणों का निर्माण करने के साथ-साथ उन्हें बेचने का काम भी करता था। उसका कारोबार बहुत अच्छा चलता था और उसकी दुकान में कई आदमी काम करते थे। दुकान पर अ□सर ग्राहकों की भीड़ लगी रहती। यह देख एक दिन सुनार ने सोचा कि ग्राहकों को बैठने के लिए बड़ी जगह देना चाहिए।

यह सोचकर सुनार ने आभूषण निर्मित करने वाले एक कारीगर को दुकान के बाहर थोड़ी-सी जगह में बैठा दिया। अब वह दुकान के बाहर एक कोने में बैठते हुए वहीं सोने को गलाता और उसे हथौड़े से कूट-पीटकर सुंदर गहने बनाता।

उस सुनार के बगल में ही एक लुहार की दुकान थी। लुहार अपनी दुकान में लोहे को भट्टी में गरम करने के बाद उसे हथौड़े से जोर-जोर से पीटते हुए लोहे के औजार व अन्य सामग्रियां बनाया करता था।

एक दिन जब सुनार की दुकान पर बैठा कारीगर स्वर्ण-आभूषण बनाने के लिए सोने को गला रहा था तो उसमें से सोने का एक कण उछलकर छिटकते हुए पास की दुकान में गरम लोहे के कण के साथ जा मिला। वहां पहुंचकर सोने के कण ने देखा कि लोहे के कण बहुत उदास हैं। यह देख सोने के कण ने उनकी उदासी का कारण पूछा। इस पर एक लोहे का कण बोला, 'भाई, हमारी उदासी का कारण यह है कि हमें रोज आग में तपना और पिटना पड़ता है। यह सब बर्दाश्त नहीं होता।'

यह सुनकर सोने के कण ने कहा, 'यह सब तो हम स्वर्ण-कणों साथ भी होता है। पर हम तो उदास नहीं होते।' लोहे के कण ने जबाब दिया, 'तु□हारी बात अलग है। तु□हें तो कोई और पीटता है। हमें तो हमारे ही अपने सगे जोर-जोर से पीटते रहते हैं। तुम नहीं समझ सकते कि अपनों से पिटने का दर्द □या होता है।'

इस पर सोने का कण बोला, 'तुम इस पिटाई को अन्यथा □यों लेते हो? अगर हमें पीटा जाता है तो सिर्फ हमारा रूप संवारने और सुंदर आकार देने के लिए, ताकि हम लोगों के काम आ सकें। तु□हें तो और भी खुश होना चाहिए, □योंकि तु□हारे अपने ही तु□हारा भविष्य संवार रहे हैं। भविष्य संवारने और दूसरों के काम आने के लिए अगर हमें थोड़ी-बहुत तकलीफ भी उठानी पड़े तो खुशी-खुशी

❀ विपत्तियां हमें और अधिक मजबूत बनाती हैं।

गुरु तो गुरु है

एक बार एक राजा को साधना करने की सूझी। उसने अपने मंत्री को बुलाया और पूछा, 'मैं अमुक मंत्र की साधना करना चाहता हूं। आप बताएं मैं □या करूं?' मंत्री ने जवाब दिया, 'महाराज, आप अपने गुरु के पास जाएं और उनके बताए अनुसार ही कार्य करें।' पर राजा जिद्दी था और उसने किसी व्यि□त को मंत्र का जाप करते हुए सुना और उसे याद कर अपने हिसाब से जाप करने लगा।

जब जाप करते-करते काफी अरसा हो गया तो राजा ने एक रोज अपने मंत्री से पुनः पूछा, 'मुझे इस मंत्र का जाप करते हुए महीनों हो गए, पर कोई लाभ नहीं हुआ?' मंत्री चुपचाप राजा की बात सुनता रहा और फिर बोला, 'महाराज, मैंने आपसे कहा था कि मंत्र को विधिपूर्वक गुरु से प्राप्त करने पर ही वह लाभ देता है।' किंतु राजा उसकी बात से सहमत नहीं हुआ और तरह-तरह के तर्क देने लगा। मंत्री कुछ देर राजा की बातें सुनता रहा और तभी अचानक उसने पास खड़े एक सैनिक को आदेश दिया, 'सैनिक, इन्हें तुरंत गिर□तार कर लो।' मंत्री की यह बात सुनकर राजा और सैनिक समेत सभी सभासद आश्चर्य में पड़ गए। किसी को मंत्री की बात का मंतव्य समझ में नहीं आया। उधर मंत्री ने अपना आदेश देना जारी रखा।

आखिरकार राजा को क्रोध आ गया और उसने सैनिकों से कहा, 'मंत्री को तुरंत गिर□तार कर लिया जाए।' राजा के हु□म की तुरंत तामील हुई और सैनिकों ने मंत्री को पकड़ लिया। यह देख मंत्री जोर-जोर से हंसने लगा। राजा ने हंसने का कारण पूछा, तो मंत्री बोला, 'महाराज, मैं आपको यही तो समझाने की कोशिश कर रहा हूं। जब मैंने सैनिकों से आपको गिर□तार करने को कहा, तो उन्होंने मेरी नहीं सुनी। लेकिन जब आपने मुझे गिर□तार करने का आदेश दिया, तो इस पर तुरंत अमल किया गया। यह व्यि□त की उपलि□ध का मामला है। मैंने जो बात कही थी, वही आपने भी कही, लेकिन मेरे कहने का उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। आपके कहते ही उसका पालन हो गया। इसी तरह गुरु द्वारा दिए गए मंत्र में उनकी अनुभूति और अधिकार की शि□त होती है। गुरु वह व्यि□त होता है, जो किसी ज्ञान का स्वयं प्रयोग कर उसे शिष्य को सौंपता है। यही कारण है कि गुरु का

विश्वास की शक्ति

इंग्लैण्ड के एक पादरी का विश्वास की आध्यात्मिक शक्ति में अटल भरोसा था। वे अक्सर कहा करते कि विश्वास के उचित प्रयोग के जरिए बुरे आदमी में भी सद्गुणों, सत्प्रवृत्तियों और शुभ संकल्पों को विकसित किया जा सकता है। उनका द्वार सदैव कष्टपीड़ितों व दीन-हीन गरीबों के लिए खुला रहता था। जो कोई भी उनके घर में एक बार आतिथ्य पा ले, वह उनके प्रेमभाव, सेवा-सहयोग से प्रभावित हुए बगैर नहीं रहता।

एक बार जेल से भागा एक चोर रात को शरण लेने के लिए नगर में इधर-उधर घूम रहा था। उसे पादरी का द्वार खुला हुआ दिखा, तो वह उसी में प्रवेश कर गया। उसे देख पादरी ने कहा, 'इस घर में तुम्हारा स्वागत है भाई। मगर यह बताओ कि तुम कौन हो और यहां क्या करने आए हो?' इस पर उस चोर ने झूठ बोलते हुए कहा, 'फादर, मैं एक मुसाफिर हूं। रात में रास्ता भटक गया और यहां आ पहुंचा। क्या मुझे यहां सिर छुपाने की जगह मिल सकती है, सुबह होते ही मैं चला जाऊंगा?'

पादरी ने कहा, 'हां, क्यों नहीं! तुम आराम से यहां रह सकते हो। तुम थके हुए लगते हो। ऐसा करो तुम हाथ-मुंह धो लो, तब तक मैं तुम्हारे खाने और सोने का प्रबंध करता हूं।' चोर उनका आभार व्यक्त करते हुए गुसलखाने की ओर बढ़ गया।

पादरी ने उसे बढ़िया भोजन कराया और सोने के लिए चारपाई की व्यवस्था की। रात में जब सब गहरी नींद में थे, तो चोर के मन में चोरी की इच्छा जागृत हुई। उसने पादरी के घर से चांदी के दो दीपदान चुराए और चुपचाप वहां से निकल गया। मगर वह ज्यादा दूर तक नहीं जा पाया।

पुलिस उसकी खोजबीन में लगी थी और एक जगह वह पुलिस के हत्थे चढ़ ही गया। उस चोर को पादरी के सम्मुख लाया गया। चोर के बारे में पूछने पर पादरी ने पुलिस से कहा, 'ये मेरे अतिथि थे। मैंने ये दीपदान इन्हें उपहार के रूप में दिए हैं। आप इन्हें छोड़ दीजिए।' यह सुनते ही चोर के ज्ञानचक्षु खुल गए। पादरी की उदारता देख उसे अपने किये पर पश्चाताप होने लगा। पुलिस के जाने के बाद उसने पादरी से क्षमा मांगी और प्रण किया कि वह चोरी और छल-कपट का मार्ग छोड़ नेकी के रास्ते पर चलेगा। यह सुनकर पादरी ने उसे गले से लगा लिया।

खिलौनों से सिखाया सबक

गुरुकुल में शिष्यों की शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी और आज उनका आखिरी दिन था। गुरुकुल की पर□परा के अनुसार गुरुजी अपने शिष्यों को आखिरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे। जब सारे शिष्य गुरुकुल के मु□य कक्ष में एकत्रित हो गए तो गुरुजी ने अपना उपदेश प्रारंभ किया।

उनके हाथ में लकड़ी के कुछ खिलौने थे, जिन्हें उन्होंने शिष्यों को दिखाते हुए कहा, 'आप सभी को आज एक काम करना है। मेरे हाथ में ये जो खिलौने हैं, आपको इनमें अंतर खोजना है।' गुरुजी की आज्ञा पाकर सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे।

वे तीनों लकड़ी से बने खिलौने बिल्कुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे, जिनमें अंतर खोजना बहुत मुश्किल था। तभी एक शिष्य एक गुड्डे को परखते हुए बोला, 'अरे, ये देखो! इस गुड्डे के एक कान में छेद है।' यह संकेत काफी था। जल्द ही शिष्यों ने उन गुड्डों में अंतर खोज लिया।

इसके बाद वे गुरुजी से बोले, 'गुरुदेव, इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है कि एक के दोनों कान में छेद हैं, दूसरे के एक कान और मुंह में छेद है और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है।' उनका जवाब सुनकर गुरुजी बोले, 'बिल्कुल सही। तुम लोगों ने ठीक पहचाना।' इसके बाद उन्होंने शिष्यों को धातु का एक पतला तार देते हुए उसे गुड्डों के कान के छेद में डालने के लिए कहा। शिष्यों ने वैसा ही किया।

तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया। दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा, पर कहीं से निकल नहीं पाया। तब गुरुजी ने गुड्डे अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'शिष्यो, इन तीन गुड्डों की तरह आपके जीवन में भी तीन तरह के लोग आएंगे। पहला गुड्डा ऐसे व्य□तियों को दर्शाता है, जो आपकी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देंगे। आप ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या साझा ना करें।

दूसरा गुड्डा ऐसे लोगों को दर्शाता है, जो आपकी बात सुनकर उसे दूसरों के सामने जाकर उगल देंगे। इनसे बचें। ऐसे लोगों को कभी अपनी अहम बातें न बताएं। तीसरा गुड्डा ऐसे लोगों का प्रतीक है, जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं और उनसे किसी भी तरह का विचार-विमर्श कर सकते हैं, सलाह ले सकते हैं। ऐसे

सिगरेट का अर्थ

उन दिनों डॉ. सैमुअल जॉनसन अंग्रेजी की डि□शनरी बनाने में जुटे थे। वे दिन-रात यही सोचते रहते कि श□दों को किस ढंग से रखा जाए। कैसे श□दकोश को रोचक बनाया जाए। एक दिन उन्हें □ायाल आया कि □यों न श□दों के अर्थ की बजाय उनकी परिभाषा लिखी जाए। इससे लोग उस श□द को आसानी से समझ लेंगे और वे श□द हमेशा के लिए लोगों के मस्तिष्क में अपनी जगह बना लेंगे। हालांकि यह काम इतना आसान नहीं था, जितना लग रहा था।

कई श□दों की परिभाषा बनाने के लिए उन्हें कठोर परिश्रम करना पड़ा, गहरी छानबीन करनी पड़ी। कहीं अर्थ का अनर्थ न हो जाए, इस बात का भी डर लगातार बना रहता था। वे इस संबंध में कई विद्वानों से विचार-विमर्श भी करते रहते थे। कई बार तो श□दों को लेकर तीखी बहस हो जाया करती थी। लेकिन डॉ. जॉनसन इन सब से परेशान नहीं होते थे। उन्हें इसमें सुख का अनुभव हो रहा था। एक दिन उनके सामने एक श□द आया- सिगरेट। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि सिगरेट की परिभाषा □या लिखें। केवल उसके आकार-प्रकार की चर्चा का कोई मतलब नहीं था। वह कई बार कुछ सोचते, लिखते और फिर फाड़ देते।

उन्होंने सिगरेट को बारीकी से देखा। उससे होने वाली हानियों के बारे में पढ़ा और अंततः उन्होंने सिगरेट की परिभाषा कुछ इस प्रकार लिखी, 'सिगरेट कागज में लिपटा हुआ तंबाकू है, जिसके एक तरफ धुआं होता है और दूसरी तरफ बेवकूफ।'

इसके बाद उन्होंने सिगरेट की परिभाषा को अपने श□दकोश में स्थान दे दिया। इसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। इस परिभाषा को पढ़ते समय जिस भी व्य□ित के मुंह में सिगरेट होती थी, वह उसे तुरंत फेंक देता था। फिर आसपास देखता था कि कोई उसे सिगरेट पीते हुए देख तो नहीं रहा। इस प्रकार सिगरेट की परिभाषा ने

लिंकन की सिफारिश

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के पास रोज अनेक पत्र आते थे। अपने देश ही नहीं, दूसरे देशों से भी उन्हें लोग चिट्ठी लिखते थे। दिलचस्प बात तो यह थी कि समाज के हर वर्ग के लोग उन्हें पत्र भेजते थे। लिंकन के मन में उन पत्रों के लिए बेहद स□मान था। वह चाहते थे कि हरेक पत्र को खुद पढ़ें और उनका जवाब जरूर दें। इसके लिए वह खास तौर से समय निकालते थे। तमाम व्यस्तताओं के बीच वह पत्रों को जवाब देने का काम करते रहते।

कई बार कुछेक अधिकारियों और सहयोगियों ने साहस करके उनसे कहा भी कि वे इस पर अपना समय नष्ट न करें और दूसरे कार्यों को मह□व दें। पर उन्होंने साफ कह दिया कि जनता से संवाद बनाए रखना उनके लिए बेहद जरूरी है। राष्ट्रपति के रूप में यह उनका सबसे मह□वपूर्ण कर्तव्य है। इसी के जरिए वे जान सकते हैं कि जनता के मन में □या चल रहा है। फिर जनता को भी यह जानने का अधिकार है कि उनका राष्ट्रपति उन्हें लेकर □या सोचता है।

उनके पास क्षमादान के लिए भी पत्र आते थे। जिनमें विशेष तौर से फांसी की सजा पाए कैदी क्षमा का अनुरोध करते थे। ऐसे कई पत्रों के साथ किसी सीनेटर या अन्य मह□वपूर्ण व्य□ित की सिफारिशी चिट्ठी भी लगी होती थी।

एक दिन एक सैनिक का ऐसा ही पत्र लिंकन को मिला, लेकिन उसके साथ कोई सिफारिश नहीं थी। सैनिक ने विस्तार से अपने जीवन के बारे में और उस वारदात के बारे में लिखा था, जिसमें उसे सजा मिली थी। लिंकन ने पत्र की भाषा से ही यह अनुमान लगा लिया कि वह निर्दोष है, उसके साथ अन्याय हुआ है। उन्होंने अपने सचिव से पूछा, '□या इस सैनिक की किसी बड़े आदमी से जान-पहचान नहीं है, जो इसकी सिफारिश कर सके?' सचिव ने कहा, 'शायद ऐसा ही हो।' लिंकन ने कहा, 'फिर वह मुझे अपना दोस्त समझे। उसकी सिफारिश मैं करता हूं।'

शिष्टता से सम्मान

रेल के डि□बे में भारी भीड़ थी। जब एक स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी तो उस डि□बे में कुछ और यात्री चढ़े। उन यात्रियों में एक ऐसा व्या□ित भी था। जिसने बेहतरीन सूट-बूट पहन रखा था। रेल के उसी डि□बे में एक बुजुर्ग सज्जन बैठे हुए थे। उन्होंने बाजू की सीट पर अपना हैट रख रखा था। यह शायद उन्होंने अपने किसी मित्र की सीट सुरक्षित रखने के लिए रख दिया था, जो नीचे बोतल में पानी भरने गए थे।

अमीर दिखने वाले उस आगंतुक ने न सिर्फ उस सीट पर क□जा कर लिया, बल्कि ध□म से उस हैट पर ही बैठ गया और उसे कुचल डाला। इतना ही नहीं, इस पर माफी मांगने के बजाय वह बुजुर्ग सज्जन से ही झगड़ने लगा। इस प्रकार सीट पर हैट रखने की असावधानी के लिए अभद्रता से कटु श□दों का प्रयोग करने लगा।

उसके इस तरह झगड़ा करने पर डि□बे में बैठे सभी मुसाफिरों को आश्चर्य हो रहा था। मन ही मन सब उसके इस रुखे व्यवहार से खफा थे। लेकिन कोई कुछ बोला नहीं। वह बुजुर्ग सज्जन भी शांत रहे। उन्होंने चुपचाप हैट उठाकर अपने पास रख लिया। अगले स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी तो वह अशिष्ट व्या□ित गाड़ी से उतरा और अपना सामान लेकर आगे बढ़ गया।

तभी उन बुजुर्ग सज्जन ने खिड़की से मुंह बाहर निकाला और एक कुली को पुकारते हुए कहा, 'देखना भाई! उस यात्री तक भागकर जाओ और उससे कहो कि उसने डि□बे में अपनी कुछ चीजें छोड़ दी हैं।' थोड़ी देर बाद वह आदमी भागता हुआ वहां आया और दरवाजे में से मुंह डालकर सकपकाया-सा बोला, 'मैं यहां □या छोड़ गया था?'

'अपना अशिष्ट प्रभाव,' बुजुर्ग सज्जन ने शांतिपूर्वक कहा। यह सुनकर वह व्या□ित खिसियाते हुए वहां से चला गया। वास्तव में व्यवहार से ही मनुष्य का अच्छा या बुरा होना जाना जाता है।

❀ आदमी की पहचान वेशभूषा से नहीं, शिष्टता से होती है।

संघर्ष से निखरता जीवन

किसी गांव में एक धर्मपरायण किसान रहता था। उसकी फसल अ□सर खराब हो जाया करती थी। कभी बाढ़ आ जाए, तो कभी सूखा पड़ जाए। कभी सूरज की तेज तपिश फसल को झुलसा दे, तो कभी ओले गिरने की वजह से फसल खराब हो जाए।

किसान इन सबसे परेशान होकर एक दिन मंदिर पहुंचा और परमात्मा की मूरत के सामने खड़ा होकर कहने लगा, 'देखिए प्रभु, आप परमात्मा हैं। लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं। एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिए। जैसा मैं चाहूं, वैसा मौसम हो। फिर देखना, मैं अन्न के भंडार भर दूंगा।' तभी आकाशवाणी हुई, 'ठीक है वत्स! जैसा तुम चाहोगे, वैसा ही मौसम रहेगा।'

किसान खुश होते हुए घर वापस आ गया। उसने खेत में गेहूं की फसल बोई। जब वह चाहता, तब धूप खिल जाती और फसल को पानी देने के व□त बरसात भी हो जाती। तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी-तूफान तो उसने आने ही नहीं दिये। समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, □योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। आखिरकार फसल काटने का समय भी आ गया। किसान बेहद प्रसन्न भाव से फसल काटने खेत पर पहुंचा। लेकिन जैसे ही उसने गेहूं की बालियां हाथ में लीं, उसका दिल ध□क रह गया।

गेहूं की एक भी बाली के अंदर बीज नहीं था। सारी बालियां अंदर से खाली थीं। किसान दुखी होकर परमात्मा से कहने लगा, 'प्रभु! ये □या हुआ?' तब आकाशवाणी हुई, 'ये तो होना ही था वत्स! तुमने पौधों को संघर्ष का जरा भी मौका नहीं दिया। न तेज धूप में उनको तपने दिया, न आंधी-ओलों से जूझने दिया। बगैर चुनौतियों के सीधे-सीधे बढ़ते हुए ये पौधे इसीलिए अंदर से खोखले रह गए।'

जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है, ओले गिरते हैं, तब पौधा इन सबसे जूझते हुए अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है। यही संघर्ष उसे शि□त देता है, उसकी जीवटता को उभारता है। यह सुनकर किसान को अपनी गलती का एहसास हो

❀ हमें यदि जिंदगी में प्रखर-प्रतिभाशाली बनना है, तो संघर्ष व चुनौतियों से कभी घबराना नहीं चाहिए।

नीम का टूटा गुरूर

एक वन में आम का वृक्ष था। उसके करीब ही एक नीम का पेड़ भी लगा था, जो बहुत घना एवं विशाल था। नीम के पेड़ को स्वयं पर बड़ा गुरूर था। वह अपने पड़ोसी आम से सीधे मुंह बात तक नहीं करता था।

एक बार रानी मधुम□खी छ□ा बनाने के लिए किसी घने पेड़ की तलाश में उपवन में आई। नीम के पेड़ को देखकर वह बोली, 'आपकी शाखाएं तो बहुत बड़ी-बड़ी हैं। □या मैं आपकी किसी शाखा पर अपने शहद का छ□ा बना सकती हूं?' नीम का पेड़ उस पर बिगड़ते हुए बोला, 'बिल्कुल नहीं! जाओ जाकर कहीं और अपना छ□ा बनाओ।'

इस पर उन दोनों की बातें सुन रहे आम के पेड़ ने कहा, 'नीम भाई, बना लेने दो न इसे छ□ा! ये तु□हारे पेड़ पर सुरक्षित रह सकेंगी।' नीम का पेड़ आम पर गुस्सा करते हुए बोला, 'तुम बीच में □यों बोलते हो? अगर तु□हें इतनी ही तकलीफ हो रही है तो अपनी किसी शाखा पर इसका छ□ा बनवा लो।' आम का पेड़ इसके लिए मान गया। इस पर रानी मधुम□खी ने उसका आभार व्य□त करते हुए उसकी एक डाल पर अपना छ□ा बना लिया।

कुछ दिनों बाद वहां दो-चार लोग आए और आपस में वार्तालाप करने लगे। उनमें से एक बोला, 'इस आम के पेड़ को काटते हैं।' तभी एक व्य□ित की नजर मधुम□खी के छ□ा पर पड़ी। इसे देखकर वह बोला, 'यदि हमने इस पेड़ को काटा तो ये मधुम□खियां हमें नहीं छोड़ेंगी। हम ऐसा करते हैं कि इस नीम के पेड़ को काटते हैं। इससे हमको कोई खतरा भी नहीं है और लकड़ियां भी हमें अधिक मात्रा में मिल जाएंगी।'

उनकी बातें सुनकर नीम का पेड़ डर गया। दूसरे दिन वे लोग आए और पेड़ काटने लगे। नीम जोर-जोर से बचाने की गुहार लगाने लगा। तब मधुम□खियों ने उन लोगों पर हमला कर उन्हें वहां से खदेड़ दिया। जब नीम के पेड़ ने मधुम□खियों का धन्यवाद करना चाहा तो मधुम□खियों ने कहा, 'धन्यवाद हमें नहीं, आम भाई को दो। यदि ये हमसे नहीं कहते तो हम आपको नहीं बचाते।'

नीम के पेड़ का गुरूर टूट चुका था। उसने आम के वृक्ष से अतीत में किये गए अपने बर्ताव के लिए माफी मांगी। आम के पेड़ ने बड़प्पन दिखाते हुए उसे माफ कर दिया। कभी-कभी बड़े होने का एहसास हमें घमंडी और क्रूर बना देता है, जिससे हम अपने सच्चे साथियों से दूर हो जाते हैं। हमें इस प्रवृ□ा से बचना चाहिए।

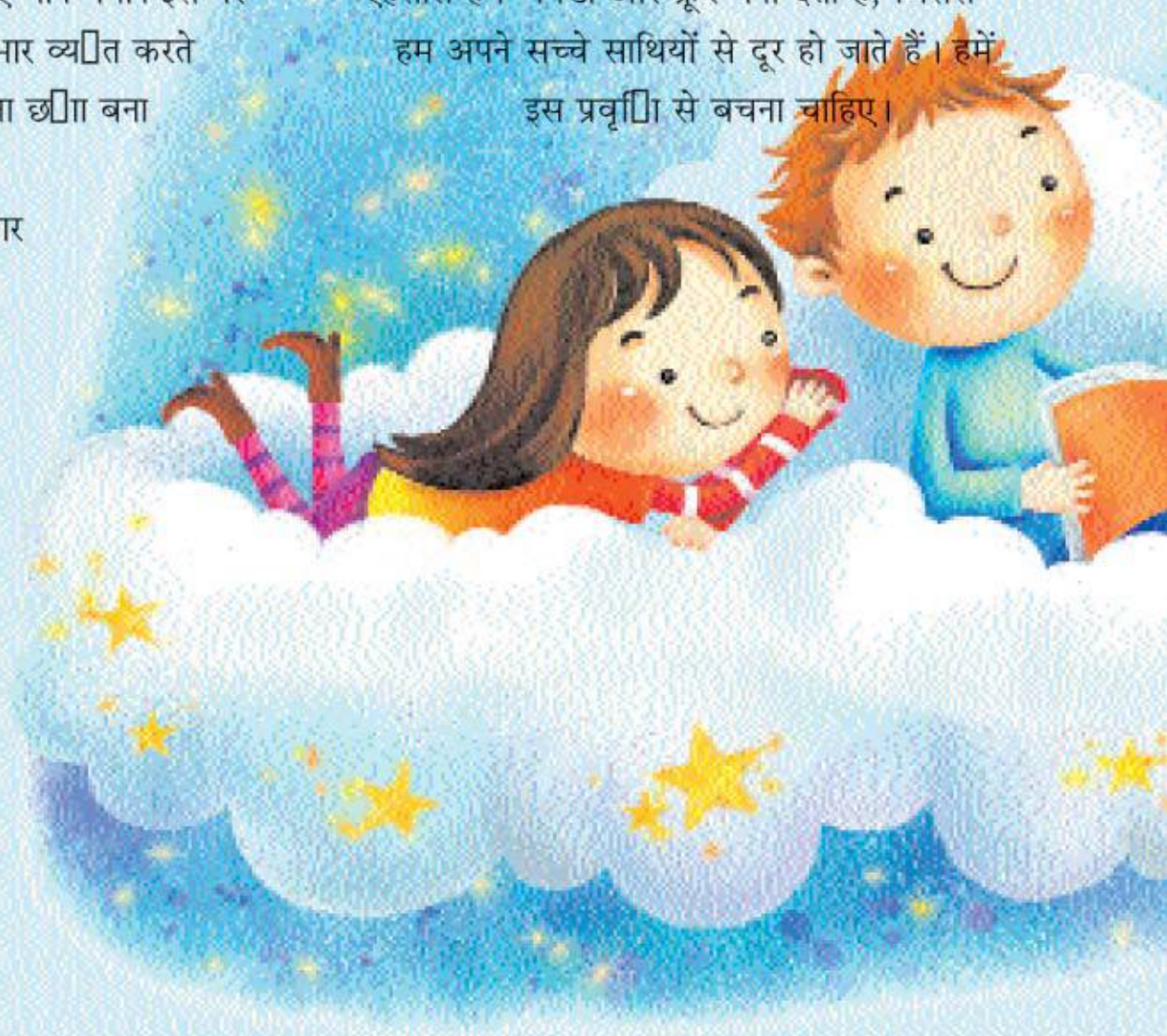

❀ परोपकार ही सबसे बड़ा पुण्य हैं।

आखिरी काम

एक बुजुर्ग कारपेंटर अपने काम का धनी था। उसके बनाए लकड़ी के मकानों की दूर-दूर तक □याति थी। एक दिन उसने सोचा कि अब बाकी जिंदगी आराम से गुजारी जाए। यह सोचकर वह अपने ठेकेदार के पास पहुंचा और बोला, 'मालिक, मैंने बरसों आपकी सेवा की है, पर अब मैं बाकी का समय आराम से पूजा-पाठ में बिताना चाहता हूं। कृपया मुझे काम छोड़ने की अनुमति दें।'

ठेकेदार भी कारपेंटर को बहुत मानता था, लिहाजा यह सुनकर उसे थोड़ा दुख हुआ। पर वह कारपेंटर को निराश नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने कहा, 'आप यहां के सबसे अनुभवी कारीगर हैं। आपकी कमी हमेशा खलेगी। पर मेरा एक निवेदन है कि आप काम छोड़ने से पहले मेरे लिए एक और लकड़ी का मकान तैयार कर दीजिए।'

कारपेंटर काम छोड़ने का मन बना चुका था, पर वह ठेकेदार की बात भी नहीं टाल सकता था। लिहाजा अनमने भाव से इसके लिए तैयार हो गया। पर उसके मन में यह बात थी कि ये उसका आखिरी काम है और इसके बाद उसे और कुछ नहीं करना होगा। इसी सोच के चलते वह काम में थोड़ा आलसी व लापरवाह हो गया।

पहले जहां वह बड़ी सावधानी से लकड़ियां चुनता और काटता था। अब बस चलताऊ तरीके से ये सब करने लगा। खैर, जैसे-तैसे कुछ ह□तों में उसने मकान तैयार कर दिया। इसके बाद उसने ठेकेदार के पास पहुंचकर पुन: काम छोड़ने की इजाजत मांगी। ठेकेदार बोला, 'आप बिलकुल जा सकते हैं, लेकिन अब आपको अपने पुराने छोटे-से घर में जाने की जरूरत नहीं है। आपने जो नया घर बनाया है, वह मैं आपको भेंट करता हूं।' कारपेंटर यह सुनकर स्त□ध रह गया। वह मन ही मन सोचने लगा कि कहां मैंने दूसरों के लिए एक से बढ़कर एक घर बनाए और जो घर मुझे मिलना था, उसे ही मैं इतने घटिया तरीके से बना बैठा। काश, मैंने इसे भी पूरी मेहनत से बनाया

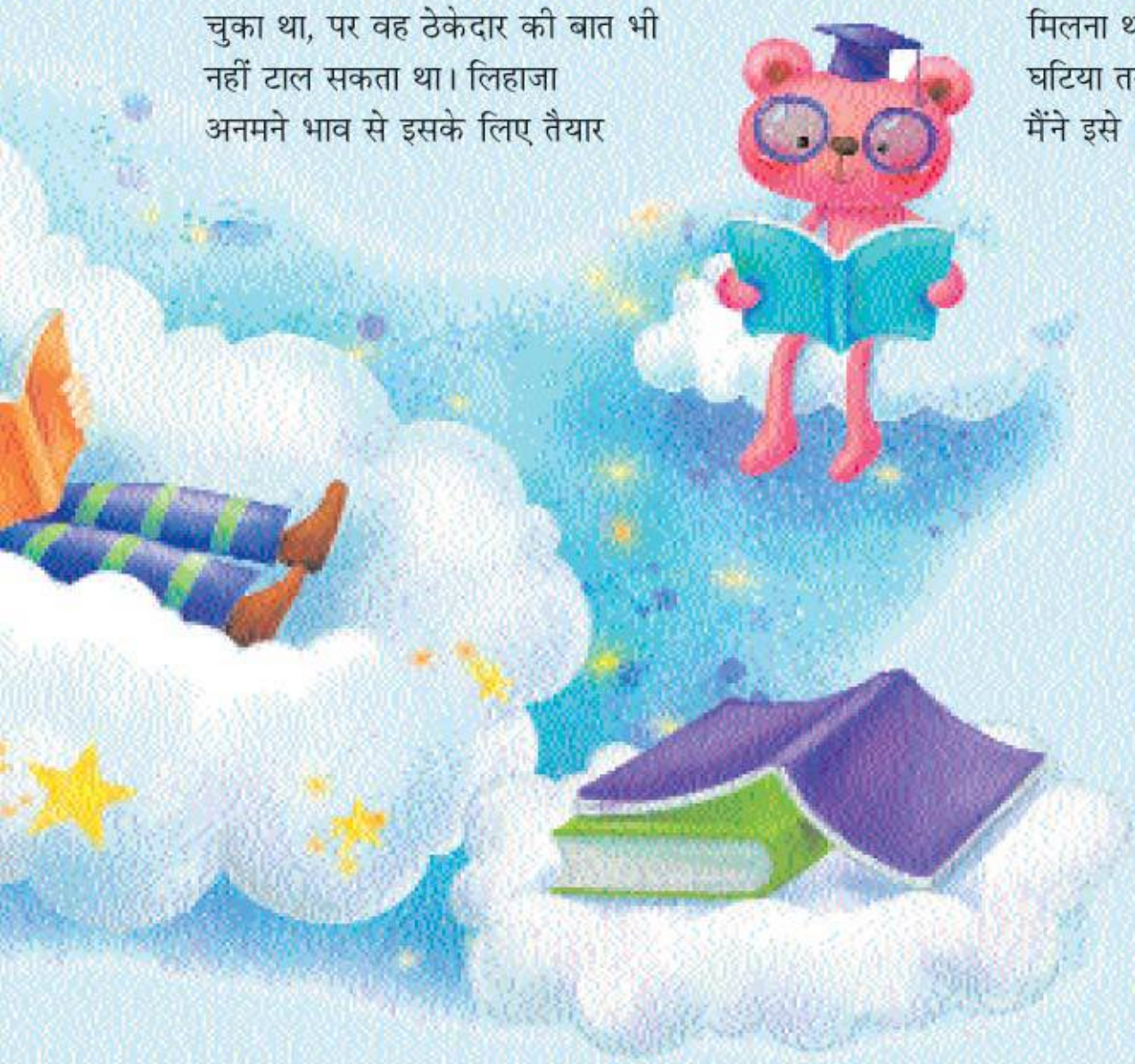

❀ हमें अपना हर काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करना चाहिए।

समर्पित भाव से कर्म

एक व्यक्ति किसी नए मार्ग से गुजर रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक जगह मंदिर का निर्माण किया जा रहा है। और वहां पर कई मजदूर काम पर लगे हैं। वह थोड़ी देर वहीं रुकते हुए मंदिर के निर्माण कार्य को देखने लगा। तभी उसने देखा कि एक मजदूर गुस्से से भुनभुनाते हुए पत्थरों पर जोर- जोर से प्रहार कर रहा है। उसे यह देखकर अजीब लगा। उसने उस मजदूर के पास जाकर पूछा, 'भाई, यह क्या कर रहे हो?'

मजदूर उसके सवाल पर खीझते हुए बोला, 'दिखाई नहीं देता, पत्थर तोड़ रहा हूं? मेरी तो किस्मत ही फूटी है। जब भाग्य में पत्थर तोड़ना ही लिखा है, तो इंसान वही तो करेगा। न जाने मेरी तकदीर कब बदलेगी?' यह कहकर वह पुनः उसी भाव से पत्थर तोड़ने में लग गया। थोड़ी दूर पर एक और मजदूर भी इसी काम में लगा था। उसके पास जाकर भी उस आदमी ने यही सवाल पूछा। इस पर वह मजदूर बहुत उदास और निराश भाव से बोला, 'क्या करें भैया? रोजी- रोटी कमाने के लिए पत्थर तोड़ना पड़ता है, सो वही कर रहा हूं।' तभी उस आदमी की नजर वहां काम कर रहे एक और मजदूर पर पड़ी, जो कुछ गुनगुनाते हुए प्रसन्न भाव से अपने काम में लगा था। उस आदमी ने उसके पास जाकर पूछा, 'क्या कर रहे हो?' इस पर उस मजदूर ने जवाब दिया, 'यहां भगवान का मंदिर बन रहा है। मेरे अहोभाग्य कि मुझे भी यहां काम करने का मौका मिला। इसी बहाने मेरे श्रम की चार बूंदें भी प्रभु के मंदिर की स्थापना में काम आ जाएंगी।'

वह व्यक्ति उसका जवाब सुनकर खुश हो गया। देखा जाए तो तीनों मजदूर एक ही काम कर रहे थे, पर उनका उस काम के प्रति नजरिया अलग था। जिससे उनके काम में भी फर्क नजर आ रहा था। जीवन में कुछ लोग पहले मजदूर की तरह होते हैं, जो मनचाहा काम न मिलने पर मजबूरीवश दूसरा काम निरुत्साह भाव से करते हुए अपनी किस्मत को कोसते रहते हैं। कुछ दूसरे मजदूर की तरह होते हैं, जो सिर्फ इसे अपनी आजीविका से जोड़ते हुए यंत्रवत तरीके से काम करते हैं। वहीं कुछ लोग तीसरे मजदूर की तरह अपने कर्म को अपना सौभाग्य और पूजा मानकर पूरे समर्पण भाव से करते हुए जीवन में निरंतर कामयाबी हासिल करते हैं।

❀ कार्य कोई भी हो, उसे पूरी लगन और परिश्रम से किया जाए तो सफलता मिलने की संभावना ज्यादा होती है।

हर काम का महत्त्व होता है

एक बार की बात है। टॉलस्टॉय साधारण कपड़ों में स्टेशन के पास टहल रहे थे। एक संभ्रांत महिला ने उन्हें कुली समझ लिया और कहा, 'मेरा ये पत्र सामने वाले होटल में ठहरे मेरे पति तक पहुंचा दो। बदले में मैं तुम्हें दो रूबल दूंगी।' टॉलस्टॉय ने वह पत्र पहुंचा दिया। जैसे ही उन्होंने उस महिला से दो रूबल लिए, उनका एक मित्र वहां आ पहुंचा। उसने टॉलस्टॉय का, 'काउंट' कहकर अभिवादन किया। यह सुनकर उस महिला को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने फौरन उस व्यक्ति से पूछा, 'ये कौन हैं?'

जब उस महिला को पता चला कि वह जिसे कुली समझ बैठी थी वे तो महान लेखक और काउंट टॉलस्टॉय हैं। वह बेहद शर्मिंदा हुई और उसने क्षमायाचना करते हुए अपने रूबल वापस मांगे। इस पर टॉलस्टॉय हंसते हुए बोले, 'आप क्षमा क्यों मांग रही हैं? आपने तो मुझे काम के बदले में ही रूबल दिए हैं। इसलिए ये तो मेरी मेहनत की कमाई हुई। ये मैं आपको वापिस नहीं दे सकता।'

साफ है कि अपनी मेहनत की कमाई का सदैव सम्मान करना चाहिए। दरअसल, काम कोई भी हो, वह छोटा या बड़ा नहीं होता। हमारा नजरिया ही उसे छोटा या बड़ा बना देता है। हम अपने सभी कार्यों को सम्मानपूर्वक और पूरी निष्ठा के साथ करें तो वह कार्य हमें भी नई ऊंचाइयां तो देता ही है, साथ ही साथ सम्मान भी दिलवाता है।

❀ कोई भी कार्य छोटा-बड़ा नहीं होता।

संतोष धन

पंडित श्रीराम नाथ नगर के बाहर एक कुटिया में अपनी पत्नी के साथ रहते थे। एक दिन जब वे विद्यार्थियों को पढ़ाने जा रहे थे, उनकी पत्नी ने उनसे पूछा, 'आज भोजन □या बनेगा? घर में एक मुट्ठी चावल ही हैं।' पंडित जी ने पत्नी की ओर पलभर के लिए देखा और बिना कोई उ□ार दिए चले गए। भोजन के समय जब उन्होंने थाली में थोड़े-से चावल और उबली हुई कुछ प□ायां देखीं तो पत्नी से पूछा, 'यह स्वादिष्ट साग किसका है?' पत्नी बोली, 'मेरे पूछने पर आपकी दृष्टि इमली के वृक्ष की ओर गई थी। मैंने उसी के प□ों का साग बनाया है।'

पंडित जी ने बड़ी ही निश्चिंतता से कहा, 'इमली के प□ों का साग इतना स्वादिष्ट होता है। तब तो हमें भोजन की कोई चिंता ही नहीं रही।' जब नगर के राजा शिवचंद्र को पंडित जी की गरीबी का पता चला तो उन्होंने पंडित जी के सामने नगर में आकर रहने का प्रस्ताव रखा, किन्तु उन्होंने मना कर दिया। तब राजा ने स्वयं उनकी कुटिया में जाकर यह बात पूछने का निर्णय किया। हालांकि वह समझ नहीं पा रहे थे कि यह बात कैसे पूछें। काफी देर असमंजस में रहने के बाद उन्होंने पूछा, 'आपको किसी चीज का अभाव तो नहीं?' पंडित जी हंसकर बोले, 'यह तो मेरी पत्नी ही जानें।'

तब राजा ने वही बात उनकी पत्नी से पूछी। वह बोलीं, 'राजन! मेरी कुटिया में कोई अभाव नहीं। मेरे पहनने का वस्त्र अभी इतना नहीं फटा कि उपयोग में न आ सके। जल का मटका अभी तनिक भी फूटा नहीं है और फिर मेरे हाथ में जब तक चूड़ियां हैं, मुझे □या अभाव। सीमित साधनों में ही संतोष की अनुभूति हो तो जीवन आनंदमय हो जाता है।'

उस देवी की बातें सुनकर राजा उनके समक्ष श्रद्धा से झुक गए। वह चुपचाप लौट आए।

समय का महत्त्व

यह घटना उस समय की है, जब स्वतंत्रता आंदोलन जोर पकड़ रहा था। गांधीजी घूम-घूमकर लोगों को स्वराज और अहिंसा का संदेश देते थे। एक बार उन्हें एक सभा में बुलाया गया। सभा का संचालन एक स्थानीय नेता को करना था। गांधीजी समय के पाबंद थे। वे निर्धारित समय पर सभास्थल पर पहुंच गए। उन्होंने देखा कि सभास्थल पर सभी लोग पहुंच गए हैं, लेकिन जिन नेता को सभा का संचालन करना था, वह नहीं पहुंच पाए हैं। सभी लोग बेसब्री से उस नेता की प्रतीक्षा करते रहे।

वह पूरे पैंतालीस मिनट बाद सभास्थल पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि उनकी अनुपस्थिति में ही सभा चल रही है। यह देखकर वह लज्जित हुए। मंच पर पहुंच कर उन्होंने आयोजकों से पूछा कि उनके बिना सभा कैसे प्रारंभ हुई? इस पर आयोजक कुछ नहीं बोले।

गांधीजी नेताजी के हाव-भाव से उनकी बातें समझ गए। वह मंच पर आए और नेताजी की ओर देखते हुए बोले, 'माफ कीजिए, लेकिन जिस देश के अग्रगामी नेतागण ही मह□वपूर्ण सभा में पैंतालीस मिनट देर से पहुंचेगे वहां पर स्वराज भी उतनी ही देर से आएगा। नेता के इंतजार में अन्य लोग भी कार्य प्रारंभ नहीं कर सकते। यह सोचकर मैंने सभा शुरू करा दी, □योंकि मुझे डर था कि आपके देर से आने की आदत धीरे-धीरे अन्य लोगों को भी न लग जाए। मेरा मानना है कि लोग एक-दूसरे की अच्छी बातें ही सीखें, बुरी बातें नहीं।'

गांधीजी की बात सुनकर नेताजी को शर्मिंदगी महसूस हुई। उन्होंने उसी क्षण संकल्प लिया कि आगे से वह भी समय का मह□व समझेंगे और अपना हर कार्य निर्धारित समय पर करेंगे।

❀ समय का सम्मान कर हम अपना जीवन संवार सकते हैं।

केपटाउन

केपटाउन शहर बंदरगाह, पर्वत और बाग सहित अन्य दर्शनीय स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। यहां टेबल मांउटेन, नेशनल पार्क, रोपवे, सिग्नल हिल, वि□टोरिया एंड अल्फ्रेड वाटरफ्रंट सहित कई दर्शनीय स्थल मह□वपूर्ण हैं।

यहां टेबल माउंटेन समतल सतह की कम ऊंचाई वाला एक पहाड़ है। यह केपटाउन के पश्चिमी भाग में स्थित है। इस पहाड़ से केपटाउन शहर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। पहाड़ की चोटी पर जाने के लिए रोपवे लगा हुआ है।

टेबल माउंटेन नेशनल पार्क– इस पार्क को पहले केप पेन्नीसुला नेशनल पार्क के नाम से जाना जाता था। इस पार्क की स्थापना का मु□य उद्देश्य टेबल माउंटेन के पास के पर्यावरण को सुरक्षित रखना था। विशेषकर टेबल माउंटेन के जंगलों में पाए जाने वाले फेन्वॉस नामक जन्तु को सुरक्षित रखना। इस पार्क की देखभाल दक्षिण अफ्रीका नेशनल पार्क द्वारा की जाती है।

टेबल माउंटेन रोपवे– यह रोपवे टेबल माउंटेन पर जाने के लिए बनाया गया है। यह केपटाउन के मह□वपूर्ण पर्यटन स्थलों में एक है। इस रोपवे का निचला स्टेशन ट्रेफलगर रोड से फ्ख मीटर की ऊंचाई पर है। जबकि इस रोपवे का ऊपरी स्टेशन क्म्स्त्र मीटर की ऊंचाई पर है। ऊपरी स्टेशन से केपटाउन शहर का अद्भुत नजारा दिखता है।

बो-कैप □यूजियम, डिस्ट्रिक सि□स □यूजियम आदि भी यहां देखने योग्य

केप ऑफ गुड होप– किसी भी देश में बहुत कम ऐसे स्थान होते हैं, जिन्होंने इतिहास को बदल कर रख दिया हो। केपटाउन में स्थित केप ऑफ गुड होप एक ऐसा ही स्थान है।

चैपमैनस पीक– यह एक पहाड़ी है जो केपटाउन के दक्षिण में क्ष्- किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस पहाड़ी तक एक सड़क जाती है, जिसे चैपमैनस पीक ड्राइव के नाम से जाना जाता है। यह सड़क अपने समय में इंजीनियरिंग का अद्भूत नमूना है।

सिग्नल हिल– यह सपाट सतह वाली पहाड़ी है, जो टेबल माउंटेन के नजदीक स्थित है। इस पहाड़ी को द लायंस □लैंक के नाम से भी जाना जाता है। पर अब यह नाम अप्रचलित हो गया है। यह नूनगन के लिए प्रसिद्ध है।

समुद्र तट पर स्थित होने के कारण केपटाउन में बहुत सारे बीच हैं। ग्लेन बीच, □लफटन, सी प्वाइंट, सैंड वे, □लूबर्गस्ट्रैंड आदि यहां स्थित मह□वपूर्ण बीच हैं। इन बीचों पर हमेशा पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। यहां पर तैराकी का आनंद भी उठाया जा सकता

केपटाउन स्थित वि□टोरिया एंड अल्फ्रेड वाटरफ्रंट पर्यटकों के सबसे पसंदीदा स्थलों में से है। यह एक ऐतिहासिक बंदरगाह है, जो अभी भी काम कर रहा है। यह बंदगाह रोबेन आइसलैंड और टेबल माउंटेन के बीच स्थित है।

टू ओसेन ए□वेरियम : यह ए□वेरियम वि□टोरिया एंड अल्फ्रेड वाटर पार्क में स्थित है। इस ए□वेरियम में सात गैलरियां हैं।

लांग स्ट्रीट : यह केपटाउन का मु□य बाजार है, जो केपटाउन के सिटी बॉउल क्षेत्र में है। यहां थियेटर, बुकस्टोर, होटल, रेस्तरां आदि काफी सं□या में हैं।

कापसे कलोपसे : यह एक मिनिस्ट्रेल त्योहार है जो केपटाउन में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस त्योहार में क्प हजार से ऊपर मिनिस्ट्रेल अपने चेहरे को सफेद रंग से रंगे हुए भाग लेते हैं। वे विभिन्न रंग के छाते और वाद्ययंत्र लिए होते हैं। इस त्योहार को केपटाउन मिनिस्ट्रेल कार्निवल के नाम से भी जाना जाता है।

रोबेन ऑइसलैंड : यह आइसलैंड केपटाउन से कुछ दूरी पर स्थित है। इसी स्थान पर नेल्सन मंडेला को नजरबंद रखा गया था।

संसद भवन : केपटाउन में ही दक्षिण अफ्रीकी संसद है। केपटाउन आने वाले पर्यटक इस भवन को देखने जरूर आते हैं।

घमंडी कौआ

समुद्रतट पर बसे नगर में एक धनवान वैश्य रहता था। उसके पुत्रों ने एक कौआ पाल रखा था। वे उसे अपना जूठन खिलाते रहते और कौआ भी मस्त रहता।

एक बार कुछ हंस आकर वहां उतरे। वैश्य के पुत्र हंसों की प्रशंसा कर रहे थे। जो कौए से सही नहीं गई। वह उन हंसों के पास पहुंचा और उनमें से एक हंस से बोला, 'लोग नाहक ही तुहारी तारीफ करते हैं। तुम मुझे उड़ान में हराओ तो जानूं!' हंस ने उसे समझाया, 'भैया, हम दूर-दूर उड़ने वाले हैं। हमारा निवास मानसरोवर यहां से बहुत दूर है। हमारे साथ प्रतियोगिता करने से तुहें या लाभ होगा?'

कौए ने अभिमान के साथ कहा, 'मैं उड़ने की सौ गतियां जानता हूं। मुझे पता है कि तुम हारने के डर से हमारे साथ नहीं उड़ रहे हो।' तब तक कुछ और पक्षी भी वहां आ गए। वे भी कौए की हां में हां मिलाने लगे। आखिर वह हंस कौए के साथ प्रतियोगिता के लिए राजी हो गया।

इसके बाद हंस और कौआ समुद्र की ओर उड़ चले। समुद्र के ऊपर वह कौआ कलाबाजियां दिखाते हुए पूरी शित से उड़ा और हंस से कुछ आगे निकल गया। हंस अपनी स्वाभाविक मंद गति से उड़ रहा था। यह देख दूसरे कौए प्रसन्नता प्रकट करने लगे। पर थोड़ी ही देर में कौआ थकने लगा।

वह विश्राम के लिए इधर-उधर वृक्षयुत द्वीपों की खोज करने लगा। परंतु उसे अनंत जलराशि के अतिरित कुछ नहीं दिख रहा था। तब तक हंस उड़ते-उड़ते कौए के समीप आ चुका था। कौए की गति मंद पड़ चुकी थी। वह बेहद थका हुआ और समुद्र में गिरने की दशा में पहुंच गया था। हंस ने देखा कि कौआ बार-बार समुद्र जल के करीब पहुंच रहा है, लिहाजा उसने पास आकर पूछा, 'काक! तुहारी चोंच और पंख बार-बार पानी में डूब रहे हैं। यह तुहारी कौन-सी गति है?'

हंस की व्यंग्यभरी बात सुनकर कौआ दीनता से बोला, 'यह मेरी मूर्खता थी, जो मैंने तुमसे होड़ करने की ठानी। कृपा कर मेरे प्राण बचा लो।' हंस को कौए पर दया आ गई और उसने अपने पंजों से उसे उठाकर अपनी पीठ पर रखा और लौटकर वापस उसे

❀ कभी किसी को अपनी शक्तियों पर मिथ्या अभिमान नहीं करना चाहिए।

बाड़े की कील

बहुत समय पहले की बात है, एक गांव में एक लड़का रहता था। वह बहुत ही गुस्सैल था। छोटी-छोटी बात पर अपना आप खो बैठता और लोगों को भला-बुरा कह देता। उसकी इस आदत से परेशान होकर एक दिन उसके पिता ने उसे कीलों से भरा हुआ एक थैला दिया और कहा कि अब जब भी तु□हें गुस्सा आये तो तुम इस थैले में से एक कील निकालना और बाड़े में ठोंक देना।

पहले दिन उस लड़के ने चालीस बार गुस्सा किया और इतनी ही कीलें बाड़े में ठोंक दीं। पर धीरे-धीरे कीलों की सं□या घटने लगी। उसे लगने लगा कि कीलें ठोंकने में इतनी मेहनत करने से अच्छा है कि अपने क्रोध पर काबू किया जाए। अगले कुछ ह□तों में उसने अपने गुस्से पर बहुत हद तक काबू करना सीख लिया। और फिर एक दिन ऐसा आया कि उस लड़के ने पूरे दिन में एक बार भी क्रोध नहीं किया।

जब उसने अपने पिता को ये बात बताई तो उन्होंने फिर उसे एक काम दे दिया, और कहा कि अब हर उस दिन जिस दिन तुम एक बार भी गुस्सा ना करो इस बाड़े से एक कील निकाल निकाल देना।

लड़के ने ऐसा ही किया। बहुत समय बाद वो दिन भी आ गया जब लड़के ने बाड़े में लगी आखिरी कील भी निकाल दी और अपने पिता को खुशी से ये बात बतायी।

तब पिताजी उसका हाथ पकड़कर उस बाड़े के पास ले गए और बोले, 'बेटे तुमने बहुत अच्छा काम किया है। लेकिन □या तुम बाड़े में हुए छेदों को देख पा रहे हो। जब तुम क्रोध में कुछ कहते हो तो वो श□द भी इसी तरह सामने वाले व्या□ित पर गहरे घाव

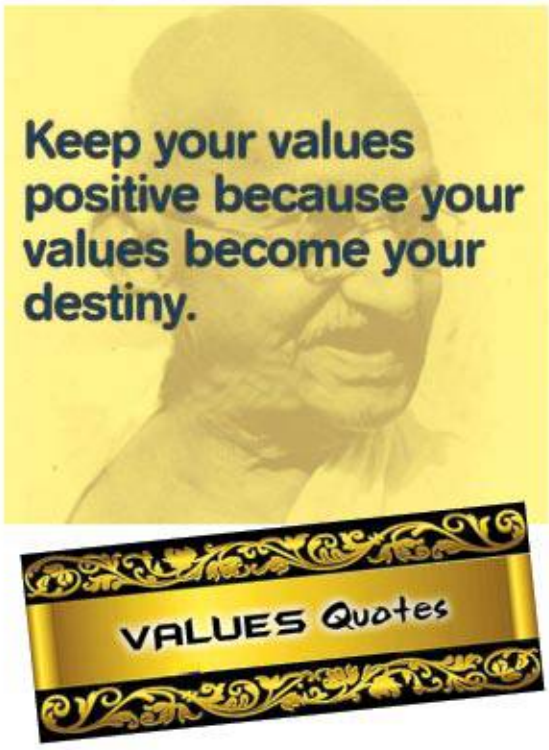

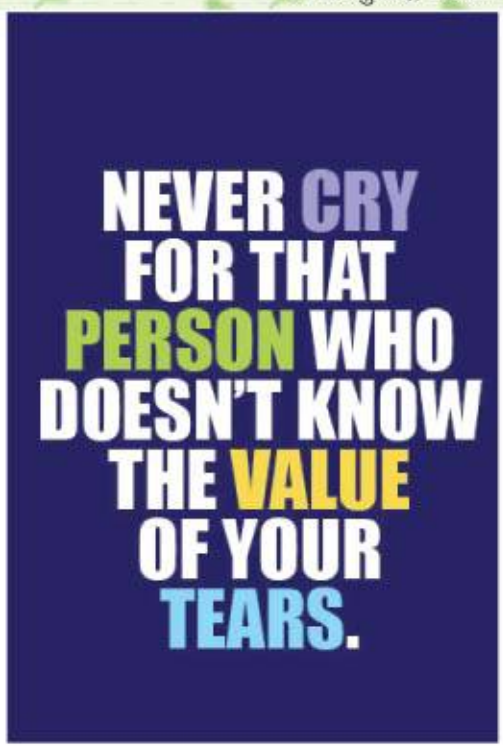

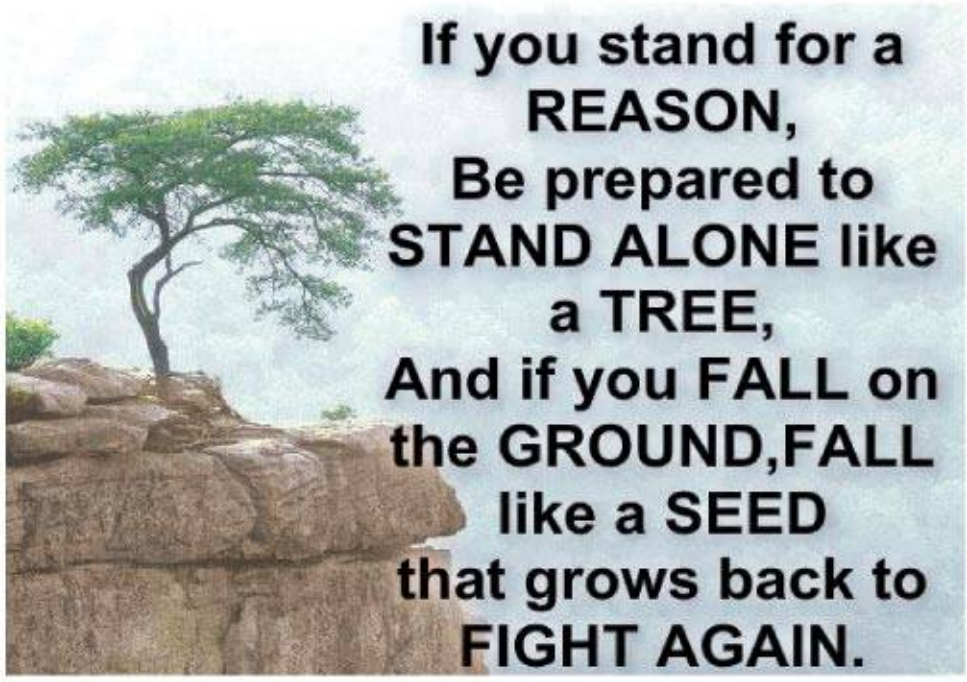

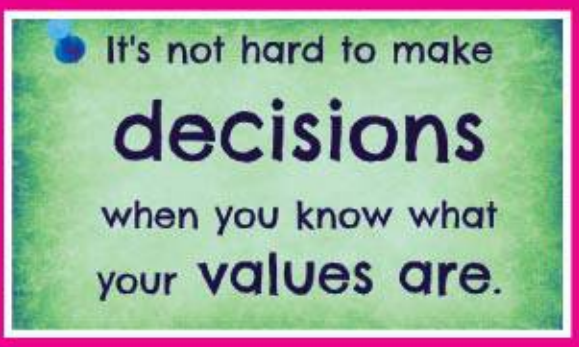

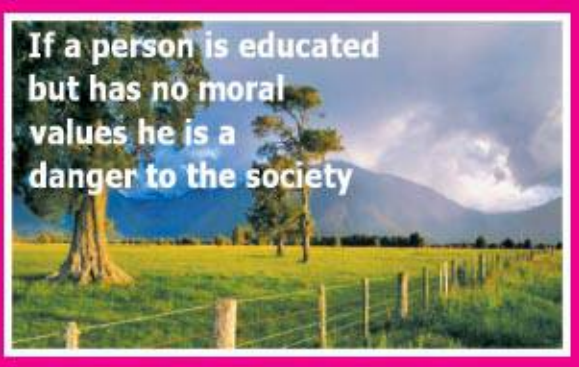

Success in life means living by your values.

Society doesn't have values. People have values.

'Peace of mind produces right values, right values produce right thoughts. Right thoughts produce right actions.'

बच्चो, तु□हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तु□हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तु□हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वा□य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और

क. स्कूल जाने का समय हो गया है।
It is time for school.
इट इज टाइम फॉर स्कूल।

ख. यह आपका दोष नहीं था।
It was not your fault.
इज वाज नॉट योअर फॉल्ट।

फ. बालक ने कविता सुनाई।
The boy recited a poem.
द बॉय रिसाइटिड ए पोइम।

ब. लड़का स्कूल नहीं आया।
The boy did not come to school.
द बॉय डिड नॉट कम टु स्कूल।

भ. मु□याध्यापक ने मेरा जुर्माना माफ कर दिया।
The headmaster exempted my fine.
द हैडमास्टर इग्जै□पटेड माइ फाइन।

म. उसे अंग्रेजी में विशिष्टता प्राप्त हुई है।
He has got distinction in english.
ही हैज गॉट डिस्टिं□शन इन इंग्लिश।

त्र. तु□हारे पास कला के विषय हैं, या विज्ञान के?
Have you offered arts or scince?
हैव यू ऑफर्ड आर्ट्स ऑर साइंस?

त. मेरे पास भौतिकी, रासायनिक और जीव विज्ञान हैं।
I have offerd physics, chemistry and biology.
आई हैव ऑफर्ड फिजि□स, कैमेस्ट्री एंड बायॉलोजी।

-. □या कोई फालतू कॉपी आपके पास है।
Do you have a spare exercise book/ note book?
डू यू हैव अ स्पेअर ए□सरसाईज बुक/नोट बुक?

क. मुझे बड़ा अफसोस है; जो आपको इतनी देर तक मेरा इंतजार करना पड़ा।
I am awfully sorry to have kept you waiting so long.
आइ एम ऑफुली सॉरी टु हैव कैप्ट यू वेटिंग सो लौन्ग।

Antonyms

urban- शहरी	rural- देहाती
useful- उपयोगी	useless- निरर्थक
vacant- खाली	occupied- भरा हुआ
valley- घाटी	mountain- पहाड़

Word-Power

- equivalent- बराबर — doctrine- मत, शिक्षा, सिद्धान्त
- Presumably- संभवतया — language- भाषा
- prominent- मु□य, विशिष्ट — Segregation- वियोग, अलगाव
- suspicion- संदेह — Shear- काटना, कतरना

English-Hindi Phrases

Draw up a scheme- योजना बनाना।
Copy enclosed- प्रतिलिपि संलग्न है।
Duly complied- विधिवत पालन किया गया।
Drawal of arrear/pay- बकाया/वेतन का आहरण।
Copy enclosed for ready reference- तत्काल सन्दर्भ के लिए प्रति संलग्न।

Synonyms

Angry- एंग्री- क्रोधित, खफा, कुपित, क्रुद्ध, क्रोधित, नाराज
Mad, Furious, Enraged, Excited, Wrathful, Indignant, Exasperate,

IDIOM

All of a sudden- Suddenly, Without advance warning.
All of a sudden it became cloudy and began to rain.

मनुष्य के एक बाल की आयु 3 से 7 साल तक की होती है।

मनुष्य के बाल न तो सर्दी द्वारा, न जलवायु द्वारा, न पानी द्वारा और न ही अन्य कुदरती बलों द्वारा नष्ट होते हैं। साथ ही ये कई प्रकार के तेजाबों के प्रतिरोधक भी हैं।

मनुष्य की आंख एक मिनट में औसतन 25 बार झपकती है।

जब आप एक आदमी का चेहरा गौर से देखते हैं तो आप अपने दिमाग का दायां भाग उपयोग करते है।

आप के दिमाग में हर दिन औसतन 60 हजार विचार आते हैं।

संसार में 2 प्रतिशत से भी कम लोग हैं जो कि अपनी कुहनी चाट सकते हैं।

लगभग 75 प्रतिशत लोग सिर पर पानी डालकर नहाना शुरू करते हैं।

उंगलियों के नाखून पैरों के नाखूनों से 4 गुना ज्यादा जल्दी बढ़ते हैं।

वैश्विक संदर्भ में देखें तो 90 प्रतिशत लोग सवेरे उठने के लिए अलार्म घड़ी पर निर्भर रहते हैं।

तथ्य निराले

मानव दांत चट्टानों जितने कठोर होते हैं।

जो बच्चे पांच साल का होने से पहले दो भाषाएं सीखते हैं, उनके दिमाग की संरचना थोड़ी सी बदल जाती है।

पढ़ने और बोलने से बच्चों का दिमागी विकास ज्यादा होता है।

लगभग 45 प्रतिशत लोग हर रोज माउथ वॉश करते हैं।

एक मनुष्य अपने जीवनकाल में 27,000 किलोग्राम तक भोजन खा जाता है, जो कि 6 हाथियों के वजन के बराबर होता है।

करीब नौ प्रतिशत लोग रोज नाश्ता नहीं करते।

Illusion

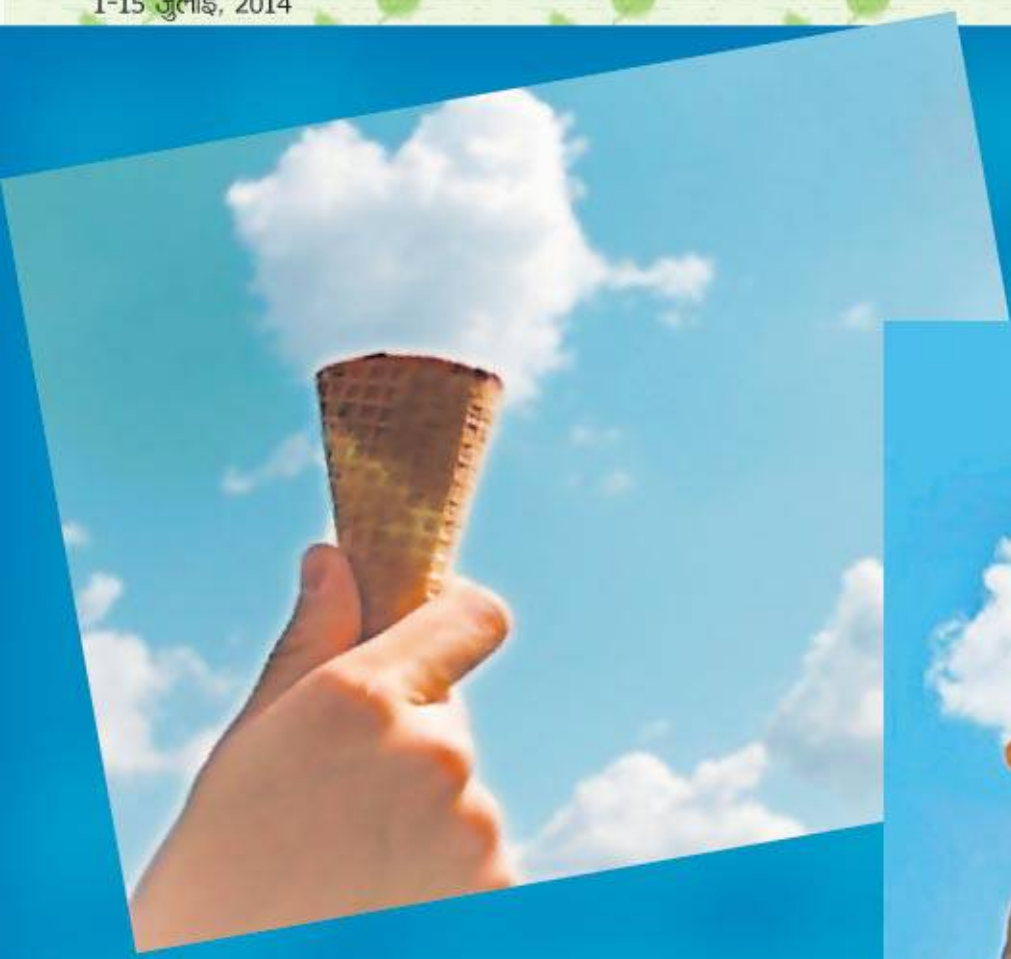

CrossWord PuzzLeS

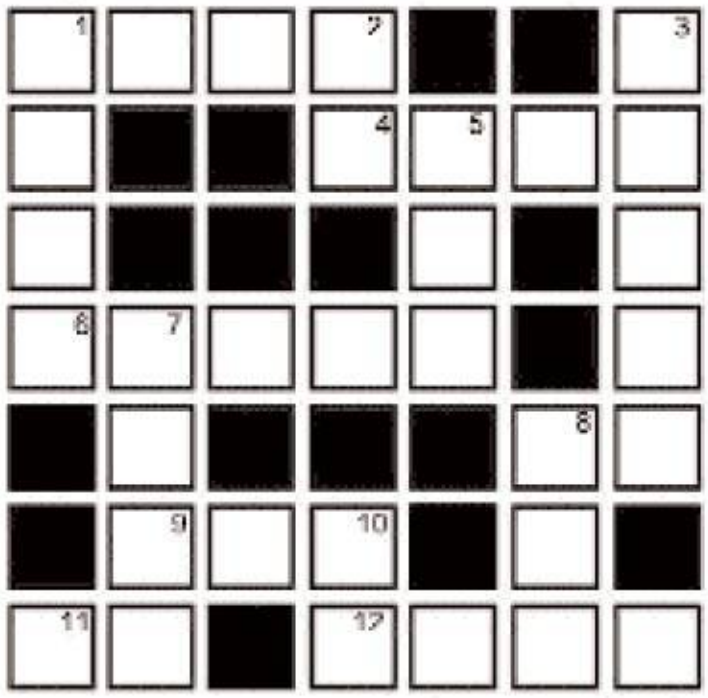

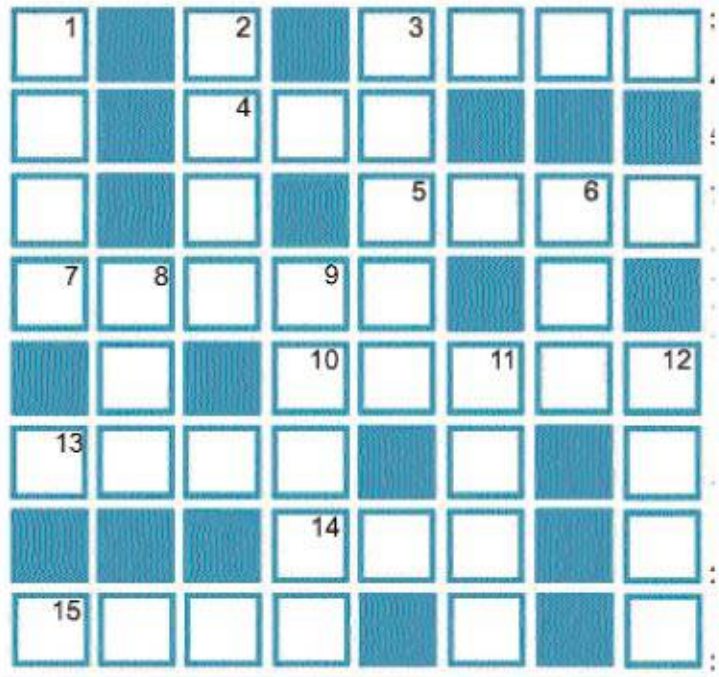

बाएं से दाएं

क. मदद, भलाई, अनुग्रह (ब)।

ब. आवेश में आना, उमंग में आना (ब)।

म. वि□यात, प्रसिद्ध (ख,फ)।

त. एक फिल्म का नाम है...पतंग (ख)।

–. निकट, नजदीक, पास, जो दूर न हो (फ)।

क्क. एक संवत का नाम, शंका (ख)।

क्ख. साहित्य में काव्य का एक भेद (ब)।

ऊपर से नीचे

क. उठ कर फैल जाना, घेरना, फैलना (ब)।

ख. नस, नस्ल, जिद (ख)।

फ. किसी वस्तु को झपट कर छीन लेना (ख,फ)।

भ. रहम दिल, दयालु (फ)।

स्त्र. मीमांसा शास्त्र को जानने वाला (ब)।

–. अविकसित फूल (ख)।

क. पंखों वाली एक कल्पित स्त्री (ख)।

ACROSS

3. Curved construction, Cunning, Prominent (4).
4. Projection of pelvish and upper part of thigh bone (3).
5. To draw forcibly towards one (4).
7. The depression in the centre of abdomen (5).
10. The cry of a horse (5).
13. Deceased, Lifeless(4).
14. Beyond bounds (3).
15. Undergo natural development by increasing in size and changing physically (4).

DOWN

1. A large handsome web footed bird of goose family (4).
2. A slang term for any sharp or pointed implement,...Sena (4).
3. ...Inc is related to Steven Poul Jobs (5).
6. An official written record of events during a ships's voyage (3).
8. A single marks on cards or dice (3).
9. To enrich with any gift (5).
11.Expressing entrance or passage within a thing with rash movement (4).
12. A circular loop or coil of thread (4).

Answer

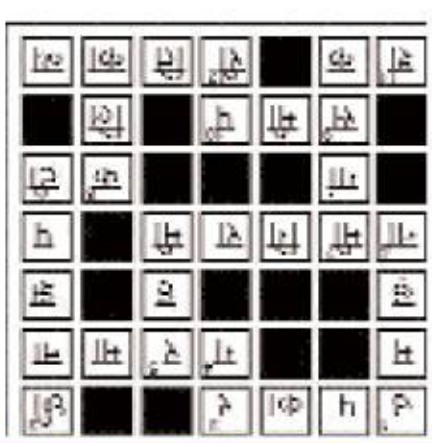

क्यों आता है पसीना

हमें पसीना इसलिए आता है, जिससे हमारे शरीर का तापमान सामान्य बना रहे। यह तो आप जानते ही हैं कि हमारे शरीर का तापमान -ऋ.म डिग्री फैरनहाइट के आस-पास रहना चाहिए। इसे बनाए रखने के लिए हमारे शरीर में कोई ख्र लाख पसीने की ग्रंथियां हैं, जो एयर कंडीशनिंग का काम करती हैं। जब गर्मी बहुत बढ़ जाती है। चाहे वह बाहरी कारणों से हो या बुखार से, तो शरीर को ठंडा करने के लिए इन ग्रंथियों से पसीने की बूंदें निकलती हैं। जब पसीना हवा में सूखता है, तो ठंडक पैदा होती है और तापमान कम हो जाता है।

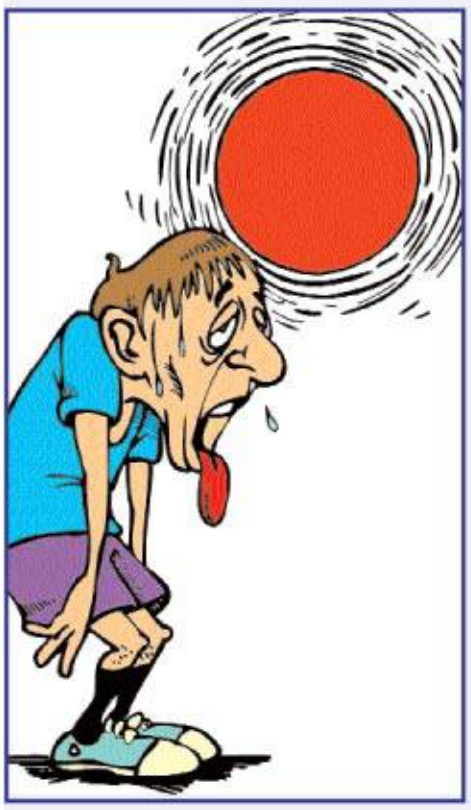

यहां तु□हें यह भी बता दें कि पसीने में गंध □यों आती है ? दोस्तो, पसीने में अपनी कोई गंध नहीं होती। दरसल हमारा शरीर दो प्रकार का पसीना पैदा करता है- eccrine और apocrine. इनमें से ऐपोक्राइन जब हमारी त्वचा के बै□टीरिया के संपर्क में आता है और बै□टीरिया उसे पचाता है तो उससे एक दुर्गंध पैदा होती है। उसी दुर्गंध को हम पसीने की दुर्गंध कहते हैं। इससे बचने के लिए हमें बै□टीरिया विरोधी साबुन का इस्तेमाल करना चाहिए। साथ

स्लोवेनिया

दुनिया के देश

स्लोवेनिया के इतिहास की जानकारी करते हैं तो मालूम होता है कि वर्ष क-क्त तक यह देश आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के अधीन रहा। सन् क-भ्र में युगोस्लाविया ने यहां अधिकार जमा लिया। वर्ष क--क में स्लोवेनिया में पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की।

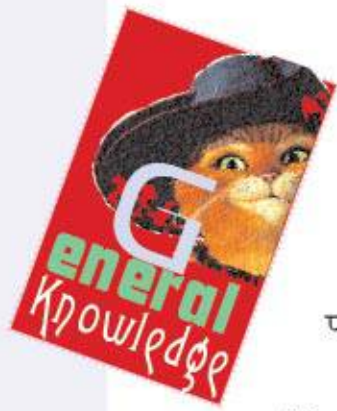

आधिकारिक नाम- रिपा□लका स्लोवेनिजा।

राजधानी- ल्जुबल्जना। **मुद्रा-** तोलार।

मानक समय- जी एम टी से क घंटा आगे।

भाषा- स्लोवेनी। **कुल जनसं□या-** ख्क्क्,ख्र

क्षेत्रफल- ख्,ख्ख्रफ वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- मध्य यूरोप में एड्रियाटिक सागर के तट पर क्रोएशिया व ऑस्ट्रिया के मध्य स्थित है।

जलवायु- भू-मध्य सागरीय है। अधिकांश भू-भाग पर्वतीय है। उ□ार में आल्पस पर्वत शृंखला स्थित है।

प्रमुख नदियां- द्रावा, सावा, मुरा।

सर्वोच्च शिखर- त्रिगलाव-ख्,त्त्म्ब मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- मरीबोर, क्रांज, नोवा गोरिका, नोवो मेस्टन।

निर्यात- मशीनरी, परिवहन उपकरण, रसायन।

आयात- रसायन, ईंधन, ल्युब्रिकेंट्स, भोज्य पदार्थ।

उद्योग- फर्नीचर, खेल उपकरण, कागज, सीमेंट, विद्युत उपकरण, धातु शोधन।

प्रमुख फसलें- म□का, गेहूं, चुकंदर, आलू, अंजीर।

प्रमुख खनिज- कच्चा इस्पात, भूरा कोयला, यूरेनियम, चांदी, जिंक, पारा।

शासन प्रणाली- गणतंत्रात्मक। **संसद-** नेशनल असे□बली।

राष्ट्रीय ध्वज- सफेद, लाल व नीली पट्टियों पर आधारित।

स्वतंत्रता दिवस- ख्भ जून क--क **प्रमुख धर्म-** ईसाई।

प्रमुख हवाई अड्डा- ल्जुबल्जना स्थित ब्रनिक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा। **प्रमुख बंदरगाह-** कोपर। **इंटरनेट**

क्यों → और → कैसे?

खुर्राट खर्राटे

रात में आपके आसपास यदि कोई ऐसा व्यक्ति सो रहा हो जो नींद में खर्राटे भरता हो तो आपका सोना मुश्किल हो जाता है। लेकिन आपने कभी सोचा है कि खर्राटों की आवाज आती कैसे है? दरअसल होता यह है कि कुछ व्यक्ति सोते समय नाक की जगह मुंह से श्वास लेते हैं। इसका कारण कुछ भी हो, पर श्वास लेने का यह स्वस्थ तरीका नहीं है। और खर्राटों की मुख्य वजह भी यही है।

जब मुंह से श्वास ली जाती है तो यहां तेजी से अंदर की ओर प्रवेश करती वायु ऊपरी तालू के पिछली ओर मौजूद इसके संवेदनशील भाग में कंपन पैदा कर देती है। इस तरह निकलते घरघराहट वाले अप्रिय स्वर को ही वास्तव में खर्राटे का नाम दिया गया है। माना तो यह जाता

है कि कभी न कभी हर व्यक्ति धीमे या जोर से खर्राटे जरूर लेता है। हां, पुरुष निश्चय ही महिलाओं और बच्चों की अपेक्षा अधिक खर्राटे लेते हैं। सोते समय मुंह से श्वास लेने के अलावा निद्रारत व्यक्ति का पीठ के बल लेटे होना खर्राटों के स्वर की दूसरी मुख्य वजह है, क्योंकि करवट से सोये व्यक्ति के मुंह से अंदर जाती श्वास तालू के उस विशेष भाग को प्रभावित नहीं कर पाती, ऐसे में वहां से कोई स्वर नहीं उपजता।

हां, उम्र बढ़ने के साथ खर्राटों में वृद्धि की संभावना जरूर बढ़ जाती है। क्योंकि ऐसे में तालू की मांसपेशियां ढीली होकर अपनी पकड़ छोड़ती जाती हैं। जिससे अंदर वायु प्रभावित होकर स्वर उत्पन्न कर देती है।

घरेलू तरीके से बना हवाई जहाज

सामग्री– एक स्ट्रॉ, पेपर क्लिप्स, मोटे कागज का शीट, सैलोटेप, पेंसिल एवं कैंची।

शुरू करो– लगभग 25 सेन्टीमीटर गुणा 12 सेन्टीमीटर आकार का मोटा कागज लो और इसे मोड़कर चित्र के भाग–1 की सी शक्ल दे दो। ध्यान रहे कि इनके दोनों किनारों को आपस में टेप से जोड़ने के बाद इनके दोनों किनारों पर तुम्हें चित्र के अनुरूप कट भी लगाने हैं। तो लो, यह तैयार हो गया हवाई जहाज का अगला भाग।

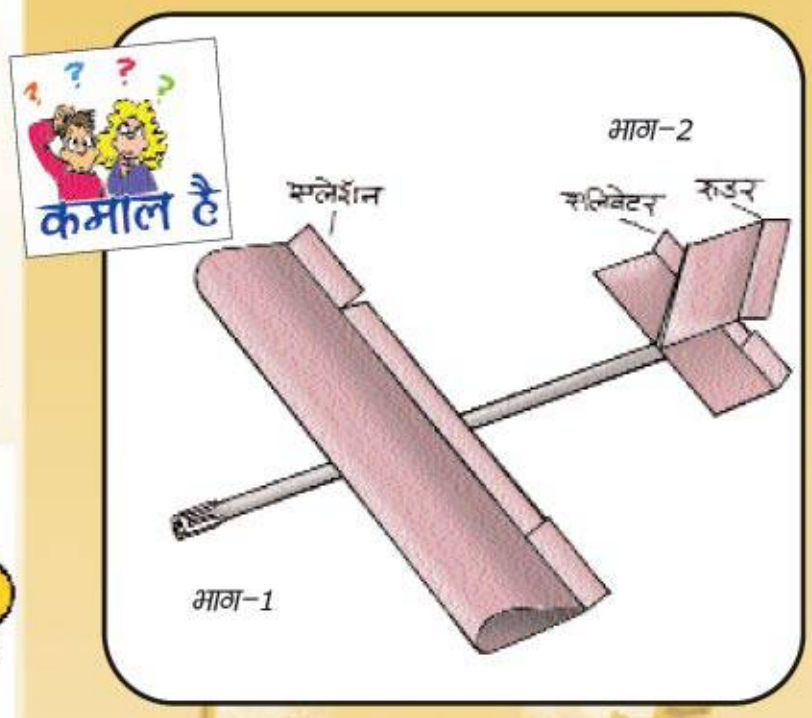

हवाई जहाज का पिछला भाग बनाने के लिए मोटे कागज का 20 सेन्टीमीटर गुणा 3.5 सेन्टीमीटर आकार का दूसरा टुकड़ा काटकर इसे भाग–2 की शक्ल में एक नया रूप दे दो। इस तरह पिछला भाग भी तैयार हो गया। अब सैलोटेप की मदद से इन दोनों भागों को स्ट्रॉ के साथ चिपका दो और स्ट्रॉ के आगे की ओर कुछ पेपर क्लिप लगा दो, ताकि यह भाग वजनदार हो जाये।

इसके बाद बस एक ही काम रह गया करने को। अपने हवाई जहाज के एलेरॉन, एलिवेटर और रुडर को अलग–अलग स्थितियों में रखकर जरा देखो कि तुम्हारे हवाई जहाज की उड़ान पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है।

कैसे होता है यह– पहले तो यह जान लो कि हवाई एलेरॉन्स और पिछले भाग के फ्लैप्स को एलीवेटर्स कहते हैं। इसी तरह पिछले भाग में एक और ऊर्ध्वाकार फ्लैप होता है, जिसे रुडर कहते हैं। इन्हीं तीनों की सहायता से हवाई जहाज का चालक इसे बाएं–दाएं मोड़ता है या ऊपर

शब्द युग्म

कान्ति– चमक

क्रान्ति– शीघ्र परिवर्तन

काष्ठ– लकड़ी

काष्ठा– दिशा, सीमा

कोड़ी– बीस

कौड़ी– घोंघा आदि का घर

कुंजर– हाथी

कंजर– एक जाति विशेष

पर्यंक– पलंग

पर्यंत– तक, भर

पर्यायवाची शब्द

युवती– किशोरी, तरुणी, श्यामा

यम– यमराज, धर्मराज, कृतान्त, शमन

मोती– मु□ता, मौ□तिक, सीपज, शशिप्रभा

मैना– सारिका, सारी, चित्रलोचना, मधुरालय

यमुना– कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, जमुना

गधे को अंगूरी बाग।

Honey is not for donkey's mouth.

गया व□त फिर हाथ आता नहीं।

Time and tide wait for no man.

गरजी यार किसके, दम लगाय खिसके।

The dinner over, away go the guest.

गरीबी में आटा गीला।

Misfortune seldom come alone.

To clean out- सफाई करना।

Clean-fingred- बिना घूस लिये।

To show a clean pair of heels- सरपट भागना।

To take a class- उ□ाम श्रेणी में आना, प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

अंतर है

Loose- ढीला

Lose- खो देना

Loving- स्नेही, स्नेहमय

Lovely- सुंदर, आकर्षक

Mace- राजदंड, गदा, जावित्री

Mess- अव्यवस्थित स्थिति

Maid- नौकरानी

Made- बनाया

एक के तीन

Ear-ईयर	कान	कर्ण:
Waist-वैस्ट	कमर	कटि:
elephant-एलीफेंट	हाथी	गज:
Dandruff-डैंड्रफ	सिर की रूसी	दारुणा
Silver-fish-सिल्वरफिश	सफेद मछली	रजत मीन:

लोकोक्तियां

मन चंगा तो कठौती में गंगा– मन की पवित्रता ही मह□वपूर्ण है।

मन के लड्डुओं से पेट नहीं भरता– केवल कल्पना कर लेने से तृप्ति नहीं होती।

मान न मान मैं तेरा मेहमान– अवांछित रूप में किसी के गले

उर्दू/ हिन्दी

खलद– हृदय, मन, दिल

खर्स– घड़ा, कुंभ, मटका

खलल– विघ्न, बाधा, अड़चन

खराब– नापाक, अपवित्र, बुरा

खला– रि□त होना, अकेला होना, एकाकी होना

One Word

All-powerful, Possessing complete power and authority- **Omnipotent.**

One who is present everywhere- **Omnipresent.**

A person who knows everything- **Omniscient.**

- जो मृत्यु के समीप हो– **आसन्नमृत्यु।**
- जो व्य□ित विदेश में रहता हो– **अप्रवासी।**
- जो कार्य अवश्य होने वाला हो– **अवश्यंभावी।**
- जो बिना वेतन के कार्य करता हो– **अवैतनिक।**

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

art junction

स्पून लैम्प शेड

सामग्री : प्लास्टिक स्पून, फेविकोल, रंगीन ड्रॉइंगशीट, पोस्टर कलर, पेन्ट, प्लास्टिक की खाली बोतल।

विधि : बोतल को नीचे तथा ऊपर से थोड़ा-थोड़ा काट लें। चम्मचों की डंडियां काटकर अलग कर दें। बोतल पर चम्मचों को दिखाए गए चित्रानुसार नीचे से ऊपर की ओर चिपकाते जाएं। ड्रॉइंगशीट को पत्तियों का शेप देते हुए काट लें। लैम्प के ऊपर पत्तियों को चिपका दें। लैम्प शेड तैयार है।

पिनाटा

सामग्री : गुब्बारा, फेविकोल, पेपर रिबन, न्यूज पेपर।

विधि : गुब्बारे को फुला लें। न्यूज पेपर की पट्टियां काटकर फेविकोल द्वारा गुब्बारे पर चिपकाते जाएं। जब पूरा गुब्बारा चिपककर सूख जाए तो ऊपर से छोटा-सा गोला काट दें। इसमें चारों तरफ पेपर रिबन को झालर की तरह चिपकाते जाएं। ऊपर से छोटी-छोटी मधुमक्खियां चिपका दें। इसे आप पुट्ठे के डिब्बे तथा शीट की मदद से किसी भी शेप में बना सकते हैं।

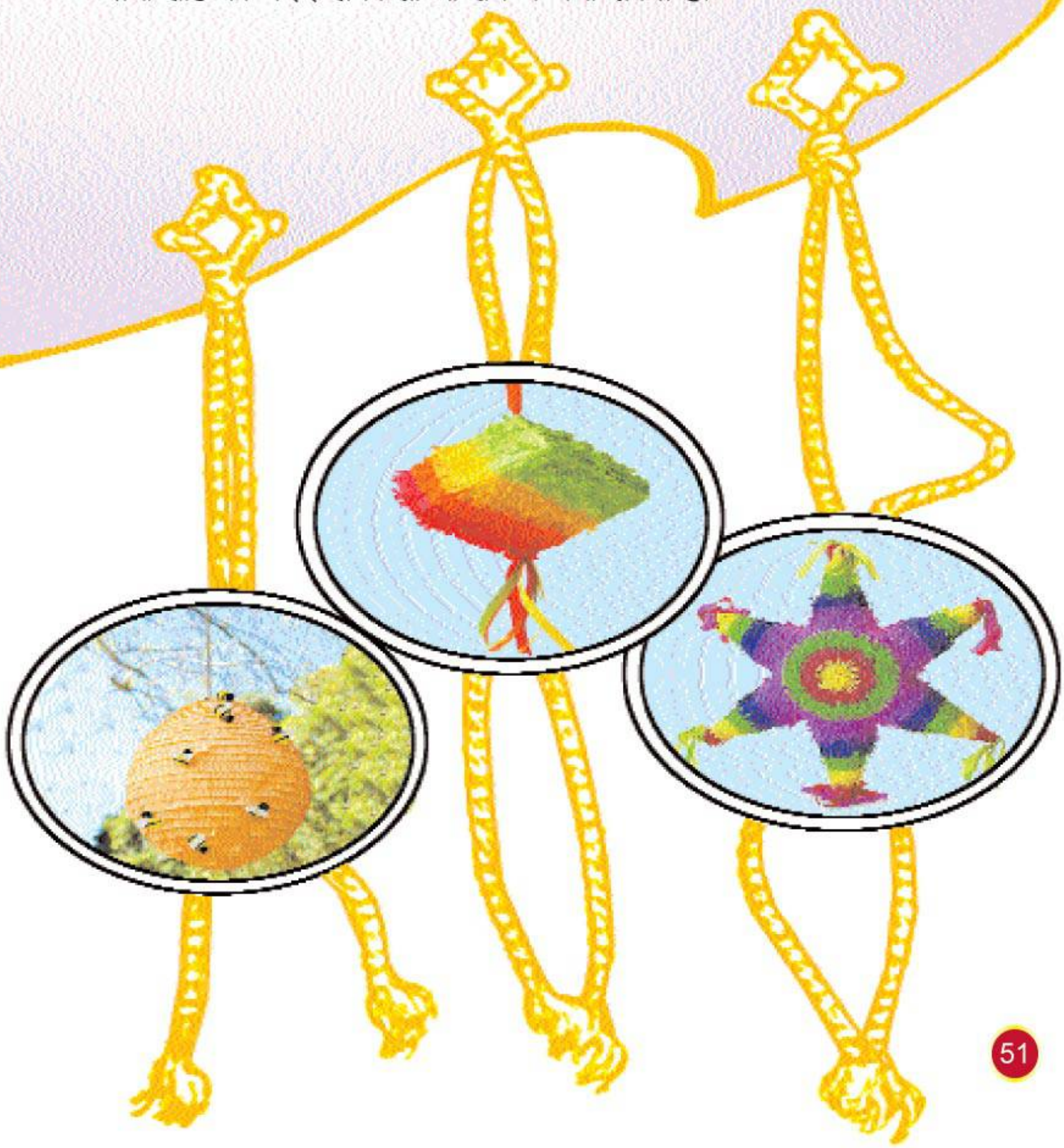

A. कितने खरगोश छिपे हैं।

20 खरगोश

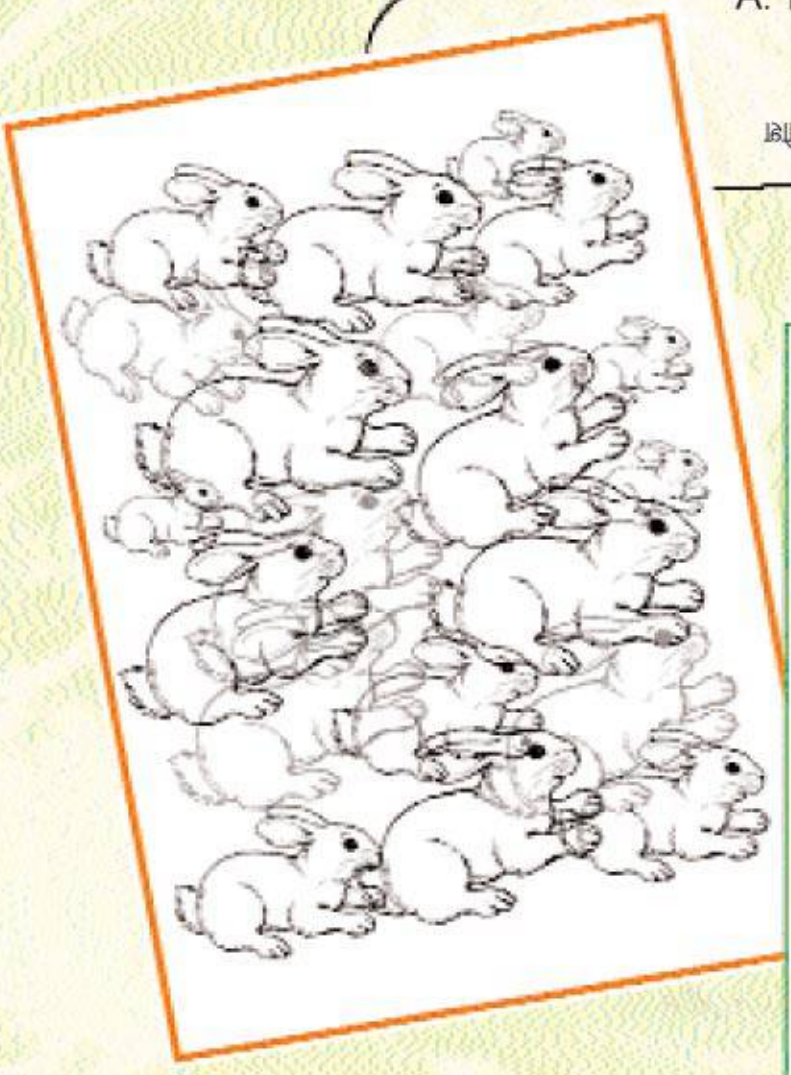

B. सब अपने-अपने नाम ढूंढने में लगे हैं। आप मदद करें।

O	C	L	C	O	R	N
H	O	L	R	I	X	O
L	W	I	B	A	R	C
T	K	R	G	D	H	A
A	Y	P	H	G	A	B
C	A	T	E	E	C	P
C	H	U	C	K	O	U
R	I	C	R	A	B	C

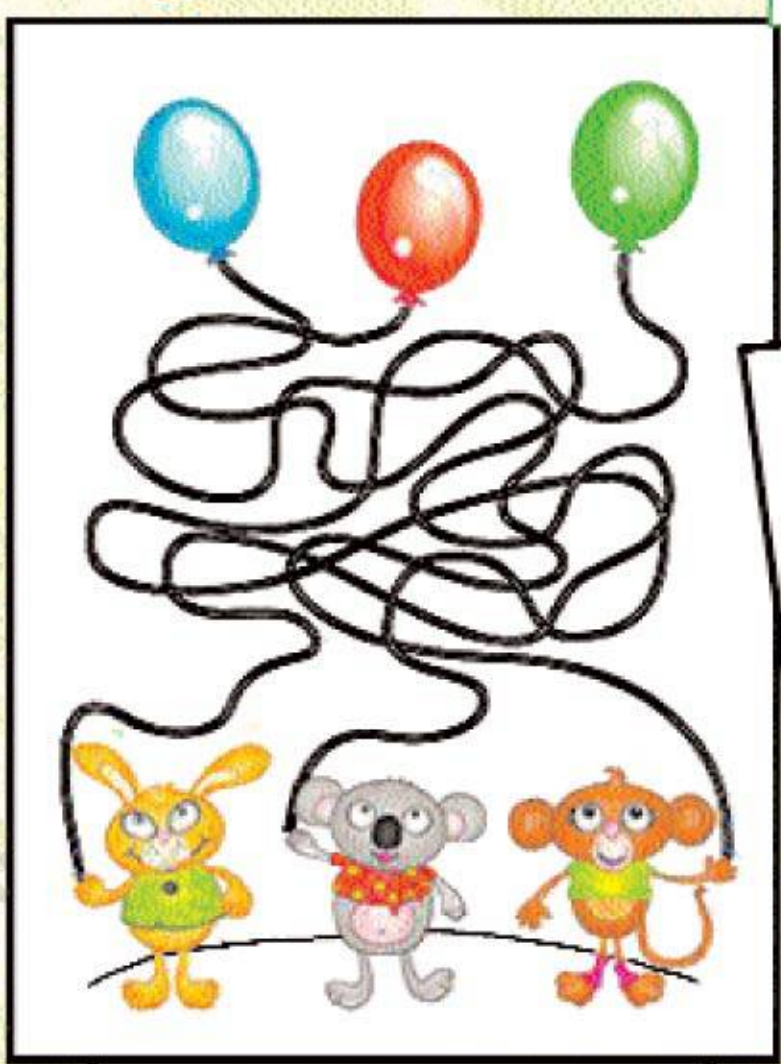

C. किसका गुब्बारा कौनसा है?

D. मछली किसके कांटे में फंसी है?

A.

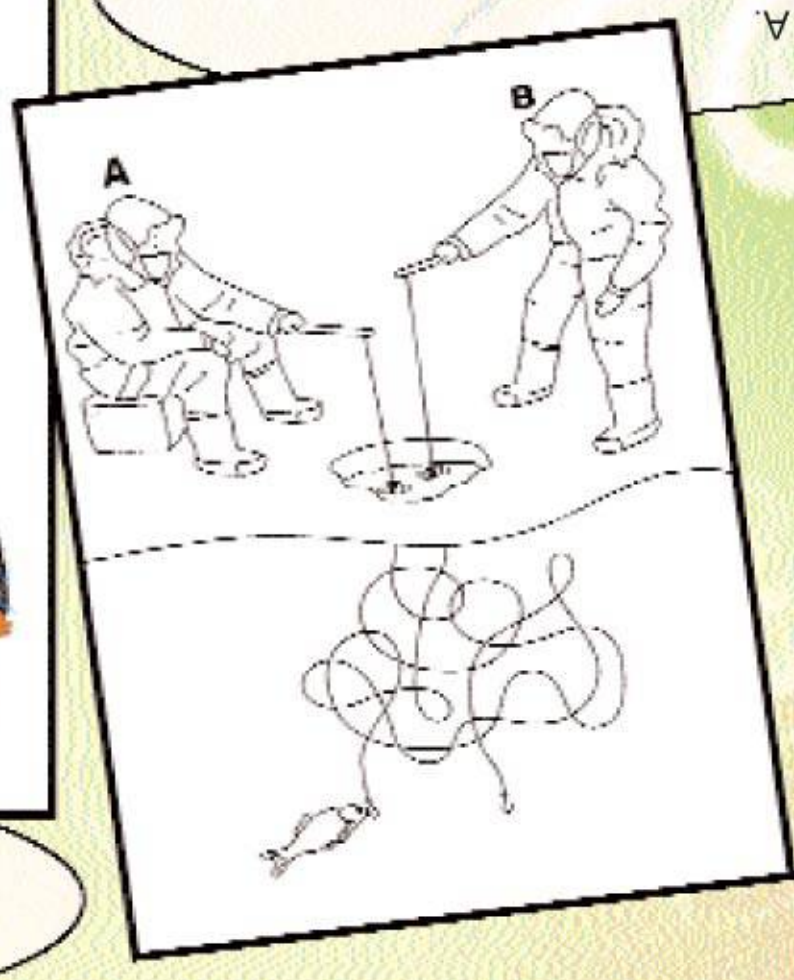

E. भंवरा कौनसे रास्ते फूलों तक पहुंचेगा।

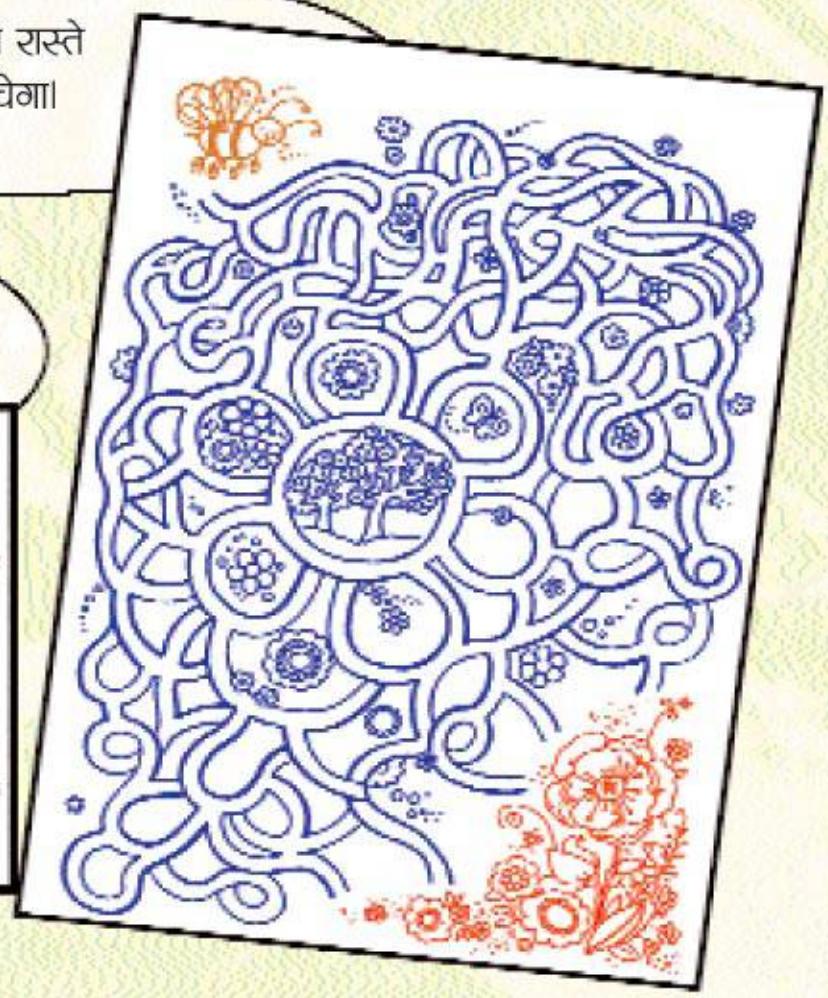

F. जोड़ा खो गया, ढूंढो तो।

1, 5

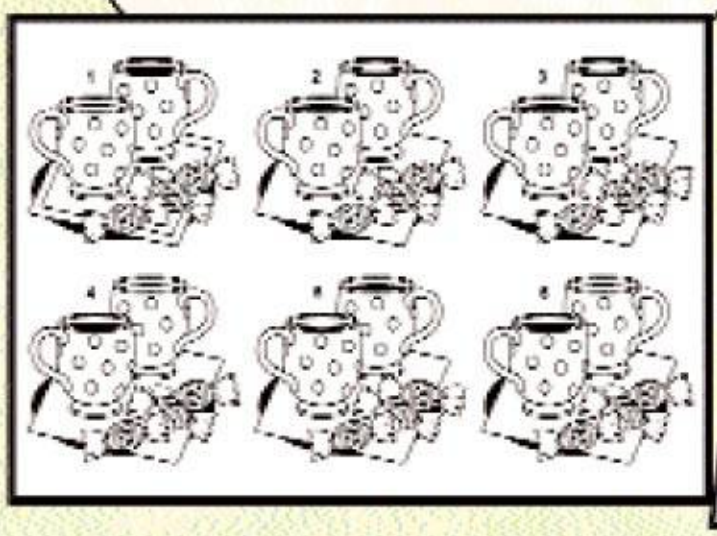

G. कौनसे पैरों की छाप गलत है?

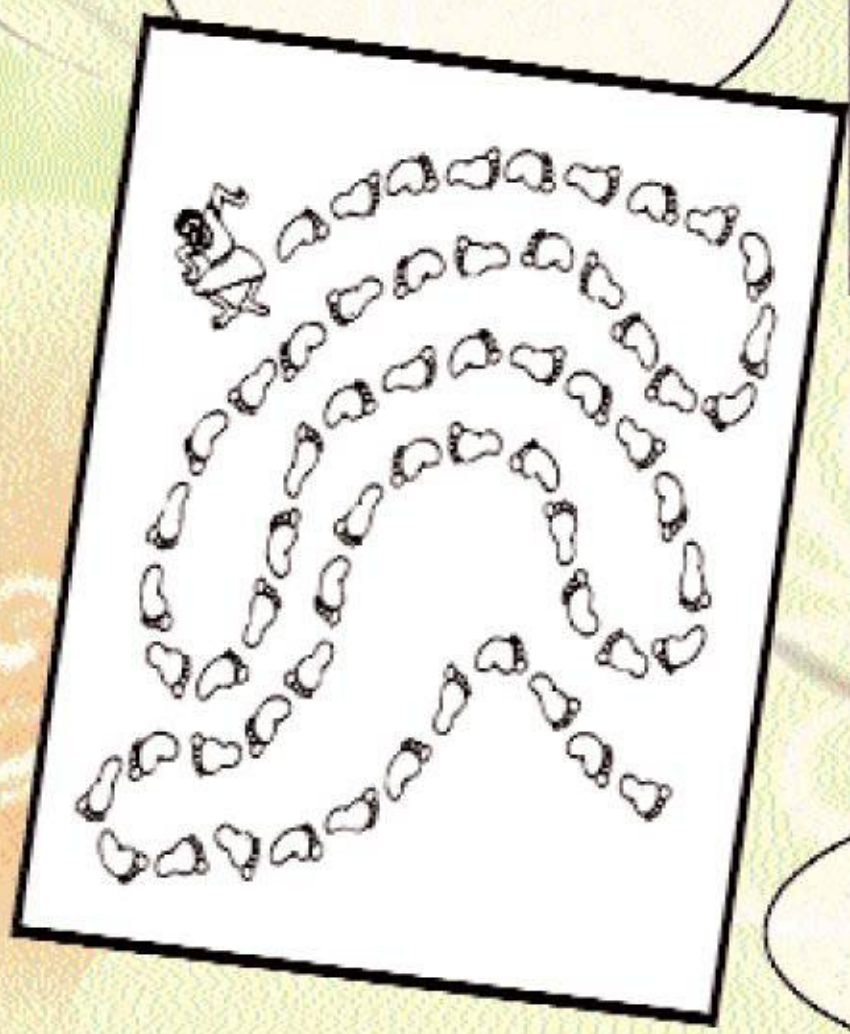

	A	B		
1				
2				
3				

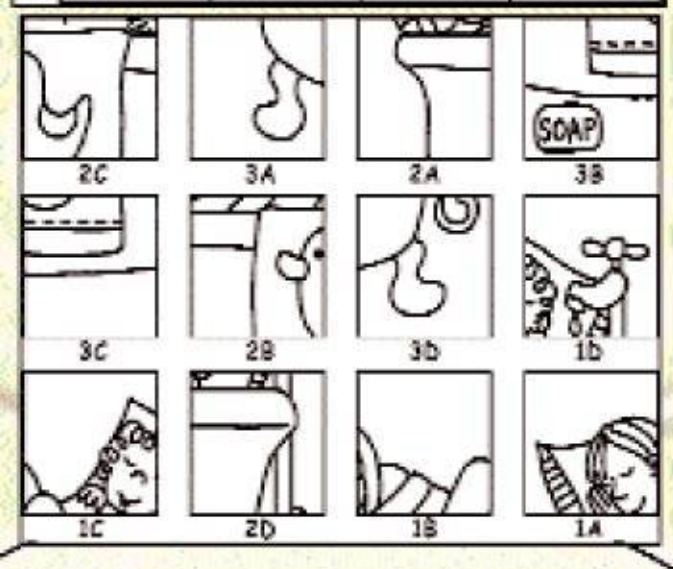

H. टुकड़े जोड़कर चित्र बनाओ।

उत्तर पृष्ठ संख्या 55 पर...

Farm 4 A

KidsClub

प्राची कुमारी
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-सीकर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

रेखा कुमावत
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-रानोली (राज.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

विकास कुमार
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-रानोली (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

अंकिता कुमारी
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-सादात, गाजीपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

शिवम वर्मा
उम्र- क वर्ष
स्थान-सादात (उ.प्र.)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

गणेश कुमार
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-जन्दाहा (बिहार)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

सन्नी राही
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-भोजपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

वंशिका श्रीवास्तव
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-सिंहपुर (म.प्र.)
रुचि-डांसिंग, पढ़ना।

सुबोध कुमार
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-असपुरा (बिहार)
रुचि-पढ़ना, टीवी।

सिद्धान्त जायसवाल
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-सादात (उ.प्र.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

राज किशोर पंडित
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-मुरारपुर (बिहार)
रुचि- □युजिक, पढ़ना।

मिथिलेश यादव
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-मऊ (उ.प्र.)
रुचि-सेवा, पढ़ना।

वंश श्रीवास्तव
उम्र- ५ वर्ष
स्थान-सिंहपुर (म.प्र.)
रुचि-खेलना, टीवी।

प्रवीण
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-कवास (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

अशोक कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-पिपराली, बाड़मेर
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

छवि कानूनगो
उम्र- ५ वर्ष
स्थान-इंदौर (म.प्र.)
रुचि-खेलना, टीवी।

बस को बालों से खींचा

ब्रिटेन में एक आदमी ने अपने बालों से बस को खींच कर रिकॉर्ड बनाया है। मनजीत सिंह (भ–) ने एक सात टन वजनी डबल डेकर बस को ख्क.ख मीटर खींच कर रिकॉर्ड स्थापित किया है। मनजीत ने अपनी मोटी सी पॉनिटेल पर रस्सी बांध कर बस को खींचा। उनका कहना है कि यह काफी दर्द-भरा अनुभव रहा। मैंने बस खींचने के लिए किसी तरह की कोई स्पेशल ट्रेनिंग नहीं ली है। न ही बालों की मजबूती के लिए किसी तरह का कोई खास तरीका अपनाया है। बालों को धोने के लिए वही शैंपू इस्तेमाल करता हूं, जो सब

चीन के एक श□स वेंजुन ने दुनिया का सबसे लंबा पेंटब्रश बनाया है। इसकी लंबाई क्ख फीट और वजन भ्ख किलोग्राम है। ब्रश बनाने में उसने तीन सौ घोड़ों की पूंछ के बाल का इस्तेमाल किया है। उसका दावा है कि यह ब्रश काफी ज्यादा स्याही सोख सकता है। जिससे इसका वजन ब्भ किलो और ज्यादा हो सकता है। उसे इस ब्रश को बनाने में एक साल लगा है।

सबसे लंबा पेंटब्रश

मगरमच्छ निगल गया अजगर

□या कोई अजगर मगरमच्छ को निगल सकता है? सुनने में जरूर यकीन ना आए लेकिन ये हकीकत है। ऑस्ट्रेलिया के □वींसलैंड राज्य में एक अजगर ने मगरमच्छ को अपना शिकार बनाया लिया। चश्मदीदों के

मुताबिक □वीसलैंड के लेक मूनडारा में एक बड़ा सा अजगर मगरमच्छ पर झपटा और उसे अपने आगोश में ले लिया। कई घंटों तक अजगर ने मगरमच्छ को जकड़े रखा और आखिरकार मगरमच्छ की हि□मत जवाब दे गई और उसकी मौत हो गई। उसके बाद अजगर मगरमच्छ को निगल गया। इस हैरतअंगेज नजारे को देखकर वहां खड़े लोग भी दंग रह गए।

उत्तर : माथापच्ची

G.

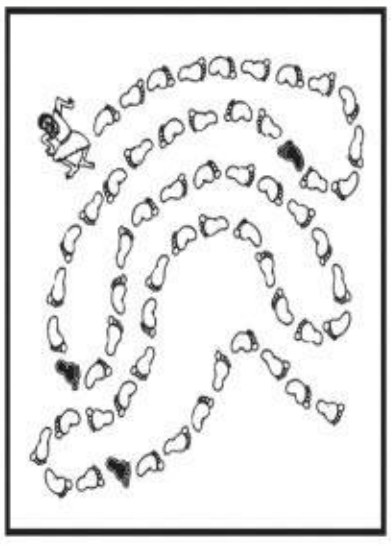

H.

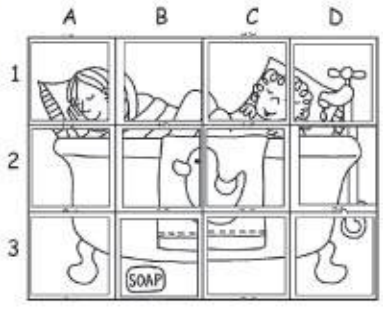

गर्वीली दहाड़

शेर अफ्रीका और भारत का एक बड़ा मांसाहारी पशु है। यह बिल्ली के परिवार के सबसे बड़े सदस्यों में से एक है। अपने प्रभावशाली आचरण के कारण शेर को 'जानवरों के राजा' के तौर पर जाना जाता है। शेर लंबे समय से चिड़ियाघर और सर्कसों में भी आकर्षण बना हुआ है। कई शेर सर्कसों और चिड़ियाघरों में या तो कैद में पैदा होते हैं या फिर बचपन में ही उन्हें पकड़ लिया जाता है।

शेर अफ्रीका के कई हिस्सों में पाए जाते हैं और उन्हें अफ्रीकी शेर के नाम से पुकारा जाता है। ये ज्यादातर घास के मैदानों में पाए जाते हैं, जहां खेलने के लिए खूब जगह मौजूद होती है। लेकिन ये पहाड़ी, अर्द्ध मरुस्थलीय क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं। एक समय में अच्छी-खासी सं□या में पाए जाने वाले शेर भारत के उ□ार भारत के हिस्सों तक घूमते थे। आज इनमें से कुछ सौ की सं□या में ही शेर बचे हैं और इन सभी को गिर के वन्यजीव अ□ायारण्य में रखा गया है।

अफ्रीका और एशियाई शेर भले ही नाम से अलग हों, लेकिन ये एक ही प्रजाति के हैं। भारत के रहने वाले शेर अफ्रीका में रहने वाले शेरों के मुकाबले छोटे हैं। इनके पूर्वज भी आकार में छोटे थे। इस मामूली से अंतर की वजह से इन दो प्रकार के शेरों को अलग-अलग नाम से पुकारा जाता है।

परिवार: शेरों के सामाजिक समूह को प्राइड्स कहते हैं। इसमें एक से तीन नर, दो से पंद्रह मादाएं और उनके बच्चे शामिल होते हैं। कभी-कभी युवा शेर अपने खुद के सैटेलाइट समूह बनाते हैं। नर अपने क्षेत्र की रक्षा करते हैं और सबसे पहले खाना उन्हें मिलता है। शिकार का ज्यादातर काम शेरनी करती है।

शिकार : वे आमतौर पर अकड़कर चलते हैं और अपने शिकार का पता लगाते हैं। गले पर एक काट से ही उसे मार देते हैं। हालांकि वे पीछे के पंजे से भी हमला कर सकता है। ऐसा गलत माना जाता है कि शार्क की तरह शेर भी मनुष्यों का सामना होने पर अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं। आदर्श स्थिति में शेर दूसरे जानवरों की मेहनत पर हाथ मारते हैं और अपने भोजन के ज्यादातर हिस्से के लिए वे यही करते हैं। अपने भोजन के पूरक के तौर पर वे भैंस, हिरण और जेब्रा जैसे शिकारों की खोज में निकलते हैं।

लॉयनमैन क्रैग बुश

जीवनशैली : शेर आमतौर पर रात के व□त

कुछ जानकारियां

- **नाम:** शेर (पैंथेरा लियो)
- **फैमिली:** फेलिडा (कैट्स)
- **रेंज:** सब-सहारा अफ्रीका, भारत में एक छोटा समूह बचा हुआ है।
- **आवास:** बड़े घास के मैदान और ऊष्णकटिबंधीय जंगल।
- **भोजन:** मु□य रूप से बड़े शाकाहारी जैसे अफ्रीकी बारहसिंगा, जेब्रा और इंपाला, इसके अलावा छोटे और रेंगने वाले जानवर।
- **सिर और शरीर की लंबाई:** ब.म से म.ख फीट (क.ब से क.- मीटर)
- **पूंछ की लंबाई:** ख से प- इंच (म्त्र से क सेंटीमीटर)
- **कंधे की ऊंचाई:** करीब ब फीट (क.ख मीटर)
- **वजन:** पप से भ्भ्क पाउंड (क्भ से ख्भ किलोग्राम)
- **जीवन चक्र:** क□जे में ख-ख्भ साल, जंगल में क्भ से ख साल। पूरे साल प्रजनन करते हैं। गर्भावस्था क से क्क्म दिन। दो से चार बच्चे पैदा करते हैं।
- **नर:** शेर, **मादा:** शेरनी, **युवा:** बच्चा
- **विश्लेषण:** हल्के पीले रंग का कोट, चौड़ा माथा, गोल कान, प्रौढ़ नर चौड़े कंधे वाले होते हैं।
- **संरक्षण स्तर:** बहुत बुरा
- **सबसे बड़ा खतरा:** जीवन का खतरा

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **आज का सवाल- भारत में शेर कहां पाए जाते हैं?**
  - (A) कॉरबेट नेशनल पार्क
  - (B) काजीरंगा नेशनल पार्क
  - (C) बांधवगढ़ नेशनल पार्क
  - (D) गिर नेशनल पार्क

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest

P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

शेरों के बारे में और जानकारी के लिए सिर्फ एनिमल प्लेनेट पर सोमवार से शुक्रवार हर रात - बजे देखना न भूलें, लायन मैन: द अफ्रीकन सफारी।

पिछली बार पूछे गए सवाल 'निम्न में से कौन-सा महासागर नहीं है?' का सही जवाब है - उत्तरी।

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी क□यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

मई द्वितीय- 2014

क. **शाश्वत शु□ल,** रायबरेली (उ.प्र.)
ख. **दीक्षा कपूर,** देहरादून (उ□रांचल)
फ. **सुनीता शर्मा,** जयपुर (राज.)
ब. **आस्था शर्मा,** बाली, नवादा (बिहार)
भ. **आन्या पंकज जैन,** इंदौर (म.प्र.)
म. **दुर्लभ सिंह,** नुकेरा, हनुमानगढ़ (राज.)
स्त्र. **जिनल जैन,** उदयपुर (राज.)
त्र. **चाहत शर्मा,** इटावा, जयपुर (राज.)
-. **यु□ता माथुर,** जोधपुर (राज.)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. **योगिता ओझा,** बीकानेर (राज.)
ख. **पल्लवी,** रामपुर (उ.प्र.)
फ. **जागृत साहू,** सकरी, टेकारी (छ□ीसगढ़)
ब. **आदित्य राठौर,** चेचट, कोटा (राज.)
भ. **अंकित गुप्ता,** बलिया (उ.प्र.)
म. **अमन मीणा,** जोधपुर (राज.)
स्त्र. **आंचल मिश्रा,** नरहरपुर (उ.प्र.)
त्र. **देव श्रीमाल,** उदयपुर (राज.)
-. **हर्षिता गौतम,** सवाईमाधोपुर (राज.)
क. **भूमिका मिश्रा,** जोधपुर (राज.)
क्क. **राजकुमार,** भोजपुर (बिहार)
क्ख. **खेमसिंह सोलंकी,** बाड़मेर (राज.)
क्फ. **धीरज पंवार,** जालोर (राज.)
क्ब. **निशा कुमारी,** वीरपुर, सुपौल (बिहार)
क्भ. **आशीष मीणा,** सवाईमाधोपुर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 350 का परिणाम

क. **परिधि देशपांडे,** इंदौर (म.प्र.)
ख. **गणेश कुमार शर्मा,** सहारनपुर (उ.प्र.)
फ. **गोलु अग्रवाल,** पाली मारवाड़ (राज.)
ब. **राजेश कौशल,** सिरोही, आबूरोड (राज.)
भ. **सूर्यांश राघव,** दिल्ली
म. **अन्नु शर्मा,** जयपुर (राज.)
स्त्र. **चमन सिंह थापा,** धर्मपुर, देहरादून (उ□राखंड)
त्र. **दयालु वाजपेयी,** कानपुर (उ.प्र.)
-. **कर्तव्य व्यास,** मंदसौर (म.प्र.)
क. **स्वाती वार्ष्णेय,** रुद्रपुर, उधमसिंह (उ□राखंड)

ज्ञान प्रतियोगिता- 350 का सही हल

ही मैन, सुपर मैन, फैंटम, स्पाइडर मैन
क. उज्जैन
ख. इंद्रप्रस्थ
फ. ऑ□सीजन
ब. हैदराबाद
भ. गोवा

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

353 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

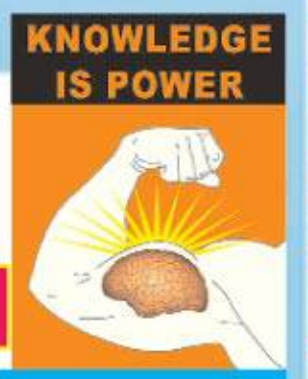

क. वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री कौन है ?

(अ) शिवराज चौहान

(ब) नरेन्द्र दामोदर दास मोदी

(स) राजनाथ सिंह

ख. इनमें से वर्तमान में गुजरात के मु□यमंत्री हैं ?

(अ) केशुभाई पटेल

(ब) नरेन्द्र मोदी

(स) आनंदी बेन पटेल

फ. वर्तमान में बिहार के मु□यमंत्री कौन है ?

(अ) लालू प्रसाद

(ब) नितिश कुमार

(स) जीतन राम मांझी

ब. नागालैंड में इस समय मु□यमंत्री पद पर हैं ?

(अ) टीआर जेलियांग

(ब) वसुंधरा राजे

(स) जयललिता

भ. सोनिया गांधी का संबंध किस राजनैतिक पार्टी से है ?

(अ) भाजपा

(ब) राजपा

(स) कांग्रेस

चित्रों में अमरीका और भारत के पूर्व राष्ट्रपति हैं। पहचानिये।

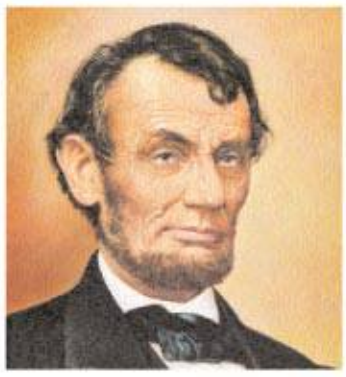

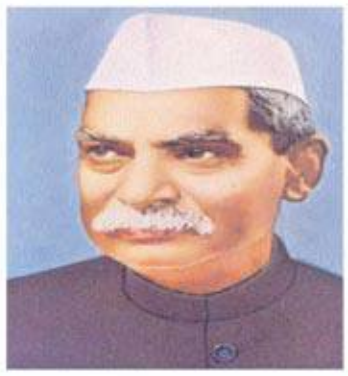

.....

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता– 353

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 10 जुलाई, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

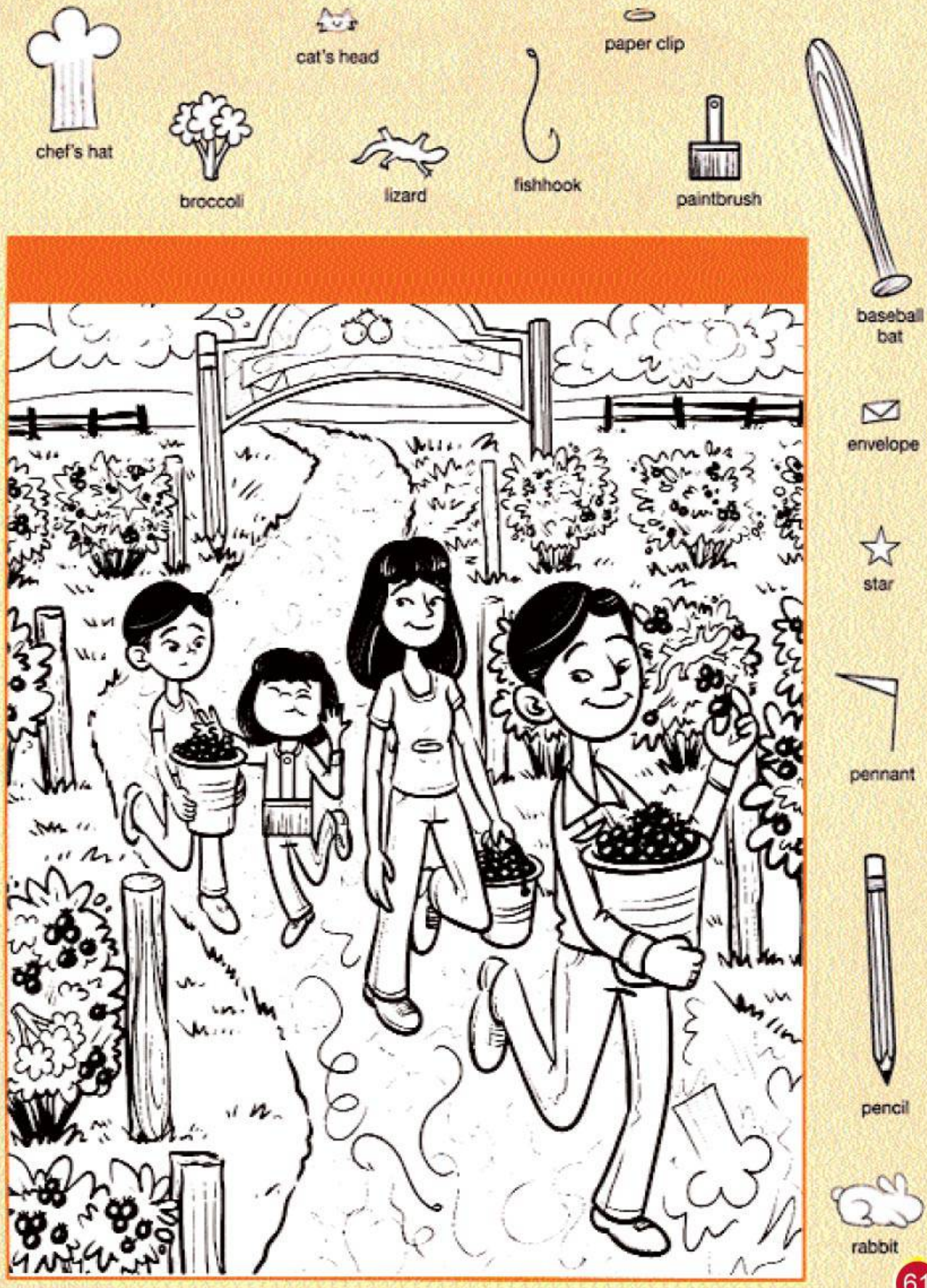

ई-मैन - 23

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

मेरा सौभाग्य था कि मैं बच गया।
उसके बाद वे कहां चले गये?
संभवतया समुद्र में... ऐसा लगता है कि वे समुद्र के पैंदे में रहते हैं।
हमारा मिशन उन्हें ढूंढना है।
हमारा...?
हां हमारा... इस कवच को पहनो और ऑक्सीजन के सिलेंडर को पीछे लगा लो। हम यहां से रवाना हो रहे हैं।
जल्द ही...
इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस आदमी के पास विशेष शक्तियां हैं।

ई-मैन और बोनो एमस्टर पॉइंट के पास एक द्वीप पर पहुंचते हैं।
बोनो, तुम यहां इंतजार करो।
तुम्हें कोई देख न ले।
यह लेजर गन तुम रख लो।
धन्यवाद।
ई-मैन समुद्र में चला जाता है।
कुछ मिनटों में ही ई-मैन कई किलोमीटर घूम लेता है।

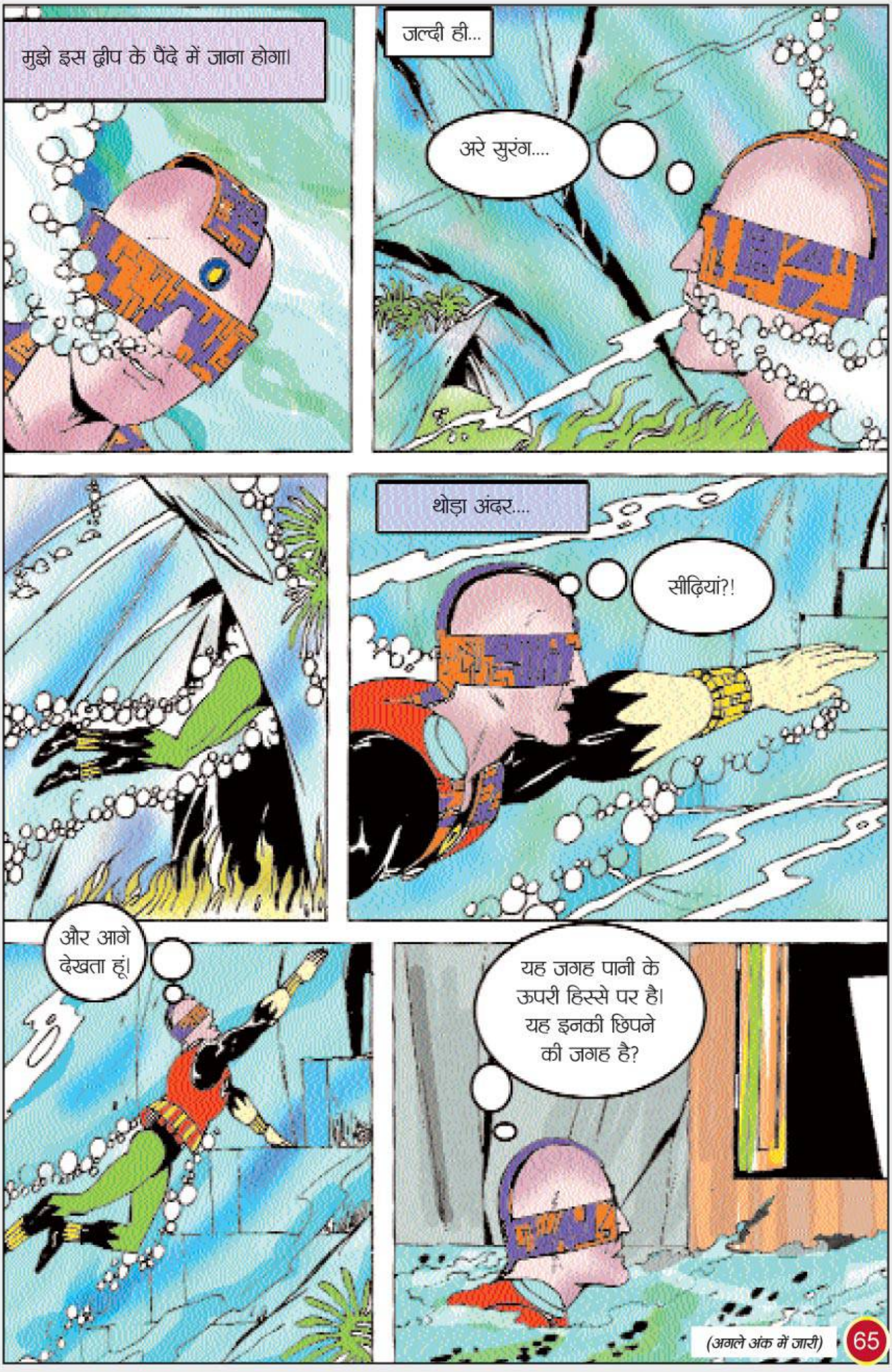
मुझे इस द्वीप के पैंदे में जाना होगा।
जल्दी ही...
अरे सुरंग....
थोड़ा अंदर....
सीढ़ियां?!
और आगे देखता हूं।
यह जगह पानी के ऊपरी हिस्से पर है। यह इनकी छिपने की जगह है?

(अगले अंक में जारी)

बालहंस मैं कई वर्षों से पढ़ रहा हूं। इससे मुझे देश-विदेश की जानकारियां मिल रही हैं। इसको मेरे सारे दोस्त बड़े चाव से पढ़ते हैं। सामान्य ज्ञान, नॉलेज बैंक, तथ्य निराले, गुदगुदी, कहानियां, बालहंस न्यूज बहुत अच्छे लगते हैं। यह अंक तथ्यों से भरपूर था। देश-दुनिया के विभिन्न विषयों के बारे में तथ्य पढ़कर बहुत जानकारी मिली। सभी तथ्य ज्ञानवर्द्धक, रोचक और रोमांच पैदा करने वाले थे।

– दिलवर आलम,
बायसी, पूर्णिया (बिहार)

मैं बालहंस गत दो वर्षों से पढ़ रही हूं। मुझे इसको पढ़ने में बहुत सी जानकारियां मिलती हैं। यह मेरा मनोरंजन भी करती है। कहानियां, गुदगुदी, देश-विदेश की जानकारियां, बूझो तो...सहित सभी कुछ अच्छा लगता है। इसके हर अंक का मुझे बेसब्री इंतजार रहता है।

कैसा लगा

आती हैं कहानियां इसमें,
सीख देने वाली।
सामान्य ज्ञान भी आता है,
बहुत सा नॉलेज लाता है।
फिर आते हैं तथ्य निराले,
अनोखी जानकारी देते।
पढ़ेंगे आप नॉलेज बैंक,
आएगी आपकी फर्स्ट रैंक।
सैर-सपाटा हमको भाता,
नई-नई जगहों में हमें घुमाता।
हर अंक का बनिये अंश,
ज्ञानवर्द्धक है प्यारा बालहंस।

– अभिषेक त्रिपाठी,
सरसौल, कानपुर नगर (उ.प्र.)

इनके पत्र भी मिले

- **मनोज बारूपाल,** आहौर (राज.)
- **परवेज आलम,** गोपालगंज (बिहार)
- **मुकेश सारण,** सोखरू, बाड़मेर (राज.)
- **प्रज्ञा बुंदेल,** टोंक (राज.)
- **मंथन चौरसिया,** किशनगंज (बिहार)
- **जय अजय रेनू श्रीवास्तव,** कानपुर नगर
- **सहर अनम,** भानतलैया, जबलपुर (म.प्र.)
- **प्रफल्ल कुमार,** फैजाबाद (उ.प्र.)
- **सुशान्त साईं सुन्दरम्,** गिद्धौर (बिहार)
- **इन्द्रजीत सिंह,** कैलवर (उ.प्र.)
- **रागिनी देवी निगम,** कानपुर नगर
- **आकाश वर्मा,** देवरिया (उ.प्र.)
- **सुनील भादू,** बाड़मेर (राज.)
- **रविन्द्र सिंह चौहान,** भोपाल (म.प्र.)
- **पुनीत कुमार श्रीवास्तव,** लखीमपुर खीरी
- **शंकर लाल विश्वकर्मा,** काजीपुर

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

शिक्षा का लक्ष्य

महान गणितज्ञ यूक्लिड बेहद सरल स्वभाव के थे। उनमें जरा भी अहंकार नहीं था। उनका मानना था कि अपना ज्ञान दूसरों में हरदम बांटते रहना चाहिए। इसलिए जब भी कोई उनके पास किसी तरह की जानकारी लेने आता तो वे उत्साहपूर्वक उसे सब कुछ बताते थे। इससे उन्हें संतोष मिलता था। इसलिए उनसे गणित सीखने वालों की संख्या अच्छी-खासी हो गई थी। कई बार तो वह अपना निजी काम छोड़कर भी दूसरों की जिज्ञासा शांत करते रहते थे।

एक दिन यूक्लिड के पास एक लड़का आया और उसने उनसे ज्यामिति पढ़ाने का आग्रह किया। यूक्लिड ने अपनी आदत के मुताबिक यह प्रस्ताव सहज रूप से स्वीकार कर लिया। वह उसे उसी क्षण से ज्यामिति पढ़ाने लगे। लड़का काफी प्रतिभाशाली था। उसने बड़ी तेजी से सीखना आरंभ कर दिया। इससे यूक्लिड काफी प्रसन्न थे। एक बार यूक्लिड उसे एक प्रमेय पढ़ा रहे थे। अचानक लड़के ने सवाल कर दिया, 'इस प्रमेय को पढ़ने से मुझे क्या लाभ होगा?' यह सुनते ही यूक्लिड नाराज हो गए और अपने नौकर से बोले, 'इसे एक ओबेल (यूनानी सिक्का) दे दो, क्योंकि यह विद्या हासिल करने में कम, धन कमाने में अधिक रुचि रखता है। और जो धन कमाने में रुचि रखता है उसके लिए किसी भी तरह की शिक्षा बेकार है।'

उनके मुंह से यह सुनकर न सिर्फ वह लड़का, बल्कि दूसरे छात्र भी दंग रह गए। उस लड़के ने अपनी भूल स्वीकार कर यूक्लिड से क्षमा मांगी। यूक्लिड ने कहा, 'शिक्षा आत्मसमृद्धि का मार्ग है। उसे कभी भौतिक लाभ के तराजू में नहीं तौलना चाहिए। वह जहां से जिस मात्रा में मिले, उसे आत्मीयता से ग्रहण करना चाहिए।

सीख सुहानी ❀ शिक्षा का कोई मोल नहीं होता, वह अनमोल होती है।

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

PARLE
हाउज्जैट?
मेलोडी इतनी चॉकलेटी क्यों है?
Melody
chocolaty
मेलोडी खाओ
ख़ुद जान जाओ